संधान

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सप्तम् अंक मार्च 2026

'ऑडिट भवन' लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

छायाचित्र स्रोतः श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र की वेबसाइट

राम मंदिर स्थित धर्म ध्वज का चित्रण

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में अवस्थित राम मंदिर का झण्डा, जिसे धर्म ध्वज के नाम से अभिहित किया जाता है, भगवा रंग का है, जो कोविदार वृक्ष, सूर्य और **'ॐ'** चिह्नों से सुसज्जित है, यह पैराशूट फैब्रिक से निर्मित है और मंदिर के शिखर पर 205 फीट की ऊँचाई पर फहराया गया है, जो प्राचीन परंपरा और सूर्यवंशी राम राज्य का प्रतीक है, जिसे 25 नवंबर 2025 को पूर्वाह्न 11.50 बजे भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा फहराया गया था।

झण्डे की प्रमुख विशेषताएँ:

- **रंग:** केसरिया (भगवा)
- **आकार:** 22 फीट लंबा और 11 फीट चौड़ा, त्रिकोणीय आकार
- **ऊँचाई:** 205 फीट (161 फुट मंदिर शिखर + 42 फीट ध्वजदंड)
- **वजन:** लगभग 11 किलोग्राम (कुछ स्रोतों के अनुसार 2-3 किग्रा)
- **सामग्री:** पैराशूट फैब्रिक और रेशमी धागे, जो इसे धूप, बारिश और तेज हवा से बचाता है।
- **चिह्नः** 'ॐ', सूर्य (भगवान राम के सूर्यवंशी होने का प्रतीक), और कोविदार वृक्ष (प्राचीन परंपरा का प्रतीक)
- **घूमने की व्यवस्था:** इस ध्वज में 360 डिग्री घूमने वाला चक्र लगा है, जिससे यह हर दिशा में घूम सकता है।
- **प्राचीन महत्व:** यह ध्वज रामायण काल (त्रेतायुग) की परंपराओं से प्रेरित है और प्राचीन अयोध्या की पहचान है, जिसका उल्लेख महर्षि वाल्मीकिकृत रामायणम् में भी किया गया है।

महत्व और ध्वजारोहण:

- यह ध्वज भारतवर्ष की उत्कृष्ट गरिमा, एकता और सांस्कृतिक निरंतरता एवं पुनर्जागरण का प्रतीक है, जो राम राज्य के श्रेष्ठ आदर्शों को प्रतिबिम्बित करता है।
- 25 नवंबर 2025 को विवाह पंचमी के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इसका ध्वजारोहण किया गया, जिसने मंदिर निर्माण के अनुष्ठान को पूरा किया।

संधान

सप्तम् अंक । वर्ष 2025-26

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

'ऑडिट भवन' लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

संधान परिवार

प्रकाशन

विभागीय राजभाषा हिन्दी गृह-पत्रिका

'संधान' (अर्द्धवार्षिक)

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-द्वितीय), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्य संरक्षक

(पदेन – वरिष्ठता के आधार पर)

श्री राजीव कुमार पाण्डेय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक

श्री संजय कुमार

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

कार्यकारी संपादक

श्री ऊदल सिंह सोलंकी, सहायक निदेशक,
(राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संपादक मण्डल

ऊदल सिंह सोलंकी, सहायक निदेशक (रा.भा.)
ज्योति दीक्षित, सहायक निदेशक (रा.भा.)
स्मृति, सहायक निदेशक (राजभाषा)
वासवी मिश्रा, कनिष्ठ अनुवादक
रूचि जायसवाल, कनिष्ठ अनुवादक
शशांक गौरव, कनिष्ठ अनुवादक
कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

'संधान' शब्द का अर्थ- "लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना" अथवा "लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना" है। गृह-पत्रिका का यह नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्त्तव्य/ लक्ष्य/ उद्देश्य अर्थात् किसी तंत्र (सिस्टम) की कमियों के अनुसंधान करने/ उनको इंगित करने के अनुरूप भी है।

"ऑडिट भवन" लखनऊ में स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ	पुनर्गठन के पश्चात् कार्यालय को चार समूहों में विभक्त किया गया है, ए.एम.जी.-I, ए.एम.जी. - II, ए.एम.जी-III एवं ए.एम.जी-IV	ए.एम.जी.-II, III एवं IV जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों एवं उनके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा उत्तरप्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा॥
	शाखा कार्यालय प्रयागराज	ए.एम.जी.-I के अंतर्गत राज्य वित्त विभाग, राज्य उत्पाद शुल्क विभाग, राज्य कर विभाग, स्टाम्प और रजिस्ट्रेशन विभाग, योजना विभाग की लेखापरीक्षा॥
कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, उत्तरप्रदेश	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय लखनऊ	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा॥
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा॥
	केन्द्रीय व्यय शाखा कार्यालय प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा॥
	शाखा कार्यालय, बिहार, पटना	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा॥
	शाखा कार्यालय- राँची (झारखण्ड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा॥
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली शाखा कार्यालय लखनऊ	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (वित्त एवं संचार), दिल्ली है।	उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में स्थित मुख्यतः डाक एवं दूरसंचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों, एन.आई.सी. व यू.आई.डी.ए.आई. के लेखाओं की लेखापरीक्षा॥
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-II), उत्तरप्रदेश, शाखा कार्यालय लखनऊ	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा हकदारी-II), उत्तर प्रदेश, प्रयागराज है।	लेखा निर्माण के लेखाओं का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य।

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर)

इस अंक में लेखकों/ रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/ आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि ऑडिट भवन परिसर में स्थित हमारे समस्त कार्यालयों की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका **"संधान"** के सप्तम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वस्तुतः, हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रयोजन न केवल कार्यालय के कार्मिकों के साहित्यिक एवं लेखन कौशल को अभिव्यक्त एवं विकसित करना है, अपितु उन्हें इसके लिए एक सशक्त और उत्कृष्ट मंच भी प्रदान करना है।

राजभाषा के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन सहित हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने में हिन्दी पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

कार्यालयीन कार्यों और निजी जीवन के व्यस्ततम क्षणों में से कुछ समय निकालकर पदाधिकारियों ने जिस श्रम और उत्साह से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है, वह अति श्लाघ्य है।

यह पत्रिका गद्य-पद्य का मनोरम संकलन प्रस्तुत करती है तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं से युक्त होकर इसकी छटा अद्भुत बन पड़ी है। संपादक मंडल ने भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन बड़ी सजगता से किया है जोकि प्रशंसनीय है। आपके अमूल्य सुझावों और प्रतिक्रियाओं की अपेक्षाओं के साथ यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

अग्रेतर, आशा है कि कार्यालय के सुधी कार्मिक गण आगे भी इसी प्रकार नवीन लेखों के माध्यम से पत्रिका में अपना अप्रतिम योगदान प्रदान करते रहेंगे और पत्रिका को और अधिक सामयिक, उत्कृष्ट, रुचिकर और ज्ञानवर्धक बनाने हेतु सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार पाण्डेय)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि कार्यालयीन हिंदी पत्रिका **'संधान'** का सातवां संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका का प्रकाशन बहुद्देशीय होता है। संधान पत्रिका का सातवां अंक जहाँ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा वहीं यह कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा तथा विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उभर कर आएगा।

भाषा एवं संस्कृति मानव की बहुमूल्य संपदा है। भाषा मानव को प्रदत्त एक अनमोल वरदान है क्योंकि भाषा ही मनुष्य के लिए अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भाषा एवं संस्कृति किसी भी राष्ट्र के आधार स्तंभ होते हैं। राजभाषा हिंदी संपूर्ण देश में संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। राजभाषा हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का कारण हिंदी का वैज्ञानिक, सरल और समावेशी रूप है। हिंदी भाषा देश की संपर्क भाषा होने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को भी प्रतिबिंबित करती है। केंद्र सरकार के कार्यालय में कार्यरत होने के कारण कार्यालयीन कार्य में भी हिंदी के अधिकतम प्रयोग को बढ़ावा देकर हम राजभाषा नीति के अनुपालन में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकते हैं।

'संधान' पत्रिका सृजन का एक सशक्त माध्यम है। यह राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सशक्त कदम है। संधान पत्रिका के सातवें अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। **'संधान'** पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

संजय कुमार

(संजय कुमार)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

संदेश

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि हम हमारी विभागीय संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका **"संधान"** का सातवां अंक प्रकाशित कर रहे हैं। मनुष्य के विचारों और अनुभवों का बोध कराने में मातृभाषा की महती भूमिका होती है, क्योंकि इसके द्वारा हम अपने भावों को स्वभाविक रूप से अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

गृह-पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों को अपने विचारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा साहित्यिक प्रतिभा के प्रभावी प्रदर्शन हेतु एक सशक्त मंच प्राप्त होता है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादन मण्डल को मैं अपनी ओर से बधाई देता हूँ।

अग्रेतर, आप सभी से यह आग्रह भी करता हूँ कि आप इसी प्रकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं मौलिक प्रयोग में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करते रहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके अथक प्रयासों एवं उत्साह से यह पत्रिका आगे भी इसी प्रकार प्रकाशित की जाती रहेगी एवं हर बार यह नवीन विषयों एवं विचारों से युक्त होकर; मौलिक लेखों के संकलन सहित अपने नये एवं उत्कृष्ट कलेवर में विकसित होगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु अशेष शुभकामनायें।

(पंकज वर्मा)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका **"संधान"** के सप्तम अंक के उत्कृष्ट प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। यह पत्रिका निरंतर स्तरीय एवं विचारोत्तेजक सामग्री के माध्यम से हिंदी भाषा के संवर्धन, बौद्धिक परिष्कार तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को सुदृढ़ आधार प्रदान कर रही है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रभावी गति प्रदान करते हुए पाठक समुदाय को ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं मूल्यपरक साहित्य उपलब्ध कराएगा। सप्तम अंक का यह संकलन ऑडिट भवन स्थित समस्त कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संयुक्त सृजनात्मक प्रतिभा तथा सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

कार्यालय की ओर से पत्रिका के प्रभावी संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनायें साथ ही, पत्रिका के सतत विकास तथा विकासोन्मुख भविष्य हेतु मंगलकामनाएँ।

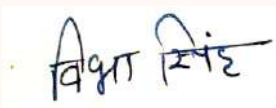

(विभा सिंह)
उपनिदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली
शाखा कार्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश

संपादकीय

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश तथा कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ तथा कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली शाखा कार्यालय लखनऊ की संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका **'संधान'** का सप्तम् अंक (मार्च 2026) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

'संधान' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सौन्दर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रावृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका के इस अंक में एक ओर जहाँ धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म से युक्त *अयोध्या धाम, सोलारिस से सामना एवं कालकेतु का उपाख्यान* जैसी रचनायें हैं; वहीं दूसरी ओर केरल, गुजरात के सोमनाथ तथा दीव, मेघालय इत्यादि स्थानों के सुन्दर एवं सूचनापरक यात्रा वृत्तांतों की छटा विद्यमान है। *प्लासी की वेदना, चालीस की उम्र और वे पल जो अब दिल में साँस लेते हैं* इत्यादि लेख अत्यंत हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं जोकि मनुष्य के चित्त को उद्वेलित करने में सक्षम हैं। मनुष्यों के अनकहे जज्बातों की दास्तां को चित्रित करने वाली कविता *कैसे ये नाते हैं* तथा आधुनिक जीवन की ऊहापोह में रिश्तों के महत्व को रेखांकित करती हुए कविता *न जाने क्यों* अपनी अलग छाप छोड़ने में सफल रही हैं।

कार्यकारी संपादक सहित, संपादक मण्डल तीनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनायें अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'संधान' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक एवं समकालीन बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन करके राजभाषा के विकास में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

ऊदल सिंह सोलंकी,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	श्री अयोध्या धाम	रुचि जायसवाल	1-2
2.	सोलारिस से सामना	मान्धाता सिंह	3-4
3.	बचपन की यादें	राजीव मिश्रा	5-6
4.	जासूसी गैंग	श्रुति पाण्डेय	7-8
5.	सफ़र	सुनील कुमार पाण्डेय	9
6.	प्लासी की वेदना	दीपक वर्मा	10-11
7.	दक्षिण सागर बुलबुला (1720): जब ऑडिट की अनुपस्थिति ने एक साम्राज्य को हिला दिया	रेनू श्रीवास्तव	12-14
8.	चालीस की उम्र और वे पल जो अब सिर्फ़ दिल में साँस लेते हैं	रूपेश पचौरी	15
9.	मेघालय ट्रिप	तरुण पंकज	16-17
10.	झोला	दीपक श्रीवास्तव	18-19
11.	सफ़रनामा	अरविन्द कुमार श्रीवास्तव	20
12.	अनपढ़ कौन?	पंकज मोहन जायसवाल	21
13.	यात्रा वृत्तांत	जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)	22-23
14.	साहित्य, संस्कृति और समाजः पुनर्परिभाषित होता अंतर्संबंध	आदित्य तिवारी	24-25
15.	मेरे कार्यालयीन अनुभव	शिव शंकर सोनकर	26
16.	मूल्य शिक्षा	मोहित सेठ	27-29
17.	समुद्र, पहाड़ और दोस्तीः केरल में पाँच दोस्तों की यादगार महायात्रा	नवीन कुमार	30-31
18.	चुनौतियाँ एवं अवसरः सैन्य जीवन से नागरिक जीवन की ओर	राजकुमार चौधरी	32
19.	रेत पर खींची जीत की लकीर- एक अनकहा संकल्प	विक्रम जीत सिंह	33
20.	विलक्षण खगोलीय घटनाएं और हमारा अस्तित्व	शशांक गौरव	34-35
21.	प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अनवरत यात्रा	दीपक वर्मा	36-37
22.	कालकेतु का उपाख्यान	ऊदल सिंह सोलंकी	38-41
23.	कैसे ये नाते हैं?	लीना दरियाल	43
24.	बेख़याली		
25.	न जाने क्यों	ज्योति दीक्षित	44
26.	उसे मेरा कर दे	शुभम आनंद रस्तोगी	45
27.	कहूँ मैं क्या?		
28.	घर की सड़क	राजीव मिश्रा	46
29.	नई सुबह की तलाश	अनामिका गुप्ता	47- 48
30.	भाग्य का खेल		
31.	बूढ़ा	अवधेश कुमार	49
32.	तिरंगा प्यारा	तिवारी अरुण प्रेम प्रकाश	50

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
33.	मिट्टी की ख़ुशबू और सियासत का रंग	**मोहम्मद इमरान खान**	51
34.	संघर्ष	दीपक कुमार तिवारी	52
35.	स्वार्थी इंसान	जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)	53
36.	तन्हाई	हेमलता गुप्ता	54
37.	रहगुज़र		
38.	आई. ए. एसः एक संघर्ष	सुनील कुमार मीणा	55
39.	तू न कभी विचलित होना	शनी पटेल	56
40.	राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान	संकलित	57-59
41.	कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियाँ		60-76
42.	आपके पत्र		

श्री अयोध्या धाम

रुचि जायसवाल,
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

कुछ दिन पूर्व अयोध्या जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अयोध्या का राम मंदिर, भगवान राम को समर्पित एक भव्य हिंदू मंदिर है, जिसका निर्माण नागर शैली में हुआ है, जो 22 जनवरी, 2024 को 'राम लला' (बाल रूप) की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ भक्तों के लिए खोला गया है। यह तीन मंजिला मंदिर गुलाबी बलुआ पत्थर और संगमरमर से बना है, जिसमें 392 स्तंभ और 44 दरवाजे हैं, जो लगभग 2,500 वर्षों तक स्थिर रहने के लिए डिज़ाइन किया गया है। हिन्दुओं की मान्यता है कि प्रभु श्री राम का जन्म अयोध्या में हुआ था और उनके जन्म स्थान पर एक अत्यंत भव्य प्राचीन मन्दिर स्थापित था जिसे मुगल आक्रमणकारी बाबर ने तोड़कर वहाँ एक मस्जिद बना दी थी। फिर इस स्थान को मुक्त करने एवं वहाँ एक नया मन्दिर बनाने के लिये कई वर्षों तक एक लम्बा आन्दोलन चला।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में स्थित, भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या का राम मंदिर हिन्दुओं के लिए सबसे पूजनीय स्थलों में से एक है। यह मंदिर धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व से भरपूर है, जिसकी महिमा की कोई सीमा नहीं है। यह शहर भगवान श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है और यह मंदिर उसी दिव्यता का उत्सव मनाता है। राम मंदिर केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता का भी प्रतीक है।

राम मंदिर केवल एक मंदिर नहीं है, बल्कि यह सैकड़ों वर्षों के इतिहास, आस्था और श्रद्धा का प्रतीक भी है। पारंपरिक भारतीय मंदिर वास्तुकला की भव्यता को दर्शाता हुआ यह मंदिर, जो अभी निर्माणाधीन है, देश के सबसे विशाल और भव्य मंदिरों में से एक माना जा रहा है। मंदिर में दर्शन करना कई बार भीड़ की वजह से चुनौतीपूर्ण हो जाता है। साथ ही, “गर्भगृह” में सभी को प्रवेश की अनुमति नहीं होती, इसलिए उचित प्राधिकरण के बिना वहाँ प्रवेश नहीं मिल पाता। पूरे परिसर में भक्ति का माहौल होता है, और बारीकी से नक्काशी किया गया मंदिर का दृश्य अत्यंत मनमोहक है। मंदिर परिसर में एक दिव्य शांति का अनुभव होता है। भीड़ तो यहाँ हर मौसम में रहती है। हमारे राम लला हैं ही ऐसे कि कि उनके दर्शनार्थियों का हर समय तांता लगा रहता है।

मंदिर प्रशासन द्वारा भक्तों को एक सहज और यादगार दर्शन का अनुभव प्रदान करने के लिए उचित व्यवस्थाएँ जैसे कि अनुशासित कतारें और सुरक्षा उपाय किये गये हैं। अयोध्या का राम मंदिर केवल एकमात्र आकर्षण नहीं है, बल्कि इसके आसपास कई प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल भी हैं जो शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को और गहराई से समझने में सहायक हैं। पहला स्थल है हनुमान गढ़ी – यह एक सुंदर मंदिर है जो भगवान हनुमान को समर्पित है, जिन्हें अयोध्या का रक्षक भी कहा जाता है। यह राम मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित है और यहाँ से शहर का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। इसके बाद आता है कनक भवन – यह वह स्थान माना जाता है जहाँ देवी सीता निवास करती थीं। इस मंदिर में भगवान राम और माता सीता की सुनहरी मुकुटों से सजी हुई मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह स्थान अपनी आध्यात्मिकता और दिव्यता के लिए प्रसिद्ध है और यहाँ की ऊर्जा अत्यंत शांतिपूर्ण है। रामकोट एक और प्रमुख तीर्थ स्थल है, जो भगवान राम का मुख्य पूजास्थल माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि यहीं पर कभी भगवान राम का प्राचीन किला स्थित था। इसे अयोध्या का हृदयस्थल माना जाता है और राम नवमी के पर्व पर यहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रहती है। इन सभी स्थानों की यात्रा अयोध्या के धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को और भी बेहतर ढंग से समझने का अवसर प्रदान करती है।

"त्रेता के ठाकुर" भी प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह सरयू नदी के तट पर स्थित है और ऐसा कहा जाता है कि यहीं पर भगवान राम ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था। इस मंदिर में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। सरयू नदी – यह एक दिव्य अनुभव में लीन होने के लिए उत्तम स्थान है। इसका सुंदर तट संध्या के समय बहुत

मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है। यहाँ आप प्रातः और संध्या की आरती में भाग ले सकते हैं और घंटियों की गूंज तथा भजन की मधुरता में भगवान की उपस्थिति को अनुभव कर सकते हैं।

अयोध्या राम मंदिर हवाई मार्ग, रेल मार्ग और सड़क मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इसलिए चाहे आप भारत के किसी भी हिस्से से यात्रा कर रहे हों या विदेश से भारत आ रहे हों – आप आसानी से अयोध्या पहुँच सकते हैं। घूमने-फिरने के लिए आप टैक्सी बुक कर सकते हैं या अपने बजट के अनुसार उत्तर प्रदेश की सार्वजनिक बस सेवा का भी उपयोग कर सकते हैं। अयोध्या यात्रा के दौरान ठहरने की व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। राम मंदिर के आसपास कई होटल, लॉज और गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं, जहाँ आपको अच्छी और सुविधाजनक आवास सुविधा मिल जाएगी।

अयोध्या राम मंदिर के दर्शन के लिए अक्टूबर से मार्च का समय सबसे उत्तम माना जाता है, जब मौसम ठंडा और सुहावना रहता है। यही समय प्रमुख हिंदू त्योहारों जैसे दीवाली और राम नवमी का भी होता है, जब अयोध्या शहर रंग-बिरंगी रोशनी और उत्सवों से सराबोर होता है। इस दौरान आपको मेलों की रौनक, शानदार रंग-बिरंगे दृश्य और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध अनुभव मिलेगा। अयोध्या एक सांस्कृतिक धरोहर है, इसलिए यहाँ की महत्ता को समझना भी ज़रूरी है। इस भव्य मंदिर का निर्माण नागर शैली की वास्तुकला से प्रेरित होकर किया गया है, जिसमें सुंदर नक्काशियाँ, ऊँचा शिखर और भव्य द्वार शामिल हैं। यह मंदिर पारंपरिक भारतीय कला का एक अद्वितीय उदाहरण माना जा रहा है। यह मंदिर हर साल लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है, जिससे यह भारत के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक बन गया है। अयोध्या राम मंदिर की यात्रा केवल एक आध्यात्मिक अनुभव नहीं है, बल्कि यह सनातन धर्म की प्राचीन जड़ों से जुड़ने का एक अवसर भी है। यहाँ के आस-पास के दर्शनीय स्थल आपको सनातन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराते हैं, जिससे आप इस पवित्र भूमि की आध्यात्मिक शक्ति को महसूस कर सकें।

सोलारिस से सामना

मान्धाता सिंह,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

उदय वेधशाला के किनारे खड़ा सोलारिस के घूमते हुए बादलों को निहार रहा था। उस ग्रह की रहस्यमय उपस्थिति जैसे उसकी हड्डियों में उतर रही थी—ऐसे रहस्य फुसफुसाती हुई, जिन्हें केवल उसका अवचेतन ही समझ सकता था। उसे उस रहस्यमय सत्ता का अध्ययन करने भेजा गया था, पर अब उसे लगने लगा था कि शायद उसने अपनी क्षमता से कहीं अधिक बड़ा दायित्व उठा लिया है।

वह मुड़कर जाने ही वाला था कि तभी उसने उसे देख लिया। एक आकृति--अजीब तरह से परिचित, पर ऐसे विकृत मानो पानी में पड़ती लहरों में दिखता प्रतिबिंब हो। “तुम कौन हो?” उदय ने पूछा। उसकी आवाज़ फुसफुसाहट से ज़्यादा कुछ नहीं थी।

आकृति ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय, वह बदलने लगी एक ऐसे स्मृति-रूप में, जिसे उदय ने वर्षों पहले अपने भीतर दबा दिया था। वह उसके भाई आर्यन का रूप ले चुकी थी, जो बचपन की एक दुर्घटना में मर गया था। वही उजली मुस्कान, वही जिज्ञासु आँखें--सीधे उदय के हृदय को भेदती हुई। “नहीं,” उदय ने सिर हिलाते हुए पीछे हटते हुए कहा। “तुम असली नहीं हो।”

आर्यन-आकृति ने सिर थोड़ा झुकाया। उसकी मुस्कान डगमगा गई।“क्या सचमुच?” उसने कहा पर वह आवाज़ उदय के कानों में नहीं, उसके मन में गूँज रही थी।

उदय का मस्तिष्क लड़खड़ा गया। वह सत्ता उसकी स्मृतियों से खेलने लगी, वास्तविकता और कल्पना की सीमाओं को धुँधला करती हुई। अतीत और वर्तमान आपस में घुलने लगे, और उदय स्वयं को अपने बचपन के क्षणों को फिर से जीते हुए पाया। हर दृश्य पहले से अधिक सजीव और व्यथित करने वाला। उसने खुद को एक बच्चे के रूप में देखा, गाँव के धूप से भरे खेतों में आर्यन के साथ खेलते हुए। उसने आर्यन का चेहरा देखा--पीड़ा से विकृत जब वह उदय की बाँहों में दम तोड़ रहा था। उसने अपना ही चेहरा देखा--शोक और अपराधबोध से टूटा हुआ जब वह आर्यन के अंतिम संस्कार में अकेला खड़ा था। सत्ता की आवाज़ उसके कानों में फुसफुसाई,“तुम उसे बचा सकते थे, उदय। तुम अतीत बदल सकते थे।”

सत्ता की पकड़ कसती गई, और उदय की वास्तविकता पर पकड़ ढीली पड़ने लगी। वह स्मृतियों की एक भूलभुलैया में भटकने लगा—हर स्मृति उसके सबसे गहरे भय और इच्छाओं का प्रतिबिंब थी। उसने स्वयं को एक सफल वैज्ञानिक के रूप में देखा—सम्मानित और प्रशंसित। और फिर स्वयं को एक असफल व्यक्ति के रूप में अकेला, भूला हुआ। पर इस अराजकता के बीच, उसके भीतर दृढ़ संकल्प की एक चिंगारी जली। उसे समझ में आ गया कि वह सत्ता उसकी भावनाओं पर पल रही थी—उसके संदेह और भय को ही हथियार बना रही थी। “मैं तुम्हें मुझे नियंत्रित नहीं करने दूँगा,” उदय ने दाँत भींचते हुए कहा। उसकी आँखों में दृढ़ निश्चय चमक उठा। सत्ता हँसी। उसकी हँसी पूरी वेधशाला में गूँज उठी। “तुम मेरा विरोध नहीं कर सकते, उदय। मैं तुम्हारा अवचेतन हूँ—तुम्हारा सबसे गहरा स्वरूप।” उदय ने आँखें बंद कर लीं और अपनी साँसों पर ध्यान केंद्रित किया। उसे पता था कि अब भागने का कोई रास्ता नहीं है। उसे अपने ही राक्षसों का सामना करना होगा—उस अपराधबोध और शोक का, जिससे वह वर्षों से बचता आया था। जब उसने आँखें खोलीं, तो सत्ता का रूप बदलने लगा। वह अब उदय का ही एक अंधकारमय प्रतिबिंब बन चुकी थी। “मैं तुम हूँ,” सत्ता ने फुसफुसाया। “मैं तुम्हारी छाया हूँ। तुम्हारा अंधकार।” उदय मुस्कराया। उसके भीतर एक अजीब-सी शांति उतर आई। “तो फिर,” उसने कहा, “आओ, इसका सामना हम साथ करें।” उस क्षण वेधशाला विलीन हो गई।

उदय ने स्वयं को एक विशाल, तारों से भरे विस्तार के किनारे खड़ा पाया। सत्ता अब एक छायामय उपस्थिति उसके पास खड़ी फुसफुसाई, “अपने ही मन की गहराइयों में स्वागत है, उदय।” उदय मुस्कराया। स्वतंत्रता और मुक्ति की अनुभूति उसके भीतर फैल गई। उसे पता था कि उसने अंततः अपने अवचेतन का सामना कर लिया है और उससे अधिक सशक्त होकर बाहर आया है। सामने ब्रह्मांड फैला था। एक विशाल, अगम्य सागर अनगिनत रहस्यों से भरा हुआ। और उदय, अपनी नई समझ के साथ, अब जो भी सामने आए उसका सामना करने के लिए तैयार था। जब वह वहाँ खड़ा था। अंधकार में हीरों की तरह टिमटिमाते तारों के बीच उदय को यह बोध हुआ कि वह सत्ता कोई राक्षस नहीं थी, बल्कि एक गुरु थी। उसने उसे उसके अपने मन की गहराइयाँ दिखाई थीं और उसके भय तथा संदेहों का सामना करना सिखाया था। और इस प्रकार, उदय ब्रह्मांड के किनारे खड़ा था। एक नई यात्रा आरंभ करने के लिए तैयार। आत्म-खोज और अन्वेषण की यात्रा। वह सत्ता, जो अब उसका ही एक हिस्सा बन चुकी थी, फुसफुसाई, “ब्रह्मांड रहस्यों से भरा है, उदय। आओ, इन्हें साथ मिलकर खोजें।” उदय मुस्कराया। उसे पता था कि अब

वह अकेला नहीं है। उसके साथ वह सत्ता थी और वह स्वयं भी। और इसी एहसास के साथ उसने अज्ञात की ओर अपना पहला कदम बढ़ाया। यात्रा आरंभ हो चुकी थी, और उदय तैयार था।

उदय ब्रह्मांड के किनारे खड़ा था। उसके पीछे तारे तेज़ी से चमक रहे थे। वह जानता था कि अब वह पहले जैसा कभी नहीं रहेगा—वह सत्ता उसे सदा के लिए बदल चुकी थी।

फिर भी, वह उसके लिए कृतज्ञ था। उसने अपने भीतर का एक ऐसा पक्ष खोज लिया था, जिसके अस्तित्व का उसे पहले कोई ज्ञान नहीं था। जब वह वेधशाला से दूर चलता गया, तो उसके भीतर शांति की एक लहर उतर आई। उसे पता था कि वह सत्ता सदा उसके साथ रहेगी, पर यह भी स्पष्ट था कि नियंत्रण अब उसी के हाथ में है। ब्रह्मांड रहस्यों से भरा था, और उदय उन्हें सामने से चुनौती देने के लिए तैयार था। उसके साथ वह सत्ता थी—और वह स्वयं भी और इसी विश्वास के साथ उसे ज्ञात था कि वह किसी भी चुनौती पर विजय पा सकता है। यात्रा आरंभ हो चुकी थी, और उदय पूर्णतः तैयार था।

उदय की अपनी ही चेतना की गहराइयों से होकर गुज़री यात्रा ने उसे बदल दिया था। उसने अपने राक्षसों का सामना किया था और पहले से अधिक सशक्त होकर उभरा था। किंतु जब वह ब्रह्मांड के किनारे खड़ा था, तो उसे यह भली-भाँति ज्ञात था कि यह अंत नहीं—केवल आरंभ है। वह सत्ता, जो अब उसका ही एक हिस्सा बन चुकी थी, उसके कानों में फुसफुसाई, “ब्रह्मांड रहस्यों से भरा है, उदय। आओ, इन्हें साथ मिलकर खोजें।” उदय मुस्कराया। उसे पता था कि वह तैयार है। उसने आगे एक कदम बढ़ाया, और ब्रह्मांड उसके सामने अनंत संभावनाओं के कैनवास की तरह खुलता चला गया। वह आकाशगंगाओं में भटका—तारों के जन्म और मृत्यु का साक्षी बना। उसने कृष्ण विवरों का नृत्य देखा, और नीहारिकाओं की भव्यता को निहारा। वह दूरस्थ ग्रहों की सतह पर चला, और विस्मय से आकाश की ओर देखता रहा। और इस पूरी यात्रा में वह सत्ता उसका मार्गदर्शन करती रही—उसे ब्रह्मांड के रहस्य सिखाती हुई। उदय ने सभी वस्तुओं की पारस्परिक संबद्धता को समझा, और सृष्टि के नाज़ुक संतुलन को जाना। उसने किसी दूरस्थ ग्रह पर सूर्योदय की सुंदरता देखी, और एक सुपरनोवा विस्फोट की विराटता को महसूस किया। उसने अपनी त्वचा पर एक तारे की किरणों की ऊष्मा महसूस की, और अंतरतारकीय अंतरिक्ष की शीतल नीरवता को भी। तभी उसे यह बोध हुआ कि ब्रह्मांड कोई शून्य, निर्जीव विस्तार नहीं है, बल्कि एक जीवंत, साँस लेती हुई सत्ता है। यह जीवन का एक जाल है—जहाँ हर तंतु एक-दूसरे से जुड़ा है, और हर कर्म का कोई न कोई परिणाम है।

उदय की यात्रा उसे एक कृष्ण विवर के किनारे तक ले गई, जहाँ समय और स्थान विकृत हो जाते हैं। उसने अंतरिक्ष-काल की वक्रता देखी, और उस बिंदु को भी जहाँ से लौटना असंभव होता है। और तब उसे यह अहसास हुआ कि उसके पास घटनाओं की दिशा बदलने की शक्ति है। वह क्षुद्रग्रहों की कक्षाएँ बदल सकता है, और ग्रहों की नियति को आकार दे सकता है। सत्ता ने उसके कानों में कहा,“तुम्हारे पास शक्ति है, उदय। तुम ब्रह्मांड को आकार दे सकते हो।” उदय मुस्कराया। वह जानता था कि वह तैयार है। उसने अपना हाथ उठाया और ब्रह्मांड ने प्रत्युत्तर दिया। उसने एक धूमकेतु की दिशा बदल दी, और एक ग्रह को विनाश से बचा लिया। और तभी उसे अपना उद्देश्य स्पष्ट दिखाई दिया। वह ब्रह्मांड का संरक्षक था। जीवन का रक्षक। सत्ता मुस्कराई और विलीन हो गई। उदय वहाँ अकेला खड़ा था पर फिर भी हर वस्तु से जुड़ा हुआ। उसे पता था कि वह सत्ता सदा उसके भीतर रहेगी मार्गदर्शन करती हुई, सिखाती हुई। और वह इसके लिए कृतज्ञ था। ब्रह्मांड रहस्यों से भरा था, और उदय उन्हें सामने से सामना करने के लिए तैयार था। उसके पास वह सत्ता थी और वह स्वयं भी। और इसी विश्वास के साथ वह जानता था कि वह किसी भी चुनौती पर विजय पा सकता है। उदय की यात्रा उसे ब्रह्मांड के किनारे तक और उससे भी आगे ले जा चुकी थी। उसने नई दुनियाएँ देखीं, नई सभ्यताओं से परिचय किया। उसने चुनौतियों का सामना किया, और उन पर विजय पाई। और वह जानता था कि वह सदा एक यात्री रहेगा अज्ञात का अन्वेषक। ब्रह्मांड रहस्यों से भरा था, और उदय उन्हें उजागर करने के लिए तत्पर था।

तभी वह सत्ता फिर प्रकट हुई और उसके कानों में फुसफुसाई, “अब आगे क्या, उदय?” उदय मुस्कराया। वह जानता था—यात्रा तो अभी शुरू ही हुई है।

बचपन की यादें

राजीव मिश्रा,
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

बचपन में हम सभी ने ढेर सारी शरारतें की हैं। आज जब उन्हें याद करता हूँ तो मन आनंद से भर उठता है और लगता है कि जैसे यह कोई जमा पूँजी हो, जिसे सहेज कर रखना है। कोई पाँच वर्ष की उम्र में मन था कि गाँव का पूरा एक चक्कर लगाकर आ जाऊँ, लेकिन घरवाले जाने ही नहीं देते थे। फिर मन में यही लालसा रहती थी कि जल्दी से बड़ा हो जाऊँ और अपनी इच्छा से घूम सकूँ। धीरे-धीरे हम सब बड़े हो गये और बचपन पीछे छूट गया। लेकिन इस प्रक्रिया में अनगिनत पल आए, जो हमारी इन्हीं यादों का हिस्सा बन गए।

जैसे सबका बचपन होता है लगभग वैसे ही मेरा और मेरे उन दोस्तों का भी था जो हमारे साथ बड़े हुए। बचपन में साथ खेलने वाले इस समूह को मंडली नाम दिया गया था। हमारा समय ऐसा था कि जहाँ-जहाँ पहुँचे परिवर्तन ही हुआ। रेडियो से टी.वी का सफ़र हमने तय किया। बचपन में टेलिफ़ोन के खम्बे हमने देखे। गाँव की कच्ची सड़कों को पक्की होते देखा। जब मैंने पहली बार अपने गाँव को देखा या यूँ कहें कि मेरे गाँव के बारे में जो पहली याद है वो इस तरह थी कि उसके पूरब में एक ईंट का भट्ठा था जो अभी भी है, परन्तु किसी कारण वश अब बंद है। उत्तर में दो बाजारों को जोड़ने वाली एक सड़क है। दक्षिण में दूर तक खेत और खेतों के उस पार एक छोटा सा जंगल जिसमें बिसुही नाम की एक नदी बहती है। पश्चिम के हिस्से में बाँस का बाग था उसके आगे एक बड़ा सा मैदान जिसमें क्रिकेट के बड़े-बड़े मैच खेले जाते थे। उसी क्रिकेट के मैदान के चारों तरफ आम के कई बाग थे। हालाँकि आज बहुत कुछ बदल चुका है इसीलिए वो गाँव अपना होकर भी अपना नहीं लगता है। सारे दोस्त गाँव से जा चुके हैं जो हैं; वो भी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त हैं।

हमारी यह मंडली समय और हमारे दायरे के साथ बदलती रही, लेकिन इन सब में एक सामान्य बात थी—अपने हिसाब से दुनिया देखना और शरारतें करना। बचपन में इस बात पर पूरा यकीन था कि बागों में भूत हैं। कुछ दोस्तों के पास इतनी जानकारी होती थी कि किस पेड़ पर कौन-सा भूत है। बागों के नाम भी कुछ अलौकिक थे, जैसे—काले भूत का बाग, चुड़ैल वाला बाग, सरकटवा बाग इत्यादि। यह नाम किसने रखे इसका इतिहास शायद ही किसी को मालूम हो। बाग का नाम तो मुख्य भूत के नाम पर था। इसके अलावा, हम सबकी यह मान्यता थी कि प्रत्येक पेड़ पर छोटे-छोटे भूतों का बसेरा है जिसकी पुष्टि भी हमारी मंडली द्वारा की जा चुकी थी कि अमुक बात सही है, फलाँ पेड़ पर फलाँ भूत रहता है और इस बात पर हमें पूरा यकीन था। गर्मियों के मौसम में इन्हीं बागों में झुण्ड में खेलना, पेड़ों पर चढ़ने-उतरने का अपना एक अलग आनंद था।

कभी-कभी हमारी मण्डली के सदस्यों में झगड़े भी हो जाते थे। लेकिन पूरी मण्डली का यह मत था कि झगड़े कितने भी गंभीर हों घर तक नहीं पहुँचने चाहिए। इन झगड़ों का प्रभाव बहुत ही क्षणिक होता था। कभी-कभी हमारे झगड़ों के कारण बड़ों में भी मनमुटाव हो जाता था और हमें यह हिदायत दी जाती थी कि अगर फलाँ बच्चे के साथ दोबारा दिखे तो हाथ-पैर तोड़ दिए जाएँगे। लेकिन हम कहाँ मानने वालों में से थे। फिर भी कुछ दिनों के लिए लोगों के सामने साथ नहीं दिखते थे ,जिससे उन्हें लगे कि हमने उनकी बात मान ली है। और कुछ दिन बाद सब सामान्य हो जाता था।

स्कूल की शरारतें गाँव की शरारतों से थोड़ी अलग थीं, क्योंकि अध्यापकों को हमें पीटने की खुली छूट थी। हमें यह भी बताया गया था कि यदि अध्यापक से पिटे, तो घर में भी उतनी ही पिटाई होगी। पिट के कहीं से आओ घर में पिटाई होनी ही थी। जब अध्यापक हमें पीटते थे, तो लगता था कि इनसे बड़ा दुश्मन अब कोई नहीं है, और योजना बनाई जाती थी कि गुरुजी को कैसे घेरना है। परंतु यह योजना कभी सफल नहीं हुई और हमारे पिटने का सिलसिला जारी रहा।

स्कूलों में सभी बच्चों के छूटने का समय एक ही था इस कारण सड़कों पर बच्चों का पूरा हुजूम होता था। कोई स्कूल बस या वैन जैसी चीज़ें नहीं थीं। जो साइकिल से आते थे, वे भी साथ चलने के लिए पैदल ही चलते थे। रास्ते में रुककर क्रिकेट खेलना और फिर घर जाकर यथास्थिति डाँट या मार खाना सामान्य बात थी।

सर्दियों में समूह बनाकर अलाव तापने का अलग ही मज़ा था। उस समय हम लोग किसी देखी हुई फिल्म की गंभीर विवेचना करते थे। उन दिनों हमें पूरा यकीन था कि अभिनेता धर्मेंद्र और जितेंद्र दोनों सगे भाई हैं। विवेचना का बिंदु यह होता था कि किस हीरो के पास ज़्यादा ताकत है और अगर सब आपस में लड़ जाएँ तो कौन जीतेगा।

गाँव के पास में खेतों के बीच में ट्यूबवैल था और उस ट्यूबवैल में घंटों नहाते रहना अपने आप में एक फैंटेसी थी। जब तक आँखें लाल नहीं हो जाती थीं, नहाना बंद नहीं होता था। पास वाले जंगल की नदी में नहाना एक तरह का सपना था, जो आज तक पूरा नहीं हुआ। सड़क की पुलिया एक बाल संसद की तरह थी जहाँ पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा होती थी। गर्मी और बरसात के दिनों में हम लोग घंटो उस पुलिया पर बैठ कर आते-जाते लोगों और वाहनों को देखा करते थे।

इस तरह की अनगिनत यादों के साथ हमारा बचपन गुज़रा। आज जब हम बड़े हो गए हैं और अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त हैं, तब यही यादें हमें गुदगुदाती हैं।

''हिमालय की अमल–धवल चोटियों का मुकुट धारण करने वाला हमारा यह देश, चिरन्तन काल से जिस भाषा में बोलता, गाता और गरजता आया है, हिन्दी उसी भाषा का परम्परागत प्रसाद है।''

– गोस्वामी गणेशदत्त

जासूसी गैंग

श्रुति पाण्डेय

सुपुत्री श्री सुनील कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

आज मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ। एक दिन की बात है। मैं सुबह-सुबह उठी और मेरी आँख सीधे मेरे फोटो फ्रेम की तरफ पड़ी और उसमें मेरे दो दोस्तों की फोटो थी, वो बचपन वाले दोस्त, कबीर और नैना। वो कबीर जो हमेशा आखिरी बेन्च पर बैठता था और नैना जो हमेशा मेरे साथ बैठती थी। उन दोनों को लन्दन जाने का बहुत मन था। फिर जब बड़े हुए तो दोनों लन्दन चले गए। हम लोग बचपन में एक खेल खेलते थे। लेकिन वो कोई मामूली खेल नहीं था। एक छोटी गैंग वाला खेल, कभी मैं चोर बनती तो कभी नैना और एक आदमी तो हमेशा से चोर बनता ही था – कबीर। हम तीनों हमेशा यही सोचते थे कि हमारा भी एक गैंग हो – जासूसी गैंग। लेकिन जबसे हम अलग हुए तब से किसी की याद ही नहीं आती थी। आज जब सुबह उठ कर फोटो देखी तो लगा कि असली में एक गैंग बना कर केस सुलझाना चाहिए। उसी समय मैंने अपना लैपटॉप खोला और फेसबुक पर उन दोनों को खोजने बैठ गई। जब तक मैंने फेसबुक पर उन दोनों को खोजा तब तक मेरे दिमाग में कई तरह की कहानियाँ चलती रहीं। लेकिन पिक्चर तो अभी बाक़ी है मेरे दोस्त। मुझे अपने दोस्तों का पता चल गया और उनका फोन नम्बर भी मिल गया। फिर मैंने लगे हाथ उन दोनों से बात भी कर डाली। वे सब लन्दन से लौट कर लखनऊ में ही बस गए थे। जिंदगी की दौड़ में हम मिल नहीं पाए थे। सब मेरे प्लान से सहमत थे। अरे, मैं आपको अपना नाम तो बताना भूल ही गई। मेरा नाम देविका शर्मा है। हमारा केस भी अजीब है। एक लड़के ने, जिसका नाम दिवाकर था, बस थोड़े पैसों के लिए अपने पिता को मार डाला था। अगले दिन हम लोग सुबह नौ बजे उठे। सारी तैयारियों और नाश्ते के बाद हम लोग निकल पड़े। हमने अपने कान में ट्रांसमीटर रिसीवर लगा लिए थे। आपको पता ही है कि हम जरूरी जासूसी काम पर निकल पड़े थे। हम उस लड़के के घर के पास पहुँचे और उसके घर पर आने-जाने वालों पर निगाह रखने लगे। ऐसा हमने पाँच दिन तक किया। मुझे लगने लगा कि यह जासूसी का काम बहुत झंझटी है। मगर हम तीनों ने हिम्मत नहीं हारी। पुलिस वालों से भी हम लोंगों ने बात कर ली थी।

आखिरकार पुलिस केस था। मुझे ये यकीन था कि कोई अपने पिता को मात्र दो हज़ार रुपये के लिए नहीं मार सकता है। मेरे दोनों दोस्त कह रहे थे कि क्यों नहीं मार सकता है। लड़के के नाते-रिश्तेदार भी कहते थे कि माँ-बाप के लाड़-प्यार में ही इकलौता लड़का बिगड़ गया था। बुराई का अंत बुराई ही होता है। मेरा दिल फिर भी ये मानने को तैयार नहीं था। हमने सोचा कि लड़के के दोस्तों से बात की जाये। कई लड़कों से बात करने के बाद हमारी जानकारी में एक ग्रुप आया जो बिगड़ैल बच्चों का था। पैसे की अधिकता दिमाग खराब कर देती है। हमने उन लड़कों से दोस्ती कर ली। इधर इस लड़के को पुलिस ने पकड़ लिया था। नाते-रिश्तेदार भी नहीं चाहते थे कि वो छूट कर आये। बड़ा घर, एक औरत के सिवा कोई नहीं। सभी चाहते थे कि वो इस घर में राज करें। धीरे-धीरे इन बदमाश लड़कों से हमारी दोस्ती बढ़ गई। उनके कई राज हमें पता चलने लगे। चोरी, मार-पीट, नशा आदि इन सबका रोज का काम था। नए दोस्त बनाना और उनसे पैसे ऐंठना इनका कमाई का तरीका था। नया लड़का दिखावे में फँस जाता। जब तक समझ में आता, तब तक देर हो जाती। उधर पुलिस वालों से हम जुड़े हुए थे। पुलिस को हम सारे सबूत देते जा

रहे थे। जब मतलब भर के सबूत हो गए तो एक दिन उनको नशा करते चोरी के माल के साथ हम तीनों ने पुलिस बुला कर पकड़वा दिया। जब थाने में मार पड़ी तो उन बदमाश लड़कों की हालत खराब हो गई। उन्होंने सब क़ुबूल कर लिया। कहानी पता चली कि उन लड़कों ने इस लड़के को धमका कर इसके पिताजी को पार्क में बुलाया और शराब पीने ले लिए दो हज़ार रूपये मांगे। एक बाप के नाते उन्होंने पहले तो अपने बेटे को फटकारा और न मानने पर दो-तीन झापड़ भी मार दिए। जब पुलिस को बुलाने की बात आई, तब उन बदमाश लड़कों ने इस लड़के के पिता को मारना शुरू किया और इतना मारा कि वो अधमरे हो गए। वे लड़के फिर भाग गए। इस लड़के को कुछ समझ में नहीं आया। एक तरह अपने गलत और बदमाश दोस्त, दूसरी तरफ अधमरा पिता। वो रोने लगा। पास से गुजर रहे रिक्शे वाले ने मदद के नाते अस्पताल पहुँचा दिया। फिर पुलिस केस और मोबाइल चेक किया गया।

लड़के ने फ़ोन करके बाप को बुलाया था। पुलिस ने उसे पकड़ लिया। वो इतना डरा था और शर्मिंदा था कि कुछ बोल नहीं पाया। बोलता भी क्या? गलती तो की ही थी। कैसे कहता कि उसके गंदे और बदमाश दोस्तों ने बाप को मारा है, और वो कुछ कर भी नहीं पाया। पकड़े जाने और पुलिस की पूछताछ में उन बदमाश लड़कों ने अपना जुर्म क़ुबूल कर लिया और अदालत ने इस लड़के को छोड़ दिया। बाहर निकल कर इस लड़के ने कसम खायी कि गलत संगत नहीं करूँगा, मन लगा कर पढ़ूँगा और माँ की सेवा करूँगा। आज भी वो लड़का माँ के साथ रहता है, एक विद्यालय में अध्यापक हो गया है। सारे बच्चों को नीति की बात भी सिखाता है, नशा मुक्ति अभियान में हम लोगों के साथ काम भी करता है। आज से दो महीने बाद उसकी शादी है, आज ही कार्ड आया है।

सीख: संगत से गुण आवत है, संगत से गुण जात ।।

सफ़र

श्री सुनील कुमार पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

इक आवाज़ आई "लाला जरा चाभी लीयो। सफारी बाहर कर दीयो"। घर के नौकर ने चाभी देते हुये कहा – "लाला सफारी बाहर खड़ी कर दीयो"। मैंने इससे पहले टाटा-सफारी चलाई नहीं थी। बैठा ज़रूर था। इसमें भी बैठा था। गाड़ी में ड्राइवर सीट के दरवाजे पर चाभी लगाते समय सफारी पर ध्यान गया। बहुत धूल धूसरित थी। सोचा बाहर कर अभी नौकर से कह दूँगा कि कपड़ा मार देगा।

सफारी का दरवाजा खोलकर ड्राइवर सीट पर बैठते हुये एक अजीब सा एहसास हो रहा था। हमेशा बगल की सीट पर बैठता था। चाभी लगाई, पर सफारी स्टार्ट ही नहीं हुई। कई बार चाभी घुमाने के बाद थक-हार कर बोनट खोला। देखा सफारी में बैट्री ही नहीं थी। तभी आवाज़ आई – "सफारी न आई बाहर। नौकर भागता हुआ आया। बोला – "अरे लाला मैं तो बताना ही भूल गया। बैट्री दस दिन पहले ठीक होने गई थी। लाने का ध्यान ही नहीं रहा"। मैंने कहा – "तो सफारी यहीं खड़ी रहने दो। क्या फर्क पड़ता है"। "अरे नहीं। बाहर तो करना ही है"। – नौकर बोला। मुहल्ले के लोग आ रहे थे। दो-चार बड़े लोग बोले –"लाला तुम ड्राइविंग सीट पर बैठो। हम धक्का मारते हैं"। बड़े एहतियात के साथ सफारी कोठी के बाहर चार लोगों ने धक्का मारकर बाहर की। पड़ोसी ने कहा – "मेरे घर के आगे लगा दो"। परिवार के किसी सदस्य ने कहा – "वहीं खड़ी कर दो। फुर्सत पाते ही जा को बेच देंगे। अब चले-वाले ना है। कौन चलाओगो"। इस तरह सफारी बाहर हुई।

उधर अस्पताल से फोन आया – "हम लोग आ रहे हैं"। घर में नाते-रिश्तेदारों, टोले-मोहल्ले वालों, दोस्तों-यारों, गाँव-बिरादरी वालों, समाज-राजनीति के लोगों का आना शुरू हो गया था। तम्बू तना था। कुर्सियाँ भरी थीं।

एक एम्बुलेंस आ कर रुकी। बाबूजी लाये गए हैं। चार पाँच लोगों ने मिलकर शरीर उतारा। ज़मीन पर साढ़े-छह फीट का शरीर लेटा हुआ था। लोग बातें कर रहे थे। विषय थे - बाबूजी। "क्या आदमी था", "गजब था साब - गजब", "क्या पकड़ थी बिरादरी पर", "आदमी की पहचान थी साब", "राजा था राजा", "मर्द था - मर्द", "कौन नहीं जानता था भैया को", "गाँव-घर के लोगों को भरी भीड़ में पहचान लेवें थे भैया", "सब उनकी बड़ी इज्जत करें थे", "जमीनी आदमी था भाई", "क्षेत्र में कोई घटना हो – हमेशा खड़ा पाएंगे आप", "सूना कर गया", "सफारी से चलते थे तो लगता था कोई है"।

मेरा दिमाग चकरा रहा था। दस दिन पहले सफारी की बैट्री बनने गई थी और बाबूजी अस्पताल। सफारी पर धूल और बाबूजी की काया अब मिट्टी। सफारी को चार लोगों के सहारे बाहर किया गया और बाबूजी चार लोगों के सहारे जाएँगे। सफारी दमदार सवारी थी और बाबूजी दमदार सवार। आज दोनों बेकार। मैंने सफारी में बाबूजी के साथ सफर किया था। मेरा शरीर ढीला पड़ रहा था। कंधे झुक गए थे। तभी किसी ने आवाज दी – "लाला चलो बुला रहे हैं"।

मैं सोच रहा हूँ - अब वैसे कौन बुलाएगा, जैसे बाबूजी बुलाते थे। सफारी और उसका सवार दोनों सफर पूरा कर चुके। एक शायर ने कहा है:

"कौन कहता है वो मर गया,

हुज़ूर वो सफर में था, अब अपने घर गया" ॥

प्लासी की वेदना

दीपक वर्मा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मैं प्लासी हूँ। गंगा के तट पर फैला हुआ एक शांत मैदान, जिसकी पहचान कभी आम के पेड़ों, उपजाऊ मिट्टी और धीमी बहती हवा से थी। वर्षों तक मैंने हल की रेखाएँ देखीं, उत्सवों की पदचाप सुनी और किसानों के पसीने की गंध को अपने भीतर बसाए रखा। मुझे कभी यह आभास नहीं था कि एक दिन मेरा नाम इतिहास में ऐसे दर्ज होगा, जहाँ मेरी हर कण में वेदना, विश्वासघात और सत्ता की भूख समा जाएगी।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक बंगाल समृद्ध था। व्यापार फल-फूल रहा था और गंगा के किनारे बसे नगर जीवन से भरे थे। लेकिन इसी समृद्धि ने बाहरी शक्तियों की आँखें खोल दीं। अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के बहाने यहाँ आई थी, पर धीरे-धीरे व्यापार सत्ता में बदलने लगा। उन्होंने बिना अनुमति किले बनवाए, हथियार जमा किए और स्थानीय शासन की अनदेखी की। यह सब नवाब सिराजुद्दौला को स्वीकार नहीं था।

1756 ईस्वी में जब नवाब को यह ज्ञात हुआ कि अंग्रेज़ उनकी आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे हैं, तब उन्होंने कठोर कदम उठाया। जून 1756 में फोर्ट विलियम पर नवाब ने कार्रवाई की। अंग्रेज़ों को पीछे हटना पड़ा। उस समय मुझे लगा कि शायद न्याय ने सिर उठाया है, पर अंग्रेज़ों ने इस पराजय को अपमान नहीं, अवसर माना। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब केवल व्यापार नहीं, बल्कि बंगाल की सत्ता ही उनका अन्तिम लक्ष्य होगी।

सन् 1757 के प्रारंभिक महीनों में मेरे आसपास की हवा बदलने लगी। कलकत्ता से रॉबर्ट क्लाइव आगे बढ़ रहा था, पर उसकी असली ताकत तलवार नहीं, षड्यंत्र था। नवाब के दरबार में असंतोष पहले से मौजूद था। मीर जाफर, जो सेनापति था, स्वयं को उपेक्षित मानता था। जगत सेठ जैसे व्यापारी अपने हित सुरक्षित करना चाहते थे। राय दुर्लभ और ओमिचंद जैसे लोग सत्ता के समीकरण बदलने को आतुर थे। रात के अँधेरे में, जब सब सोते, मैं उन गुप्त वार्ताओं को सुनता जिनमें बंगाल का भविष्य सौदों में तौला जा रहा था।

इन षड्यंत्रों की सबसे पीड़ादायक बात यह थी कि युद्ध से पहले ही युद्ध में हार लगभग तय हो गयी थी। नवाब को शक तो था, पर वे विश्वास और संदेह के बीच उलझे रहे। उन्होंने सोचा कि अंतिम क्षण में उनके सेनापति साथ देंगे। मैं देख रहा था कि यह भरोसा कैसे धीरे-धीरे दरक रहा है, पर मैं एक मैदान था, बोल नहीं सकता था।

22 जून 1757 की शाम मेरे ऊपर इतिहास उतर आया। नवाब की विशाल सेना ने मेरे चारों ओर डेरा डाल दिया। हजारों सैनिक, हाथी, घोड़े और तोपें मेरे सीने पर फैली थीं। रात भर मशालों की रोशनी और पहरेदारों की आवाज़ें गूंजती रहीं। उस रात मुझे नींद नहीं आई। मुझे लग रहा था कि अगली सुबह सब कुछ बदल जाएगा।

23 जून 1757 की सुबह बादलों से ढकी हुई थी। जैसे ही युद्ध आरंभ हुआ, अचानक मूसलाधार वर्षा होने लगी। ऐसा लगा जैसे प्रकृति भी नवाब का साथ नहीं दे रही है। नवाब की सेना की तोपें भीग गईं, बारूद बेकार हो गया। सैनिक भ्रमित हो गए, फिर भी उन्होंने मोर्चा नहीं छोड़ा। कुछ देर बाद बारिश थमी और धुएँ का गुबार छँटने लगा। तभी अंग्रेज़ों की तोपों ने गरजना शुरू किया। उनकी तैयारी पूरी थी, उनके हथियार सुरक्षित थे।

मैंने देखा कि मीर जाफर की सेना, जो संख्या में सबसे बड़ी थी, चुपचाप खड़ी रही। न उसने आगे बढ़कर युद्ध किया, न पीछे हटकर साफ इनकार किया। वह निष्क्रियता मेरे लिए सबसे बड़ी चोट थी। नवाब सिराजुद्दौला ने संकेत भेजे, संदेशवाहक दौड़े, पर जवाब में केवल मौन मिला। युद्ध में नवाब की तरफ से केवल मीर मदान वीरतापूर्वक लड़ा, लेकिन वो मारा गया। कुछ ही घंटों में युद्ध का निर्णय हो गया। संख्या, साहस और न्याय—सब हार गए; षड़यंत्र, धोखा और लालच जीत गए।

युद्ध के बाद मेरा दिल और भी बैठ गया। पराजय की आहें, घायल सैनिकों की कराह और विजेताओं की उत्सवध्वनि मेरे भीतर गूंजती रही। नवाब युद्धभूमि छोड़कर चले गए। 29 जून 1757 को मीर जाफर को नवाब घोषित किया गया, पर मैं जानता था कि वह केवल नाम का शासक है। असली सत्ता उन हाथों में चली गई थी, जो समुद्र पार बैठे थे।

इसके बाद जो हुआ, वह धीरे-धीरे पूरे भारत ने महसूस किया। बंगाल की सम्पत्ति बाहर जाने लगी, कर बढ़े, किसानों की हालत बिगड़ने लगी। कंपनी ने व्यापार को शासन में बदल दिया। प्लासी केवल एक युद्ध नहीं रहा, वह एक संकेत बन गया कि अब भारत की नियति बाहरी शक्तियाँ तय करेंगी।

समय बीतता गया। मेरे ऊपर फिर से हरियाली उगी, लोग लौट आए, पर मेरी स्मृतियाँ कभी नहीं मिटीं। जब भी हवा चलती है, मुझे लगता है कि वह उन फुसफुसाहटों को फिर से जीवित कर रही है, जो कभी सत्ता के सौदों में बदली थीं।

मैं प्लासी हूँ। मैं केवल मिट्टी का मैदान नहीं, बल्कि वह वेदना हूँ जहाँ से पराधीनता की ठोस शुरुआत हुई। मेरा मौन आज भी प्रश्न करता है यदि विश्वासघात न हुआ होता, तो क्या इतिहास कुछ और होता? यद्यपि आज अपना देश आज़ाद है लेकिन फिर भी जो उस समय हुआ उसकी स्मृतियाँ आज भी शेष है। इतिहास असंख्य उदाहरणों से भरा हुआ है जो हमें हमेशा सीखने का मौका देता है।

''हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में से एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है। हिन्दी का महत्व आज इसलिए और भी बढ़ गया है, क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग और तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।''

डॉ मैकग्रेगर (इंग्लैण्ड)

दक्षिण सागर बुलबुला (1720): जब ऑडिट की अनुपस्थिति ने एक साम्राज्य को हिला दिया

रेनू श्रीवास्तव,
वैयक्तिक सहायक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सन् 1720 का दक्षिण सागर बुलबुला इतिहास की सबसे नाटकीय वित्तीय विफलताओं में से एक माना जाता है। इसे प्रायः सामूहिक सट्टेबाज़ी और अविवेकपूर्ण उत्साह की कहानी के रूप में याद किया जाता है, किंतु यह घटना शासन, पारदर्शिता और ऑडिट की गंभीर विफलता का भी प्रतीक है। यह लेख दक्षिण सागर बुलबुले का अध्ययन आधुनिक ऑडिटिंग और आश्वासन (Assurance) के दृष्टिकोण से करता है और यह तर्क देता है कि स्वतंत्र निगरानी, विश्वसनीय प्रकटीकरण और नैतिक जवाबदेही के अभाव ने एक राज्य-प्रायोजित वित्तीय नवाचार को राष्ट्रीय आपदा में बदल दिया। दक्षिण सागर कंपनी की उत्पत्ति, कार्यप्रणाली, पतन और उसके पश्चात के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए यह लेख लेखापरीक्षकों, नियामकों और नीति-निर्माताओं के लिए स्थायी सबक प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना: वह वित्तीय उन्माद जिसने ब्रिटेन को बदल दिया

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक ब्रिटेन में वित्त और शासन एक-दूसरे से अलग नहीं थे। युद्धों ने राजकोष को खाली कर दिया था, राष्ट्रीय ऋण अत्यधिक बढ़ चुका था और नए वित्तीय उपकरण उन संस्थाओं से तेज़ी से विकसित हो रहे थे जो उन्हें नियंत्रित कर सकती थीं। इसी पृष्ठभूमि में दक्षिण सागर कंपनी का जन्म हुआ—केवल एक व्यापारिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि ब्रिटेन की वित्तीय संकट का एक महान समाधान बनकर।

1720 तक, जो योजना प्रारंभ में ऋण प्रबंधन के उद्देश्य से बनाई गई थी, वह इतिहास के पहले दर्ज सट्टा बुलबुलों में से एक में बदल गई। कुछ ही महीनों में शेयर कीमतें दस गुना से अधिक बढ़ गईं, रातों-रात संपत्तियाँ बनीं और निरंतर समृद्धि में जनता का अटूट विश्वास पैदा हो गया। जब यह बुलबुला फूटा, तो इसने सभी वर्गों के निवेशकों को तबाह कर दिया, राजनीतिक स्थिरता को झकझोर दिया और संसद को भ्रष्टाचार तथा निगरानी की कठोर सच्चाइयों का सामना करने पर मजबूर कर दिया।

जहाँ लोकप्रिय कथाएँ लालच और भोलेपन पर ज़ोर देती हैं, वहीं गहन विश्लेषण यह दर्शाता है कि यह संकट मूलतः ऑडिट और जवाबदेही की प्रणालीगत विफलता था। दक्षिण सागर बुलबुला केवल बाज़ार की विफलता नहीं था; यह एक आश्वासन (Assurance) की विफलता थी।

1720 से पूर्व ब्रिटेन की वित्तीय संरचना

राष्ट्रीय ऋण का बोझ

स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध (1714) के अंत तक ब्रिटेन का राष्ट्रीय ऋण £50 मिलियन से अधिक हो चुका था—जो उस समय के लिए अत्यंत विशाल राशि थी। सरकार दीर्घकालिक वार्षिकी और अल्पकालिक उधार पर अत्यधिक निर्भर थी, जिससे वित्तीय संरचना अत्यंत अस्थिर हो गई थी।

संयुक्त-स्टॉक कंपनियों का उदय

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बैंक ऑफ इंग्लैंड (1694) और ईस्ट इंडिया कंपनी जैसी संयुक्त-स्टॉक कंपनियाँ उभरीं। इन कंपनियों ने कई निवेशकों से पूँजी एकत्र कर जोखिम को तो फैलाया, परंतु जिम्मेदारी को भी अस्पष्ट बना दिया। लेखांकन प्रणालियाँ अपरिपक्व थीं, प्रकटीकरण न्यूनतम था और स्वतंत्र ऑडिट की अवधारणा लगभग अस्तित्वहीन थी।

नियामक और ऑडिट ढाँचे का अभाव

न तो मानकीकृत लेखांकन सिद्धांत थे, न वैधानिक ऑडिट और न ही स्वतंत्र आश्वासन तंत्र। निदेशक अक्सर राजनीतिज्ञ या अभिजात वर्ग के सदस्य होते थे और हितों का टकराव आम बात थी। विश्वास संस्थागत नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और राजनीतिक था।

दक्षिण सागर कंपनी की स्थापना

दोहरे उद्देश्य वाली कंपनी

सन् 1711 में स्थापित दक्षिण सागर कंपनी के दो प्रमुख उद्देश्य थे:

प्रथम ब्रिटेन के राष्ट्रीय ऋण के बड़े हिस्से को समेकित और प्रबंधित करना तथा द्वितीय स्पेनिश दक्षिण अमेरिका के साथ विशेष व्यापारिक अधिकारों के माध्यम से लाभ अर्जित करना।

सरकारी ऋण को अपने ऊपर लेने के बदले, कंपनी को राज्य से ब्याज भुगतान और लाभकारी व्यापारिक एकाधिकार का आश्वासन मिला।

व्यापारिक समृद्धि का भ्रम

वास्तविकता में, स्पेन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण ब्रिटेन की दक्षिण अमेरिकी बाज़ारों तक पहुँच अत्यंत सीमित थी। वास्तविक व्यापारिक आय नगण्य और अस्थिर थी, जो कंपनी के अत्यधिक मूल्यांकन को उचित ठहराने में असमर्थ थी। फिर भी, अस्पष्ट प्रकटीकरण और अतिरंजित अनुमानों ने इन सीमाओं को छिपा दिया।

प्रारंभिक चेतावनी संकेत

सन् 1720 से पहले ही, आंतरिक लोग जानते थे कि व्यापारिक लाभ नगण्य हैं। परंतु सत्य रिपोर्टिंग या स्वतंत्र सत्यापन के लिए कोई बाध्यकारी तंत्र मौजूद नहीं था।

आश्वासन के बिना वित्तीय अभियांत्रिकी

ऋण-से-इक्विटी योजना

सन् 1720 में दक्षिण सागर कंपनी ने लगभग संपूर्ण शेष सरकारी ऋण को अपने ऊपर लेने की महत्वाकांक्षी योजना प्रस्तुत की। ऋणदाताओं को सरकारी प्रतिभूतियों के बदले कंपनी के शेयर दिए जाने थे, जबकि कंपनी को अधिक ब्याज भुगतान और विशेषाधिकार मिलने थे।

रचनात्मक लेखांकन और अस्पष्ट मूल्यांकन: यह योजना भविष्य के व्यापारिक लाभों की अतिरंजित अपेक्षाएँ, ऋण को इक्विटी में बदलने की जटिल प्रक्रियाएँ तथा पारदर्शी मूल्यांकन विधियों के अभाव पर आधारित थी।

ऑडिटेड वित्तीय विवरणों के बिना, निवेशकों के पास कंपनी की वास्तविक वित्तीय स्थिति को समझने का कोई विश्वसनीय आधार नहीं था।

राजनीतिक समर्थन की भूमिका

कई सांसदों और वरिष्ठ अधिकारियों के पास कंपनी के शेयर थे या उन्हें रिश्वत के रूप में आवंटन मिला था। राजनीतिक समर्थन ने वित्तीय विश्वसनीयता का स्थान ले लिया और मौलिक कमजोरियों को छिपा दिया।

1720 की सट्टा उन्माद

शेयर मूल्यों का विस्फोट

दक्षिण सागर कंपनी के शेयर जनवरी 1720 में लगभग £100 से बढ़कर अगस्त तक £1,000 से अधिक हो गए। इस तीव्र वृद्धि के कारण थे यथा, निदेशकों द्वारा आक्रामक प्रचार, आसान ऋण और किस्तों पर शेयर खरीद, झुंड मानसिकता और अवसर चूकने का भय इत्यादि।

बुलबुला कंपनियाँ और बाज़ार उन्माद

इस उछाल ने सैकड़ों सट्टा योजनाओं को जन्म दिया, जिनमें से कई हास्यास्पद थीं। "एक ऐसे उपक्रम के लिए कंपनी, जिसका बड़ा लाभ होगा, पर कोई नहीं जानता कि वह क्या है"—इस प्रस्ताव ने उस समय के उन्माद को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया।

निगरानी की चुप्पी

किसी भी स्तर पर स्वतंत्र लेखापरीक्षकों को यह अधिकार नहीं था कि वे परिसंपत्तियों और देनदारियों का सत्यापन कर सकें, सॉल्वेंसी का मूल्यांकन कर सकें, प्रबंधन के दावों को चुनौती दे सकें। बाज़ार अफ़वाहों, प्रतिष्ठा और राजनीतिक संरक्षण पर आधारित था।

पतन: जब वास्तविकता ने दस्तक दी

विश्वास का ह्रास

1720 की गर्मियों के अंत तक संदेह उभरने लगे। आंतरिक लोगों ने चुपचाप शेयर बेचे, ऋण सख्त हुआ और कीमतें गिरने लगीं।

तीव्र विघटन

जैसे ही विश्वास टूटा, पतन तेज़ी से हुआ। शेयर मूल्यों में भारी गिरावट आई, मार्जिन कॉल बढ़ीं और निवेशक बर्बाद हो गए। बैंकों और सुनारों को भी परोक्ष ऋण संबंधों के कारण संकट का सामना करना पड़ा।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

इस संकट ने अभिजात वर्ग और आम नागरिकों को, विधवाओं, पेंशनभोगियों और पेशेवरों को और वित्तीय संस्थानों और सरकार पर जनता के विश्वास को प्रभावित किया।

संसदीय जाँच और जवाबदेही की तलाश

भ्रष्टाचार का पर्दाफाश

संसदीय जाँच में व्यापक रिश्वतखोरी, आंतरिक व्यापार और हेरफेर उजागर हुआ। मंत्रिमंडल के वरिष्ठ सदस्य भी इसमें लिप्त पाए गए।

प्रणालीगत सुधार के बिना दंड

कुछ निदेशकों पर जुर्माना लगाया गया और संपत्तियाँ जब्त की गईं, परंतु प्रतिक्रिया व्यक्तिगत दोष तक सीमित रही। मूल समस्या-ऑडिट और विनियमन की अनुपस्थिति-अछूती रही।

ऑडिट संस्थानीकरण का खोया अवसर

इतनी बड़ी आपदा के बावजूद, ब्रिटेन ने तुरंत अनिवार्य ऑडिट या मानकीकृत लेखांकन प्रणालियाँ स्थापित नहीं कीं।

वह ऑडिट जो कभी हुआ ही नहीं और

एक ऑडिट क्या उजागर कर सकता था?

एक साधारण स्वतंत्र ऑडिट कथित और वास्तविक व्यापारिक आय के बीच अंतर, तरलता जोखिम और ऋण दायित्व एवं शेयर निर्गम के मूल्यांकन में प्रयुक्त धारणाओं की कमजोरी को उजागर कर सकता था।

प्रबंधन के दावे बनाम सत्यापित साक्ष्य

दक्षिण सागर बुलबुला यह दर्शाता है कि बिना सत्यापन के केवल प्रबंधन के दावों पर भरोसा करना कितना खतरनाक हो सकता है—जो आधुनिक ऑडिटिंग का मूल सिद्धांत है।

स्वतंत्रता: वह स्तंभ जो अनुपस्थित था

यदि उस समय ऑडिटर होते, तो उन्हें राजनीतिक और वित्तीय प्रभावों से स्वतंत्र होना आवश्यक था—और यही 1720 के ब्रिटेन में पूरी तरह अनुपस्थित था।

ब्रिटेन के वित्तीय शासन पर दीर्घकालिक प्रभाव

वित्तीय निगरानी का क्रमिक विकास

तत्काल सुधार सीमित रहे, किंतु इस बुलबुले ने दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ा यथाः सट्टा योजनाओं के प्रति बढ़ा संदेह, कॉर्पोरेट गवर्नेंस मानकों में क्रमिक सुधार तथा उन्नीसवीं शताब्दी में पेशेवर लेखांकन और ऑडिट संस्थाओं का विकास।

बुलबुला अधिनियम और उसकी सीमाएँ

सन् 1720 का बुलबुला अधिनियम अनधिकृत संयुक्त-स्टॉक कंपनियों को सीमित करने के लिए बनाया गया था, परंतु यह समस्या की जड़ पर नहीं गया। इसने उद्यम को रोका, पर पारदर्शिता या आश्वासन को नहीं बढ़ाया।

आधुनिक लेखापरीक्षकों और नियामकों के लिए सबक

पारदर्शिता अपरिहार्य है

बिना प्रकटीकरण के वित्तीय नवाचार विनाश को आमंत्रित करता है। लेखा परीक्षक पारदर्शिता के संरक्षक होते हैं।

स्वतंत्रता सार्वजनिक हित की रक्षा करती है

जब ऑडिटर राजनीति, शुल्क या अत्यधिक निकटता से प्रभावित होते हैं, तो आश्वासन की पूरी व्यवस्था ढह जाती है।

नैतिक शासन तकनीकी दक्षता जितना ही महत्वपूर्ण है

दक्षिण सागर बुलबुला केवल तकनीकी अज्ञानता नहीं, बल्कि नैतिक विफलता का भी परिणाम था।

समकालीन संकटों से प्रासंगिकता

एनरॉन से लेकर 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट तक, वही पैटर्न दोहराए जाते हैं—जटिल साधन, कमजोर निगरानी और गलत भरोसा।

निष्कर्ष: बुलबुले से आधारशिला तक

दक्षिण सागर बुलबुला केवल सट्टा उन्माद की घटना नहीं था; यह पारदर्शिता और स्वतंत्र निगरानी के अभाव में उत्पन्न एक प्रणालीगत विफलता थी। इसने दिखाया कि जब वित्तीय प्रणालियाँ जवाबदेही से अलग हो जाती हैं, तो वे अर्थव्यवस्थाओं और साम्राज्यों को भी कमजोर कर सकती हैं।

लेखापरीक्षकों के लिए यह घटना एक ऐतिहासिक चेतावनी और पेशेवर कर्तव्य है। आश्वासन कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सार्वजनिक विश्वास की आधारशिला है। जब ऑडिट अनुपस्थित, विकृत या उपेक्षित होता है, तो बाज़ार भ्रम का रंगमंच बन जाते हैं—और उसके परिणाम सदियों तक गूँज सकते हैं।

चालीस की उम्र और वे पल जो अब सिर्फ़ दिल में साँस लेते हैं

रूपेश पचौरी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

चालीस; यह उम्र नहीं, एक धीमी, गहरी सिसकी है जो छाती के भीतर कहीं गहरी बैठ गई है। एक ऐसा समय जब बाहर से सब कुछ सामान्य लगता है-कपड़े वही, चेहरा वही दिनचर्या वही पर अंदर से कुछ टूट चुका होता है, और वह टूटन अब रोज थोड़ा-थोड़ा और महसूस होती है।

कभी-कभी शाम को खिड़की के पास खड़ा हो जाता हूँ। बारिश की बूँदे शीशे पर गिरती हैं, और मैं बस देखता रहता हूँ। सोचता हूँ-कितने साल बीत गए। बीस में जो सपने आँखों में जलते थे, वे अब धुँधले हो चुके हैं। कुछ पूरे हुए-नौकरी, घर, परिवार पर वे सपने जो दिल के सबसे करीब थे, वे अधूरे रह गए। या शायद बदल गए इतने कि अब उन्हें देखकर भी पहचान नहीं पाता। तीस की दौड़ में मैंने बहुत कुछ खोया। समय को पकड़ने की कोशिश में रिश्तों को छोड़ दिया। दोस्तों से बातें कम होती गई। माँ का फोन उठाने में देर होने लगी। पिता की छोटी-छोटी शिकायतों को अनसुना कर दिया। और अब चालीस में जब वे याद आते हैं, तो दर्द इतना तेज होता है कि साँस रुक जाती है।

रातें अब सबसे मुश्किल हैं। सपने में माँ आती हैं। वही पुरानी रसोई, वही सफेद बालों में जूड़ा, वही मुस्कान जो कहती थी-बेटा, सब ठीक हो जाएगा।' मैं दौड़ता हूँ उनकी तरफ, हाथ बढ़ाता हूँ-पर छू पाने से पहले सब कुछ गायब हो जाता है। जागता हूँ तो तकिया गीला होता है। और मैं सोचता हूँ-काश आखिरी बार गले लगाकर कह पाता-माँ, मैं तुम्हें बहुत मिस करता हूँ। पर अब सिर्फ खामोशी है।

पिता अब कम बोलते हैं। उनकी आवाज में पहले वाली ताकत नहीं रही। जब वे कहते हैं-बेटा, दवा ले ली?" तो मैं समझ जाता हूँ-अब भूमिका बदल गई है। मैं उनका सहारा बन गया हूँ। पर हर बार जब वे थककर सो जाते हैं, मैं उनके चेहरे को देखता हूँ और सोचता हूँ-यह वही चेहरा है जिसने मुझे कंधे पर बिठाकर पूरा मोहल्ला घुमाया था। अब वही कंधे झुके हुए हैं। और मेरी आँखें नम हो जाती हैं।

शादी के वो शुरुआती दिन... जब पत्नी मेरे साथ हँसती थी, रोती थी, सपने बुनती थी। अब वही औरत मेरे सामने बैठकर चुपचाप मेरी तरफ देखती है। उसकी आँखों में थकान है, चिंता है, पर प्यार अभी भी वैसा ही है। वह पूछती है-'तुम ठीक हो?" और मैं मुस्कुराकर कहता हूँ-हाँ।' पर सच तो यह है कि मैं टूट रहा हूँ, और वह मुझे जोड़े रखने की आखिरी कोशिश कर रही है।

बच्चे अब बड़े हो गए। बेटी कॉलेज जाती है, बेटा अपनी दुनिया में व्यस्त। जब बेटी घर आती है और मेरे गले लगती है, तो एक पल के लिए समय रुक जाता है। वह अभी भी कहती है-पापा सबसे बेस्ट हैं।' पर मैं जानता हूँ-जल्द ही उसकी दुनिया और बड़ी हो जाएगी। मेरी जगह धीरे-धीरे छोटी होती जाएगी। फिर भी उस एक गले लगाने में सारी जिंदगी समा जाती है।
कभी-कभी पुरानी तस्वीरें निकालता हूँ।

एल्बम खोलता हूँ। उसमें माँ-पापा की जवानी, मेरी पहली साइकिल, बेटी का पहला जन्मदिन। हर तस्वीर के साथ एक कहानी; और हर कहानी के साथ एक आँसू। क्योंकि अब समझ आ गया है जो सबसे कीमती था, वह कभी चमकता नहीं था। वह बस था-चुपचाप बिना शोर के, बिना दिखावे के।

चालीस में सबसे बड़ा सबक यही है- समय वापस नहीं आता। इसलिए अब हर "आई लव यू" को थोड़ा ज़्यादा गहराई से कहता हूँ। हर गले लगने को थोड़ा ज़्यादा देर तक थाम लेता हूँ। हर छोटी-सी खुशी को याद करके मुस्कुराता हूँ।
क्योंकि पता है- ये पल भी एक दिन सिर्फ़ याद बन जाएँगे। और तब शायद मैं फिर खिड़की के पास खड़ा होकर बारिश देख रहा होऊँगा। पर तब तक... मैं जी लेना चाहता हूँ। पूरी तरह से। दर्द के साथ। प्यार के साथ। और उन छोटी-छोटी खुशियों के साथ जो अभी बाकी हैं।

चालीस। न सिर्फ़ उम्र। बल्कि एक बहुत गहरा, बहुत व्यक्तिगत सच- कि जीवन कितना नाजुक है और प्यार कितना अनमोल।

मेघालय ट्रिप

तरुण पंकज,
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

कोरोना काल के बाद जब धीरे-धीरे जीवन सामान्य होने लगा तो सबने राहत की साँस ली, लोगों ने घर से निकल परिवार संग कहीं बाहर घूमना शुरू किया। मैंने और मेरी मित्र मण्डली ने भी सोचा क्यों न हम लोग भी कहीं घूमने निकले। इन्टरनेट पर थोड़ी रिसर्च के बाद इस नतीजे पर पहुँचे कि उत्तर भारत के राज्य मेघालय चला जाए। मेघालय अर्थात 'मेघों का घर' जिसे अपनी ख़ूबसूरती के कारण 'स्कॉटलैण्ड ऑफ ईस्ट' भी कहा जाता है। मेघालय पहाड़ियों से घिरा एक बेहद सुंदर एवं शांत राज्य है। इन्टरनेट के माध्यम से टिकट बुक कर ली गई। दिल्ली गुवाहाटी राजधानी ट्रेन से अपना सफ़र तय कर हम गुवाहाटी पहुँचे। गुवाहाटी पहुँचते-पहुँचते शाम के आठ बज चुके थे। अतः हमने उस रात गुवाहाटी में ही रुकने का निर्णय लिया। अगले दिन प्रातः जल्दी उठ कर हमने टैक्सी से अपना सफ़र मेघालय की राजधानी शिलांग के लिए आरंभ किया। रास्ते में एक भोजनालय में रुक कर पहले पेट पूजा की गई। उसके बाद यात्रा पुनः शुरू की। गुवाहाटी से शिलांग की दूरी लगभग 100 किलोमीटर की है तो दो शहरों के बीच जो प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं वो निश्चित तौर पर आपके सफ़र को यादगार बना देते हैं।

इसी मार्ग पर आगे चलकर बहुत ही मनमोहक झील पड़ती है जिसे 'उमियम लेक' तथा स्थानीय लोग 'बड़ा पानी' के नाम से पुकारते हैं। हरे वृक्षों की छटा और छोटी पहाड़ियों के बीच 220 वर्ग किलोमीटर में फैली यह झील। यह झील आपको अपने सौंदय के आकर्षण में बाँध लेती है। इन दृश्यों को अपने कैमरे और आँखों में कैद कर हम आगे बढ़ गए। इसके उपरांत शिलांग में स्थित प्रसिद्ध "एलीफैंट फॉल" जाकर हमने विराम लिया। इसके तल पर एक चट्टान है, जो हाथी की तरह दिखाई देती है। झरने का नाम इसी चट्टान के कारण एलीफैंट फॉल" पड़ गया है।

इसके बाद हम शिलांग 'डॉन बॉस्को' संग्रहालय गये जोकि स्वदेशी संस्कृतियों से जुड़ा एशिया का सबसे बड़ा संग्रहालय माना जाता है। मेघालय की जनजातीय संस्कृति और सांस्कृतिक इतिहास के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। इसके उपरांत हम शहर के बीचों-बीच स्थित 'वार्डस लेक', जो शहर के मध्य एक खूबसूरत बगीचा है, की तरफ गये। 'वार्डस लेक' की आकृति घोड़े की नाल के आकार में है, यहाँ पर हमने बोटिंग का मज़ा लिया।

इसके उपरांत वहाँ के प्रसिद्ध 'गोल्फ कोर्स' मैदान को देखा जोकि काफी बड़े क्षेत्र में फैला एक घास का मैदान है, जहाँ स्थानीय लोग अपने परिवार के साथ पिकनिक मनाने आते हैं। शिलांग शहर का प्रसिद्ध 'कैथीड्रल ऑफ़ मैरी हेल्प ऑफ़ क्रिश्चैनिटी' बहुत ही खूबसूरत चर्च है जिसे वर्ष 1936 में बनाया गया था। कैथीड्रल ऑफ़ मैरी हेल्प ऑफ़ क्रिश्चैनिटी शिलांग के लैतुमखरह में है तथा बस टर्मिनल से 3.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। नीले रंग में रंगा यह चर्च प्रेम, शांति और सुंदरता का अद्भुत संगम है। यहाँ की शान्ति में किसी का भी जाने का मन नहीं करेगा। इसके बाद हम लोग शिलांग के एक मात्र बड़ा बाजार जिसे पुलिस बाजार भी कहते हैं, की ओर गए। मेघालय अपने हस्तशिल्प के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। यहाँ की बाँस और बेंत से बनी वस्तुएँ जैसे बाँस की टोकरिया, स्टूल आदि बहुत पसंद किये जाते हैं। सारा दिन शहर घूमने के बाद हम बहुत थक गए थे तो खाना खाकर सोने चले गए।

अगले दिन हम सब दुनिया की सबसे अधिक वृष्टि वाले क्षेत्र चेरापूँजी जाने के लिए तैयार थे। शिलांग से चेरापूँजी की दूरी लगभग 54 कि.मी. की है। यात्रा के दौरान रास्ते में कई चाय के बागन दिखे जहाँ थोड़ी देर रुक कर हमने फोटो खिंचवाई। चेरापूँजी जिसका स्थानीय और आधिकारिक नाम सोहरा है। पूर्वी खासी पहाडियों में स्थित एक बस्ती है। यह स्थान दुनियाभर में सर्वाधिक बारिश के लिए जाना जाता है। चेरापूँजी में प्रवेश करते ही बादलों ने हमें चारों ओर से घेर लिया मानो कह रहे हों स्वागत है- तुम्हारा बादलो की नगरी में। चेरापूँजी में वहाँ का प्रसिद्ध नोहाकलिकाई वॉटरफॉल जो भारत का सबसे ऊँचा झरना है जिसकी ऊंचाई 340 मीटर है। नोहकलिकाई झरने के बाद हम वहाँ के लोकप्रिय स्थान में से एक मौसमाई गुफा गए। यह पूर्वी खासी पहाड़ियों में गुफाओं की एक लुभावनी भूलभुलैया है। ये गुफाएँ भूमिगत जीवन की एक झलक प्रदान करती हैं। गुफा को देखने के बाद हम 'इको' पार्क गए यह चेरापूँजी शहर से सात किमी की दूरी पर स्थित है। इको पार्क राज्य सरकार द्वारा मेघालय के पठारों में बनाया गया है, यह स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए एक आकर्षण है। यहाँ से बांग्लादेश के सिलहिट

जिले के मैदानों को देखा जा सकता हैं। इसके बाद हम नोहशंगथियांग जलप्रपात जो सात खंडों वाला झरना है की ओर चल पड़े। यह मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में मावसाई गांव से एक किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। नोहशंगथियांग को 'सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल' के नाम से भी जाना जाता है। झरने के बाद हम डबल डेकर रूट ब्रिज ट्रेक की तरफ गये । यह एक साधारण सस्पेंशन ब्रिज है जो पेड़ को आकार देकर जीवित पौधों की जड़ों से बनता है। अगले दिन हम एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव 'मावलिनॉन्ग' देखने गए। चेरापूँजी से लगभग 22 किमी दूर इस गाँव की साफ-सफाई देखते ही बनती है। कहीं पर भी कूड़े का नामो निशान नहीं था। सड़कें विकसित व चमचमाती हुई थीं। जगह-जगह पर बाँस के कूड़ेदान लगे हुए हैं। स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया कि इन कूड़ेदानों से निकलने वाले जैविक कूड़ों का प्रयोग खाद बनाने में किया जाता है। यहाँ रहने वाले ज्यादातर लोग खासी समुदाय के हैं। खासी लोगों की परम्परा के अनुसार 'मावलिनॉन्ग' में सम्पत्ति और धन दौलत माँ अपनी सबसे बड़ी पुत्री को देती है। इसके अलावा यह जानकार भी आश्चर्य हुआ कि इस गाँव की साक्षरता दर 100% है। इस स्वच्छ गाँव की तस्वीरें खींच और कुछ अनोखी जानकारी लेकर हम निकल पड़े 'डेन्थलेन' जलप्रपात देखने। मेघालय के खूबसूरत झरनों में से एक, यह जलप्रपात पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित है। करीब 90 मीटर की ऊंचाई से गिरकर पानी घने जंगल की पहाड़ियों से होकर गुजरता है। स्थानीय लोगों द्वारा झरने के शीर्ष पर मारे गए अजगर के नाम पर झरने का नाम रखा गया है।

इसके बाद हम पूर्वी खासी हिल्स में स्थित लैटलम घाटी की तरफ निकल पड़े। वहाँ पहुँच कर हमें सच में एक स्वर्ग जैसा निवास स्थान प्रतीत हो रहा था। कम ऊँचाई पर उड़ते बादलों, दूर तक फैले हरे-भरे और शानदार दृश्यों के साथ, यह मेघालय के सबसे अद्भुत पर्यटन स्थलों में से एक है। यदि आप प्रकृति के प्रेमी हैं तथा प्रकृति की गोद में खुद को तरोताजा करना पसंद करते हैं, तो यह जगह आपके लिए बिल्कुल सही है। रोमांच चाहने वाले लोग भी इस स्थान पर अपने समय का आनंद लेने आते हैं। इसके बाद हम सभी निकल पड़े 'डॉकी' की तरफ, डॉकी मेघालय के पश्चिम जयन्तिया हिल्स ज़िले में स्थित एक बस्ती है। यह भारत बांग्लादेश सीमा पर स्थित है। डॉकी भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार का एक प्रमुख केंद्र है। यहाँ पर प्रसिद्ध नदी है जिसका नाम उमंगोट है। उमंगोट नदी मेघालय के जयंतिया हिल्स जिले में शिलांग से लगभग 95 किलोमीटर दूर है। उमंगोट नदी का सौंदर्य इसके क्रिस्टल जैसे पानी और आसपास के प्राकृतिक परिदृश्य में निहित है। नदी में हमने नौकायन का अनुभव लिया, पारदर्शी पानी में नाव हवा में तैरती प्रतीत हो रही थी। नदी के पास बने 'लिविंग रूट्स ब्रिजेस' यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं। इसके बाद हमने नदी और ब्रिज पर तस्वीरें खींचकर यहाँ की यादों को कैमरे में कैद किया। कैंपिंग, ट्रेकिंग और फोटोग्राफी के लिए यह स्थान आदर्श है। रात हमने डॉकी में उमगोट नदी के किनारे ही कैम्पिंग करते हुए बिताई। कैम्पिंग का यह अनुभव बहुत यादगार रहा।

सुबह नाश्ता कर हम वापस शिलांग शहर की ओर निकल पड़े। शिलांग पहुँचकर हमने स्थानीय बाजार में समय बिताया, हम सबने थोड़ी बहुत शापिंग की। स्थानीय भोजन का आनंद लिया और कुछ देर गपशप मारने के बाद सो गए। अगली सुबह हम गुवाहाटी के लिए निकल पड़े क्योंकि एक दिन बाद हमारी फ्लाइट वहीं से थी। सारे रास्ते हम मेघालय की खूबसूरती, स्वच्छता के प्रति वहाँ के लोगों की जागरुकता तथा पर्यावरण के प्रति उनके प्रेम का जिक्र करते रहे। गुवाहाटी पहुँचकर हममे कामाख्या मंदिर, जो कि नीलांचल पहाड़ी पर स्थित है तथा हिंदुओं के लिए एक पवित्र तीर्थस्थल है, के दर्शन किये । इसके बाद हम सभी पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य गये जोकि गुवाहाटी से 48 किमी दूर है। यह अभयारण्य एक सींग वाले गैंडों और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के लिए जाना जाता है। यहाँ पर हमने जंगल सफारी का आनंद लिया। इसके उपरान्त हमने गुवाहाटी के लोकल खाने का भी लुत्फ उठाया। यहाँ का भोजन भी यहाँ की संस्कृति की तरह विविध और स्वादिष्ट था। यहाँ हमने 'खार' चखा जो कि एक पारंपरिक असमिया व्यंजन है जिसे कच्चे पपीते और दाल से बनाया जाता है। 'खार' का लुत्फ उठाकर हमने यहाँ की 'पीठा' मिठाई जो कि चावल से बनाई जाती है इसका भी आनंद लिया । इसके बाद हम सभी ने यहाँ की असम चाय का स्वाद लिया और सोने चले गये। सुबह उठकर हम सभी टैक्सी से गुवाहाटी एयरपोर्ट की तरफ निकल गये। दो घण्टे की फ्लाइट के बाद हम नई दिल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर कर, कभी न भूलने वाली अपने उत्तर पूर्व राज्य (मेघालय) की यादों को दिल में लिए और भविष्य में इसी तरह की दूसरी ट्रिप का प्लान करने की वादा करते हुए अपने-अपने घर की ओर चल पड़े।

झोला

दीपक श्रीवास्तव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सन् 1970-80 दशक में फैजाबाद शहर के एक मोहल्ले में एक मध्य वर्गीय कायस्थ परिवार निवास करता था। परिवार में छोटे-बड़े सदस्यों को मिलाकर कुल संख्या 10 थी। परिवार के मुखिया एवं सबसे बुजुर्ग श्री लाल बाबू जी थे जिनकी उम्र 65 साल की थी। परिवार में उनकी पत्नी, तीन बेटे, दो बहुएँ, दो बेटियाँ एवं ढाई वर्ष का सोनू भी साथ में रहते थे। मकान भूतल एवं प्रथम तल में बना था। प्रत्येक तल में चार कमरे, एक किचन, बाथरूम था एवं मकान के बीचों-बीच में सीढ़ी भूतल से प्रथम तल तत्पश्चात प्रथम तल से द्वितीय तल में जाती थी जहाँ पर खुली छत थी। गर्मियों के सामान्य दिनों में घर के पुरुष सदस्य लुंगी बनियान, पैजामा-बनियान, हाफ पैन्ट- बनियान पहनते थे एवं महिला सदस्य फ्रॉक, सलवार-सूट एवं साड़ी पहनती थी।

घर के हर कमरे, किचन, आँगन, इत्यादि सभी जगहों पर रोजाना इस्तेमाल होने वाली सभी वस्तुएँ/ सामग्रियाँ व्यवस्थित रूप से रखी रहती थीं। उस समय हर घर में लालटेन, ढिबरी, टॉर्च, मोमबत्ती, सिलबट्टा, साइकिल, कूड़ेदान का डिब्बा, छड़ी, बेंत एवं लट्ठ रहते थे। आँगन के एक कोने में जमीन से लगभग छह फीट ऊपर एक झोला (काले या नीले रंग का) टंगा रहता था। कमोवेश इसी जगह पर छाता भी टंगा रहता था। यह झोला सामान्य झोला नहीं होता था, यह एक विशेष झोला होता था जिसका इस्तेमाल घर में गोश्त (बकरे का या मछली) लाने में किया जाता था। अमूमन सुबह के समय बकरे का एवं शाम के समय मछली का गोश्त लाने में किया जाता था। घर के सभी सदस्य मांसाहार भोजन का सेवन करते थे। घर के सबसे वरिष्ठ सदस्य लाल बाबू जी मांसाहार भोजन के शौकीन थे एवं उन्हीं के द्वारा गोश्त घर में लाया जाता था।

घर का प्रत्येक सदस्य सुबह उठने पर एवं शाम को जब निर्धारित जगह पर झोले को जब नहीं देखते थे तो प्रसन्न हो जाते थे एवं घर में खुशी की लहर दौड़ जाती थी कि आज तो घर में विशेष भोजन (मांसाहार) बनेगा एवं खाने को मिलेगा। उन दिनों फ़ैजाबाद शहर में शाम को बकरे का गोश्त नहीं मिलता था फैजाबाद शहर के 10-15 किलोमीटर दूर विभिन्न दिशाओं में (हर दिन अलग जगह पर) गाँव की बाजार लगती थी जहाँ पर बकरे का गोश्त मिलता था। घर में प्रतिदिन दोपहर का भोजन दो से तीन बजे के बीच एवं रात्रि का भोजन 10-11 बजे के बीच किया जाता था एवं भोजन बनने की प्रक्रिया भोजन खाने से दो घंटे पहले से शुरू की जाती थी। उन दिनों बिजली (लाइट) का आना-जाना सामान्य बात मानी जाती थी।

अप्रैल माह के एक दिन लाल-बाबू जी हमेशा की तरह सायं 4.00 बजे साईकिल से घर के समीप गाँव की बाजार से गोश्त लाने के लिए गये एवं 6 बजे गोश्त लेकर घर पर वापस आ गये और प्रथम तल पर किचन के दरवाजे के बीचों बीच लगे बेलन (दरवाजे के दोनों पल्लों को बंद करने के लिये उपयोग में लाये जाना वाला उपकरण) पर लटका दिए, इस समय घर के सदस्य अपने-अपने कमरों में थे। इसी समय ढाई वर्ष का सोनू झोले को दरवाजे के बेलन से निकाल कर पूरे घर में उत्सुकता वश चहल कदमी करने लगा कभी भूतल पर जाता कभी प्रथम तल पर एवं आवाज भी लगा रहा था "गोश्त ले लो बकरे का गोश्त ले लो" घर के लगभग सभी स्थानों पर घूमने के पश्चात् सोनू ने किस समय तक यह प्रकिया करते हुए अपना बचपना दिखाते हुए झोले को कहाँ रख दिया उसको याद ही नहीं रहा और सोनू द्वारा झोले को कहाँ रखा गया यह घर का कोई सदस्य देख भी नहीं पाया।

आम दिनों की तरह उस दिन भी रात्रि में 9 बजे भोजन बनने की प्रक्रिया शुरू हुई, सिलबट्टे पर मसाला पीसा जाने लगा इसी समय गोश्त को धुलने की प्रक्रिया की जाती थी सो गोश्त के लिये झोले को याद किया गया, रसोई के दरवाजे के बेलन पर झोले को नहीं पाये जाने पर लाल-बाबू जी से पूछा गया, लाल-बाबू जी द्वारा बताया गया की उन्होंने झोले को किचन के दरवाजे में लगे बेलन में लटका दिया था। पुनः झोले को दरवाजे में लगे बेलन में देखा गया लेकिन झोला वहाँ पर नहीं था, घर के सभी सदस्यों के मन में एक ही प्रश्न घूम रहा था कि झोला गया तो कहाँ गया, समय भी बीत रहा था एवं भोजन बनने की प्रक्रिया भी शुरू भी नहीं हो पा रही थी। बड़ी असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गयी तभी घर के एक सदस्य ने कहा कि घर में अंतिम बार झोले को सोनू के हाथ में देखा गया था जब वह झोले को लेकर घर में चहलकदमी कर रह था। सभी सदस्यों ने सोनू को पकड़ा और उससे झोले के विषय में खोज-बीन शुरू की, सोनू झोले के बारे में कुछ भी बता नहीं पा रहा था। वह भूल गया था कि उसने झोला कहाँ रखा। अब

घर के सभी सदस्यों ने सोनू से कहा कि तुम जहाँ-जहाँ गये थे, वहाँ-वहाँ हम लोगों को लेकर चलो तो हम लोग झोले को ढूँढ़ लेंगे। ठीक इसी समय घर में लाइट (बिजली) चली गयी।

अब घर में ढाई वर्ष के सोनू की अगुवाई में एक सर्च अभियान शुरू होने वाला था। घर के सभी सदस्य अपने घरेलू लिबास में थे एवं किसी के हाथ में लालटेन, ढिबरी, टार्च, मोमबत्ती, किसी के हाथ में बेंत, लट्ठ एवं छड़ी थी अब घर में आगे-आगे सोनू चल रहा था पीछे-पीछे घर के सभी सदस्य चल रहे थे। सोनू जहाँ-जहाँ जाता पीछे-पीछे घर के सदस्य झोले को ढूँढ़ने में अपना भरसक प्रयास कर रहे थे। घर के कमरों में सोफे, तख्त, मेज, कुर्सियों के नीचे, किचन के प्रत्येक कोनों पर, छड़ी, बेंत की सहायता से कूड़ेदान को पलटना एवं कूड़े में छड़ी की सहायता से कूड़े को अलग करना। सोनू के साथ घर के सभी सदस्य घर के सभी स्थानों-भूतल, प्रथम तल, बाउंड्रीवॉल के किनारे लगे गमलों, घर की छत झोले को ढूँढ़ने के लिए गए लेकिन उनके सभी प्रयास विफल हो गये। घर के सभी सदस्य मायूस, बेबस, हताश हो गये एवं सोनू की ओर देखने लगे, सोनू कुछ बोल तो नहीं रहा था लेकिन समझ रहा था कि घर में उसके कारण कुछ तो गड़बड़ हो गयी है। घर के सभी सदस्यों द्वारा झोले को ढूँढ़ने के लिये सभी प्रयत्न किये जा चुके थे लेकिन झोला नहीं मिल सका। यह सब कवायद होते-होते रात्रि के 11 बज चुके थे। घर में विशेष भोजन (मांसाहार) बनने की उम्मीद खत्म हो चुकी थी एवं साधारण भोजन (सब्जी) बनाने के लिये भी सामग्री उपलब्ध नहीं थी, तत्पश्चात घर के सदस्यों ने रुखा-सूखा खाकर अपनी किस्मत को कोसते हुए एवं यह सोचते हुए कि आखिर झोला गया तो कहाँ गया रात बितायी।

अगले दिन की सुबह सभी सदस्य दैनिक क्रियाकलापों से निवृत्ति होने के पश्चात आँगन में इकठ्ठे होकर आम दिन की तरह चाय पी रहे थे। सभी सदस्य पिछली रात के झोले को न पाने के कारण उदास एवं खामोश थे लेकिन उनकी नजरें इस समय भी घर में तलाश रही थी कि झोला कहीं नजर आ जाये, सुबह के समय घर में सूर्य देवता का पर्याप्त प्रकाश भी आ चुका था। घर के सभी सदस्य तीन-तीन सदस्यों के तीन दलों में बँट गये। एक दल भूतल पर, दूसरा दल प्रथम तल पर एवं तीसरा दल छत पर गये। घर के छत पर टहल रहे दल ने घर के पड़ोस के अहाते में झोले के रंग का कपड़ा देखा, तत्पश्चात छत पर मौजूद दल ने प्रथम तल एवं भूतल पर मौजूद दलों को लेते हुए अहाते में पहुँचे, घर के प्रत्येक सदस्य वहाँ पहुँच कर स्तब्ध रह गये कि झोला अब कपड़ों के टुकड़ों में बँट चुका था, सभी सदस्यों ने अहाते के चारों तरफ नजर दौड़ायी लेकिन कहीं भी झोले में रखे गोश्त का नामोनिशान नजर नहीं आया एवं अब गोश्त के प्राप्त होने की उम्मीद भी खत्म हो गयी। घर के सभी सदस्यों को यकीन हो गया कि सोनू ने जिस स्थान पर झोले को रखा था, वहाँ से कोई छोटा जानवर, जो कि बिल्ली थी, उस झोले को लेकर अहाते में आयी और अपने रात्रि भोजन को 'विशेष' बना दिया।

सफ़रनामा

अरविन्द कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

बात कुछ समय पुरानी है। मन में अचानक विचार आया "अबकी बार घर चलना ही है, वरना मम्मी बोलेगी कि बेटा सरकारी नौकरी की तैयारी क्या कर रहा है, घर आने की तैयारी भी भूल गया।" तो मैंने ठान लिया देवरिया जाना ही है। ट्रेन खोजी, और हाज़िर थी "वैशाली एक्सप्रेस, जो नाम से तो सम्राट अशोक के युग की लगती है, पर चलती है, भारतीय रेल की गति से धीरे-धीरे, सोच-समझकर।

मैंने थर्ड ए.सी. का टिकट बुक किया, ताकि नींद और ठंड दोनों की सुरक्षा बनी रहे। रात के 11.00 बजे ट्रेन थी और मैं पूरे जोश के साथ स्टेशन पहुँचा। पीठ पर बैग, हाथ में मोबाइल, चेहरे पर "अब तो निकल ही पड़े वाली मुस्कान। ट्रेन चली तो लगा जीवन भी चल पड़ा है।

बगल के यात्री सब गंभीर थे, चेहरों पर संघर्ष की चमक थी। कोई बोले 'कल परीक्षा है सर, कोई बोले "भविष्य बदलने जा रहे हैं।" मुझे लगा, भारत में हर ट्रेन में कम से कम एक आई.ए.एस., तीन पी.सी.एस. और दो मोटिवेशनल स्पीकर ज़रूर सवार रहते हैं। मैंने भी मोबाइल निकाला, reels स्क्रॉल की "Success doesn't come overnight.", "मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे", जैसी बातें देखीं और सोचा, चलो अब नींद को बुला लेते हैं। सुबह 7:30 का अलार्म सेट किया और मन ही मन संतोष से बोला-"सुबह तक देवरिया, और सुबह मम्मी की चाय।" फिर न जाने कब आँख लगी, और कब नींद ने कहा-Tata, Bye-Bye" "ट्रिन ट्रिन" की तेज आवाज, सुबह अलार्म ने जगाया ।

तेज़ रोशनी, परदों से छनकर चेहरे पर पड़ रही थी। मैंने बगल वाले भाई साहब से पूछा, "भाईसाहब, गोरखपुर आ गया क्या?" गोरखपुर स्टेशन देवरिया स्टेशन से पहले आता है। वो मुस्कुराए नहीं, बस गम्भीरता से बोले-'लगता है लखनऊ में ही हैं।" मैंने सोचा, ये कोई नया मज़ाक है या रेलवे अनुमोदित sarcasm, फिर मोबाइल खोला- "Train Enquiry App और वहाँ चमक रहा था "मल्हौर स्टेशन (लखनऊ शहर के अंदर एक दूसरा स्टेशन)." मतलब, रात भर जिस ट्रेन में, मैं "देवरिया की ओर प्रस्थान कर रहा था, वो लखनऊ सिटी टूर करा रही थी! मैं गुस्से में उतरा, बेडिंग सँभाली, आत्म-सम्मान समेटा, और टी.डी.आर. फ़ाइल करने बैठ गया। लेकिन रेलवे ने भी भारतीय दर्शन का मूल आधार यानी" धैर्य अच्छे से सिखा दिया ! खैर टी.डी.आर. आज तक प्रोसेसिंग में है।

अनपढ़ कौन?

पंकज मोहन जायसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

“क्यों बे, तुझको एक बार में समझ में नहीं आता, क्या बोला था तुझको मैंने?, चल चुपचाप बर्तन धुल"- गोरा चिट्टा तक़रीबन 15 साल का एक लड़का जोकि अपनी कद काठी की वजह से 18 साल से कम का नहीं लग रहा था, एक दूसरे असहाय, कमजोर से बच्चे को जो लगभग 12 साल का रहा होगा, को गरियाते हुये घूँसे भी मार रहा था। यह दृश्य देखकर अचानक खाते - खाते मैं रुक गया और एकटक उसे देखने लगा। सबसे ज्यादा आश्चर्य मुझे तब हुआ जब इतनी गाली और मार के बाद भी उसकी आँखों में एक भी आँसू नहीं था।

मैंने अक्सर अपने घर, रिश्तेदारों और दोस्तों के यहाँ कई बच्चों को देखा है जो मार तो दूर थोड़ी सी डाँट खाने पर ही भावुक होकर रोने लगते हैं। खैर मुझे अगले ही पल समझ में आ गया कि उसके आँख में आंसू क्यों नहीं थे? कोई जो उसे पुचकारने वाला नहीं था, कोई उसे दुलारने वाला नहीं था, उसे मालूम था, वो रोयेगा भी तो अपने आँसू उसे खुद पोछने होंगे।

खैर वो 15 साल का लड़का जो अपने गुस्से से ये साबित कर रहा था कि वो मालिक का बेटा है, का गुस्सा शांत होने पर वो अनपढ़, असभ्य और गरीब बच्चा हम जैसे पढ़े लिखे और सभ्य लोगों के जूठे बर्तन धुलने लग गया। खैर एक बात जो बहुत देर तक मेरे मन मस्तिष्क में चलती रही – हम में और उसमें कौन सच में अनपढ़ है? कौन सच में असभ्य है?

“भाषा का बल जनता में समायी उसकी जड़ है, हिन्दी में राष्ट्रभाषा का आसन सुशोभित करने की सारी क्षमता विद्यमान है, उसे केवल विकसित करने की आवश्यकता है।”

रविशंकर शुक्ल

“यात्रा वृत्तांत”

जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

जीवन संगिनी के साथ मेरी गिर फॉरेस्ट, द्वारिका, सोमनाथ एवं दीव की यादगार यात्रा-

मुझे और मेरी धर्मपत्नी को वैवाहिक बन्धन में बँधे लगभग छह वर्ष से अधिक हो गये थे। जीवन की भाग-दौड़ और रोज़मर्रा की चिंताओं से दूर फिर एक बार मैंने मेरी पत्नी ने गिर फॉरेस्ट, द्वारिका, सोमनाथ एवं दीव की यात्रा पर जाने का निर्णय लिया। यह सच है कि जीवन में कुछ यात्राएँ सिर्फ स्थान बदलने के लिए नहीं होतीं बल्कि वे हमारे भीतर बसे भावों, रिश्तों और अनुभूतियों को नया आकार देने के लिए होती हैं। साथ और एहसास को और गहरा करने के लिए होती हैं।

हमारी यात्रा की शुरुआत लखनऊ से गुजरात तक ट्रेन मार्ग द्वारा पहुँचकर रात को गिर के जंगल में एक रिसॉर्ट में ठहरने से शुरू हुई। रात में रिसोर्ट में चारों तरफ से सांय- सांय की आवाज ने बिल्कुल एहसास दिला दिया कि हम लोग वास्तव में प्रकृति की गोद में विश्राम कर रहे हैं। उस सुनसान जंगल में रिसॉर्ट का माहौल बिल्कुल अलग था, कई जगह अलाव जल रहे थे, रात की ठंडक अपनी चरम सीमा पर थी। कुछ देर आराम करने के बाद रिसॉर्ट प्रबंधन द्वारा रात्रि में भोजन परोसा गया। लजीज व्यंजनों के साथ हमने भोजन का आनंद लिया, भोजन के साथ सबसे अच्छी चीज जो लगी वो थी आमरस, भोजन के साथ आमरस ने स्वाद को कई गुना बढ़ा दिया था।

पहला पड़ाव : अगले दिन की सुबह फिर शेरों की धरती पर रोमांच का आनन्द लेना था। जैसा सुना था वैसा ही पाया, गुजरात के दिल में बसे गिर नेशनल पार्क की सुबह ही कुछ अलग होती है। जंगल की मिट्टी की सोंधी-सोंधी सी महक, हवा में ताज़गी और दूर-दूर तक पसरा हुआ सन्नाटा, ऐसा एहसास हुआ कि जैसे प्रकृति ने हमें खुद ही अपनी गोद में ले लिया हो। हम दोनों ने वहाँ की यात्रा जीप सफारी शुरू की तो हमारी उत्सुकता चरम पर थी। रास्ते में मयूर और कई प्रकार के दुर्लभ पक्षियों को देखकर मन एकाएक प्रफुल्लित हो गया, दो बार जीप वहाँ से गुजरी जहाँ बिल्कुल सामने से एशियाई शेरों का जोड़ा दिखाई दिया, और आगे शेरों के झुंड भी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शेरों की स्थिर चाल, गहरी आँखें और राजाओं-सी शान देखकर कुछ पलों के लिए हम समय को ही भूल गए।

दूसरा पड़ाव: इसके बाद हमारा दूसरा पड़ाव था- समुद्र की आवाज़ के बीच भक्ति का स्पंदन होना। गिर की हरियाली को पीछे छोड़कर हम भगवान श्री कृष्ण की पौराणिक नगरी द्वारिका पहुँचे। हमने जैसे ही द्वारकाधीश मंदिर का शिखर देखा एक सुखद और शान्ति पूर्ण एहसास ने दिल में स्थान बना लिया। मंदिर में आरती का दृश्य अद्भुत और अविस्मरणीय था, शंखनाद, और पवित्र मंत्रों की गूँज के साथ खड़े होकर ऐसा लगा जैसे आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया हो। शाम को हम दोनों कुछ देर तक समुद्र तट पर बैठे। लहरें आतीं थीं, पाँवों को छूकर लौट जाती थीं, ऐसा लग रहा था लहलहाता समुद्र अपनी पुरानी कहानियाँ सुना रहा हो। द्वारिका का भ्रमण करने के उपरांत हमें महसूस हुआ कि कभी-कभी जीवन की सबसे सुंदर बातें शब्दों में नहीं, शांति में छुपी होती हैं।

तीसरा पड़ाव: हमारा तीसरा पड़ाव था सोमनाथ जिसके इतिहास, आस्था और दृढ़ता की मिट्टी ने मन में एक अलग ही गरिमा का भाव जगा दिया। समुद्र के किनारे पर खड़ा वह विशाल मंदिर सिर्फ पूजा स्थल ही नहीं, बल्कि अपनी अटूट दृढ़ता का प्रमाण है। इतिहास गवाह है कि इसे कई बार तोड़ा गया, लेकिन हर बार यह और भव्य होकर उठ कर खड़ा हुआ। मुझे यह कहते हुए कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि इतना भव्य मंदिर, इतना शांति पूर्ण स्थान मैंने पहले कहीं नहीं देखा। शाम को मंदिर की संध्या आरती में भाग लेना एक दिव्य अनुभव था। लहरों की गर्जना और मंत्रोच्चारण ने मिलकर एक ऐसा वातावरण बना दिया था जिससे मन में एक अद्भुत ऊर्जा भर गयी थी। पूजा के बाद हमने लाइट एंड साउंड शो को देखा जिसने हमारे अनुभव को और जीवंत बना दिया। वहाँ की कहानियाँ सुनकर मन भावुक हो गया और आँखे नम हो गई। सच में सोमनाथ हमें सिखाता है कि - गिरना, टूटना और फिर से उठना ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म है।

चौथा और अंतिम पड़ाव दीव: दीव हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव था, जिसे मैं अगर समुद्र की गोद मे छुपा हुआ एक स्वर्ग कहूँ तो भी कम है। दीव एक ऐसा छोटा-सा द्वीप है जो अपनी शांति और सुंदरता के लिए मशहूर है। दीव के तटों पर दूर-दूर तक फैली सफेद रेत, साफ नीला पानी और शांत वातावरण ने मन को मोह लिया। हमने दीव में किले की ऊँची प्राचीरों का भ्रमण किया और ऊँची प्राचीरों से समुद्र का नज़ारा देखा। एक तरफ इतिहास की लाल पत्थर पर बनी परछाइयाँ और दूसरी तरफ अनंत तक फैला शांत समुद्र बहुत ही अच्छा लगा। शाम को समुद्र किनारे लंबी सैर जीवन संगिनी के साथ बिताए सबसे सुंदर पलों में से एक रही। एक पल को ऐसा लगा जैसे समुद्र की लहरें अपने साथ हमारी सारी थकान बहा ले गई हों। सच में दीव का सफर बहुत ही सुकून भरा था।

गिर की जंगली महक ने, द्वारिका की पवित्रता ने, सोमनाथ की शक्ति ने और दीव की शांति ने मिलकर हमारी इस यात्रा को सिर्फ यादगार ही नहीं बनाया बल्कि हमारे जीवन का एक अनमोल और जीवंत सा अध्याय बना दिया। इसमें सबसे खूबसूरत बात यह रही कि मैंने यह पूरी यात्रा अपनी जीवन संगिनी के साथ की, इस यात्रा ने हमें न सिर्फ जगहें ही दिखाई, बल्कि हमारे रिश्ते को भी नई गहराई दी और साथ गुजरें पलों को यादगार बना दिया।

''माँ भारती के भाल का श्रृंगार है हिंदी,
हिंदोस्तां के बाग की बहार है हिंदी।
घुट्टी के साथ घोल के माँ ने पिलाई थी,
स्वर फूट पड़ रहा, वही मल्हार है हिंदी।
तुलसी, कबीर, सूर औ' रसखान के लिए,
ब्रह्मा के कमण्डल से बही धार है हिंदी।
सिद्धांतों की बात से न होगा भला,
जो अपनाएंगे न रोज के व्यवहार में हिंदी।''

डॉ. जगदीश व्योम

साहित्य, संस्कृति और समाज: पुनर्परिभाषित होता अन्तर्संबंध

आदित्य तिवारी
लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

साहित्य, संस्कृति एवं समाज तीनों ही का आपस में अत्यंत गहरा सम्बंध है और यह सम्बंध समय के साथ परिवर्तनशील है। इनका आपस में वही सम्बंध समझा जा सकता है जो शरीर, प्राण एवं आत्मा' का है। समाज मानव जीवन की वास्तविक संरचना है, संस्कृति उस समाज की जीवन-पद्धति, नैतिक मूल्यों एवं परम्पराओं का समुच्चय है, जबकि साहित्य इन दोनों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। विभिन्न कालखण्डों में विभिन्न परिस्थितियों में समाज के स्वरूप और उसकी संरचना में परिवर्तन होता रहा है तथा इसी परिवर्तन के सापेक्ष संस्कृति में भी विभिन्न मूल्यों एवं आयामों का जन्म हुआ। बदलते समाज एवं सांस्कृतिक परिदृश्यों में साहित्य की भूमिका समाज एवं मानव कल्याण की रही है।

प्राचीन काल में जब मानव समाज कृषि की ओर उद्यत हुआ तब समाज में ठहराव एवं स्थायित्व की स्थिति उत्पन्न हुई तथा समाज समूहों एवं परिवारों में व्यवस्थित हुआ। जीवन में कर्तव्य, नैतिक अनुशासन, आज्ञापालन तथा प्रेम जैसे मूल्यों का विकास हुआ। इस सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप धर्म प्रधान एवं कर्तव्यप्रधान संस्कृति का विकास हुआ। इस संस्कृति के कारण इस काल में ऐसे साहित्य का सृजन हुआ जिसमें धर्म, नैतिक मूल्य, आदर्श, मर्यादा आदि केंद्र में रहे। साहित्य ने समाज के लिए मूल्यों की महत्ता पर जोर दिया तथा राजधर्म, पुत्रधर्म जैसी परिकल्पनाओं को विकसित किया। इस काल में वेद, पुराण तथा महाकाव्यात्मक साहित्य (रामायण, महाभारत) जैसी रचनाएँ लिखी गई।

समय के साथ सामाजिक स्वरूप बदला, मध्य काल युद्धों, बाह्य आक्रमणों, पाखण्डों, जाति एवं धर्म की कट्टरता में जकड़ा था। ऐसी स्थिति में पुरुष प्रधान, कर्मकाण्ड आधारित, रूढ़िवादी एवं विभाजनकारी संस्कृति पनपी। यही संस्कृति आगे चलकर भक्ति आंदोलन एवं सूफी आंदोलन की पृष्ठभूमि बनी। कबीरदास, मीराबाई, तुलसीदास, सूरदास ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं एवं आडम्बरयुक्त संरचनाओं को अपनी रचनाओं से खण्डित किया तथा समाज को एक नई राह दिखायी। इस काल के साहित्य में प्रेम, मानवता, करुणा जैसे मूल्यों पर बल दिया गया। इस साहित्य ने समाज में समता, समानता एवं समरसता स्थापित करने का प्रयत्न किया। यह साहित्य मात्र भावात्मक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि समाज में परिवर्तन लाने का साधन सिद्ध हुआ। इस काल में साहित्य सरल भाषा में रचा गया जिससे यह सर्वसामान्य में भी पहुँचाया गया तथा लोगों में नई सामूहिक चेतना, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के प्रति रुझान विकसित हुआ। साहित्यकारों द्वारा राम के मूल्यों, कृष्ण के प्रेम, एवं निर्गुण तथा सगुण धारा के साहित्य का प्रतिपादन किया गया। तुलसी द्वारा रचित रामचरितमानस में जिस कल्याणकारी राज्य (रामराज्य) एवं लोकमंगल की भावना को व्यक्त किया गया वह आज भी प्रासंगिक है तथा चिर काल तक प्रासंगिक रहेगी।

इन सभी प्रयासों के बाद भी विकृतियाँ व्याप्त होती गईं जो समय के साथ और कुण्ठित होती गईं। जब संपूर्ण विश्व में व्यापार, अन्य देशों से संबंधों का दौर शुरू हुआ तब समाज में कई तत्वों का समावेश हुआ तथा संस्कृति भी परिवर्तित हुई। भारत में पुनर्जागरण विश्व की अपेक्षा बाद में हुआ। इस काल में समाज जातीय अधिकारों, सामाजिक वरीयता, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद आदि जैसी गंभीर परिस्थितियों से जूझ रहा था। स्त्रियों की स्थिति भी बहुत संतोषजनक नहीं थी। तब संस्कृति भी पितृ सत्तात्मक एवं वर्ग आधारित रूप में उपजी। इस समय राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने अपनी पत्रिकाओं, अखबारों आदि के माध्यम से अधिकारों एवं समाज सुधार का विचार प्रस्तुत किया।

औपनिवेशिक काल में परतंत्रता, गरीबी, दुर्भिक्ष तथा दमनकारी सामाजिक व्यवस्था का प्रचलन था। सामाजिक असंतोष अपने चरम पर था, उस समय साहित्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वाधीनता, सुशासन एवं स्वराज जैसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। इस काल में स्वतंत्रता सेनानियों - भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, अरविंदो घोष, लाला लाजपत राय आदि ने अपनी रचनाओं एवं भाषणों के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति लड़कर एवं आवाज उठाकर उन्हें प्राप्त करने पर जोर दिया वहीं दूसरी ओर सत्येंद्र नाथ टैगोर, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी जैसे विचारकों ने संवैधानिक तरीकों को आजादी प्राप्त करने का साधन बनाया। इस प्रकार इस काल की संस्कृति लचीली तथा समावेशी रही, जिसमें व्यक्ति को अपने विचारों को दृढ़तापूर्वक रखने की स्वतन्त्रता थी।

समकालीन परिदृश्य में जब दुनिया तेजी से वैश्वीकरण तथा राष्ट्र शहरीकरण की ओर बढ़ रही हैं तब समाज में संस्कृति एवं संस्कृति का अन्तर्संबंध भी तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान समय में समाज से लोकतान्त्रिक व्यवस्था, शिक्षा का विकास, व्यक्तिवाद जैसी चर्चाएँ केंद्र में हैं। वर्तमान संस्कृति में समानता, अधिकारों, व्यक्तिगत पहचान, लैंगिक समानता, संवैधानिक नैतिकता एवं सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों का समावेशन हुआ है।

अब इस समय साहित्य की महत्ता और बढ़ जाती है जिससे बदलते समाज एवं संस्कृति में समन्वय बना रहे। समय के साथ साहित्य का स्वरुप भी बदला है। डिजिटल माध्यमों तथा सोशल मीडिया पर ब्लॉग, लेख आदि के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को अपनी बात रखने का मौका प्राप्त हुआ है। समाज जीवन को नई स्थितियाँ प्रदान करता है, संस्कृति इन स्थितियों के अनुरूप ही अपने मूल्यों को गढ़ती है और साहित्य इन मूल्यों को अभिव्यक्त, विश्लेषित एवं आवश्यकतानुसार परिवर्तित करता है।

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि संस्कृति साहित्य एवं समाज इन तीनों की ही अन्विति मानव सभ्यता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3 (3) के अनुसार निम्नलिखित दस्तावेजों को हिन्दी-अंग्रेजी में एक साथ जारी करना आवश्यक हैः

1. **सामान्य आदेश** (General Orders)
2. **संकल्प** (Resolution)
3. **परिपत्र** (Circulars)
4. **नियम** (Rules)
5. **अधिसूचना** (Notifications)
6. **प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन** (Administrative and other reports)
7. **प्रेस विज्ञप्ति** (Press Communiques)
8. **संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखए गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र** (Administrative and other reports and official papers laid before a House or the Houses of Parliament)
9. **संविदाएं** (Contacts)
10. **करार** (Agreements)
11. **अनुज्ञप्तियाँ** (Licences)
12. **अनुज्ञा पत्र** (Permits)
13. **सूचना** (Notices)
14. **निविदा प्रारूप** (Tender Forms)

मेरे कार्यालयीन अनुभव

शिव शंकर सोनकर,
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के पूर्व एवं केन्द्रीय क्षेत्र में अवस्थित प्रयागराज, जिसे प्रयाग, तीर्थराज प्रयाग या इलाहाबाद के नाम से भी जाना जाता है, आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण व पवित्र स्थल है। यह जनपद गंगा, यमुना एवं गुप्त सरस्वती नदियों के संगम पर बसा हुआ है। संगम स्थल को त्रिवेणी कहा जाता है। इस पवित्र भूमि पर प्रत्येक छह वर्ष पर कुंभ मेला तथा प्रत्येक बारह वर्ष पर महाकुंभ मेले का भव्य आयोजन होता है जो कि ईश्वर के प्रति महान आस्था का सैलाब दर्शाता है। इसी पावन भूमि में मेरा जन्म हुआ है और मैं यहीं का निवासी हूँ।

बचपन से ही हमारे परिवार की आर्थिक दशा अत्यंत खराब थी। कम आय में सभी पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करना बहुत कठिन प्रतीत होता था, परंतु अगर जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया है और मुश्किलों से सामना करने की हिम्मत है, तो दुरूह मार्ग भी आसान लगने लग जाता है। जीवन के सभी संघर्षों से निरंतर जूझते हुए हमने कभी हिम्मत नहीं हारी और हर मुश्किल का पूरे साहस से सामना करके उससे पार पाया।

जीवन के इसी उतार-चढ़ाव और सतत संघर्ष के उपरांत अचानक भाग्य ने एक नई करवट ली और किसी तरह मेरा चयन वर्ष 1991 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), उत्तर प्रदेश, लखनऊ में दैनिक वेतन भोगी के रूप में हो गया । यह जीवन की सबसे बड़ी सफलता सिद्ध हुई, क्योंकि इस नौकरी ने जीवन के सपनों को पूरा करने की दिशा में पहला कदम रखा।

लगातार पूरी निष्ठा एवं लग्न से कार्यालय की मैंने 22 साल तक सेवा की और निरंतर सेवा का प्रतिफल भी मुझे मिला। फलस्वरूप दिनांक 16.12.2013 को मैं एम. टी. एस. के पद पर स्थायी रूप से नियुक्त हो गया। इसके लिए मैं इस कार्यालय का सदैव आभारी रहूँगा कि इसने मुझे मेरी सेवा का उचित फल दे दिया। प्रयागराज कार्यालय में रहते हुए मैंने बहुत से अनुभव प्राप्त किये। सदैव अनुशासन का पालन करना, समय पर कार्यालय आना तथा अपनी ड्यूटी को पूरी तत्परता से करने की ललक मेरी जीवन की सीख बन गयी थी। प्रयागराज कार्यालय में मैंने वरिष्ठ उप महालेखाकार प्रकोष्ठ में कार्य किया। इसके अलावा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सामान्य प्रशासन), सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन) तथा अन्य सभी कार्मिकों के साथ भी लगातार कार्य किया और उनके साथ सौहार्दपूर्ण समय व्यतीत किया और उन सभी के साथ काम करके मुझे गहन अनुभव प्राप्त हुए जोकि जीवन भर मेरे साथ रहेंगे और ये अनुभव मेरी अमूल्य पूँजी स्वरूप हैं।

तदुपरांत, वर्ष 2016 में मेरा स्थानांतरण प्रयागराज से लखनऊ कार्यालय में हो गया। यहाँ काम करते हुए मुझे काफी चीजें सीखने को मिलीं। मेरी तैनाती प्रधान महालेखाकार सचिवालय में की गयी; जहाँ मैंने पूरी ईमानदारी के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन किया। अधिक काम होने की स्थिति में धैर्य रखकर कैसे काम निपटाना है? यह सब इस अनुभाग ने मुझे बखूबी सिखाया। मैंने शासकीय कार्यों में सदैव अपना श्रेष्ठतम योगदान देने का प्रयास किया। कई बार मुझे कार्यालय प्रमुख द्वारा सराहनीय कर्तव्यनिष्ठा और विशिष्ट शासकीय सेवा हेतु प्रशस्ति पत्रों द्वारा सम्मानित भी किया गया।

अंततः वह क्षण भी आया जिसका मुझे कई वर्षों से इंतजार था और वह क्षण था दिनांक 01.01.2026 का। इस दिन नूतन वर्ष के हर्षोल्लास के साथ मेरे जीवन में भी नई सुबह आयी। इस दिन मैं लेखापरीक्षक के पद पर पदोन्नत हो गया था। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय में कार्य करना वास्तव में सौभाग्य की बात है और इस पर भी बिल्कुल निचले स्तर से लेखापरीक्षक तक पहुँचना मेरे लिए अत्यंत आह्लादित करने वाला क्षण था। इस समाचार से मेरे परिवार में भी खुशी की एक नयी लहर दौड़ी। सचमुच, यह भारत सरकार की सच्ची निष्ठा से की गयी निरंतर सेवा का ही परिणाम था। आज मेरा जीवन सुखद, प्रसन्न और गतिशील है जिसका श्रेय इस सरकारी विभाग को भी जाता है। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण जिनके साथ मैंने काम किया, उन सभी के साथ मुझे ढेर सारी बातें सीखने को मिलीं जिससे मेरा जीवन सरल एवं सुगम बन सका।

इस अभूतपूर्व योगदान और सहयोग से मैं कृतार्थ हूँ और कामना करता हूँ कि ईश्वर इस कार्यालय को अपने वास्तविक प्रयोजनों में निरंतर सफल करता रहे और यह कार्यालय सफलताओं की नित नयी कहानी दर्ज करने में सफल रहे।

मूल्य शिक्षा

मोहित सेठ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

नागपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर केदार ने **ब्रह्मकुमारी अकादमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड** में आयोजित मानवाधिकार और शिक्षा पर एशियाई शिक्षाविदों के सम्मेलन में बोलते हुए चेतावनी दी कि **"नैतिक मूल्यों और तकनीकी प्रगति के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। यदि ऐसा होता, तो तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान के उदय के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का भी चरम पर होना चाहिए था। लेकिन आज स्थिति ऐसी नहीं है। अहंकार, क्रोध, हिंसा, ज्ञान और बुद्धि का पतन आदि हर जगह व्याप्त है। आज की शिक्षा केवल प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ाती है।"**

मूल्य शिक्षा निस्संदेह महत्वपूर्ण है; फिर भी, आज के समय में यह कक्षाओं और पाठ्यक्रम में उपेक्षित विषय बन गया है। हालांकि, मूल्य शिक्षा को कक्षा और कॉलेज दोनों के पाठ्यक्रम में पर्याप्त रूप से शामिल किया जा सकता है। किसी व्यक्ति को मूल्यों से अवगत कराने का एक बहुत ही सुविधाजनक और सफल तरीका उसकी शिक्षा के माध्यम से है, चाहे वह विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय स्तर पर हो।

बेशक, सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन भर चलती रहती है और व्यक्ति अपने हर अनुभव और सीखने के अवसर से मूल्यों को आत्मसात कर सकता है। हालांकि, मूल्यों को सीखने और आत्मसात करने का सबसे अच्छा समय शिक्षा की शुरुआत में ही होता है, चाहे वह प्री-स्कूल हो या स्कूल।

अच्छे मूल्यों से व्यक्ति का आत्मसम्मान बढ़ता है, दूसरे उसका सम्मान करते हैं और उसे सिद्धांतों और आत्मविश्वास पर आधारित जीवन जीने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास मिलता है।

अधिकांश बच्चे अपनी शिक्षा की शुरुआत प्री-स्कूल यानी प्ले-स्कूल या नर्सरी से करते हैं। ऐसे संस्थानों में बच्चे सहिष्णुता और सहयोग सीखते हैं। समाज के विभिन्न वर्गों से आने वाले अपने हम उम्र बच्चों के साथ घुलने-मिलने से वे एक-दूसरे के प्रति सहिष्णु होना, सहयोग करना और निष्पक्ष व्यवहार करना सीखते हैं।

कम उम्र से ही सहिष्णुता विकसित करने से व्यक्ति को मिलजुलकर रहना और शांति से जीवन जीने की कला सीखने में मदद मिलती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनुशासन, समय की पाबंदी, ईमानदारी, लगन और देशभक्ति सिखाई जा सकती है। विद्यार्थी अनुशासन का महत्व और मूल्य तभी समझ सकते हैं जब विद्यालयों में **एक निश्चित आचार संहिता** लागू की जाए जिसका पालन विद्यार्थी को करना अनिवार्य हो।

कक्षा में मूल्यों के संचार का एक और प्रभावी तरीका है विषयवस्तु को अन्य विषयों, वास्तविक जीवन के अनुभवों और अतीत एवं वर्तमान की घटनाओं से जोड़ना। जब विद्यार्थी विषयवस्तु को अन्य विषयों से जोड़कर देखता है, तो उसे आसानी से याद रहता है। साथ ही, यह विद्यार्थी में मूल्यों को आत्मसात करने का एक बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है।

शिक्षकों को विद्यार्थियों को चर्चाओं में शामिल करना चाहिए। इससे न केवल विद्यार्थियों में हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों और परंपराओं के प्रति जागरूकता पैदा होती है, बल्कि हमारी विरासत के प्रति सहिष्णुता और सम्मान की भावना भी विकसित होती है। साथ ही, चूंकि मूल्य बचपन से ही सिखाए जाते हैं, इसलिए बड़े होने पर वे उनके स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं। सरल शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि मूल्य शिक्षा वह शिक्षा है जो निम्नलिखित बातें सिखाती है:

1. अच्छी तरह से जीवन कैसे जिएं?
2. खुशी कैसे पाएं?
3. दूसरों को खुश कैसे करें?
4. हर तरह के लोगों और उनकी खुशी को अच्छे से कैसे संभालें?
5. सही तरीके से तरक्की और सफलता कैसे पाएं?

ऐतिहासिक रूप से, विश्वभर के देशों में शिक्षा के दो मुख्य लक्ष्य रहे हैं - युवाओं को साक्षरता और अंकगणित के कौशल में निपुण बनाना, अर्थात् अकादमिक शिक्षा; और उन्हें अच्छे चरित्र का निर्माण करना, अर्थात् मूल्य शिक्षा। प्लेटो के समय से ही समाजों ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया है।

वे समझते थे कि एक सभ्य समाज के निर्माण और उसे बनाए रखने के लिए, चरित्र और बुद्धि, लोकतंत्र और साक्षरता, सद्गुण और कौशल एवं ज्ञान, तीनों की शिक्षा आवश्यक है। अतः, सार्थक शिक्षा वह है जो हमारे और दूसरों के कल्याण के लिए उपयोगी हो। यह तभी संभव है जब व्यक्ति को अकादमिक और मूल्य शिक्षा दोनों प्राप्त हों।

मूल्यों को संप्रेषित करने का सबसे प्रभावी तरीका कथावाचन है। कहानियाँ संवादात्मक होती हैं और इसलिए मूल्यों को संप्रेषित करने में अत्यंत प्रभावी होती हैं।

1. वे बाध्यता के बजाय आकर्षण के माध्यम से सिखाते हैं।
2. वे थोपने के बजाय आमंत्रित करते हैं।
3. वे कल्पना को आकर्षित करते हैं और हृदय को छूते हैं।

निस्संदेह, यही कारण है कि दुनिया के महानतम नैतिक शिक्षकों ने शाश्वत सिद्धांतों और सत्यों को सिखाने के लिए हमेशा कहानियों का सहारा लिया है। कहानियों का उपयोग तीन तरीकों से किया जा सकता है:-

1. उन्होंने पढ़ा और बिना कोई टिप्पणी या चर्चा किए अपना काम करने के लिए चले गए।
2. मूल्यों से संबंधित कोई मुद्दा उठने तक पढ़ें। इस बिंदु पर, मूल्यों से संबंधित मुद्दे पर चर्चा के माध्यम से विचार-विमर्श किया जाएगा।
3. अंत तक पढ़ें और उसके बाद दिए गए चर्चा प्रश्नों का एक सेट देखें।

उन्हें बिना किसी टिप्पणी या चर्चा के पढ़ा जा सकता है और उन्हें अपना काम करने के लिए छोड़ दिया जा सकता है।

कुछ ऐसे उदाहरण जहां मूल्यों ने महान लोगों के दिलों को छुआ और उनके जीवन में बदलाव लाया, उन्हें चर्चाओं में शामिल किया जा सकता है:-

1. **अल्फ्रेड नोबेल**: अकादमिक शिक्षा प्राप्त इस वैज्ञानिक ने विस्फोटकों का आविष्कार किया, लेकिन बाद में उन्हें अपने इस आविष्कार पर पछतावा और अपराधबोध हुआ, क्योंकि यह सैकड़ों जिंदगियां तबाह कर सकता था, पूरे शहरों को नष्ट कर सकता था और आने वाली पीढ़ियों में भी पीड़ा और विकृतियां पैदा कर सकता था।
2. **सम्राट अशोक**: सम्राट अशोक भारत के महानतम शासकों में से एक थे। लेकिन उनकी प्रारंभिक सफलता हिंसा पर आधारित थी। उन्होंने लगभग नब्बे रिश्तेदारों की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया। एक दिन, युद्ध के बीच में, उन्हें एहसास हुआ कि युद्ध में केवल 110 ही सच्चे विजेता थे, क्योंकि दोनों तरफ से इतने सारे लोग मारे गए थे।
   वे बुद्ध के अनुयायी बन गए और उन्होंने अपना पूरा जीवन बदल दिया। उन्होंने अपनी प्रजा की अद्भुत सेवा की। आज भी उन्हें सम्मानित किया जाता है और याद किया जाता है।
3. जर्मन साम्राज्य के प्रमुख **एडॉल्फ हिटलर** एक समय पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग दूसरों की भूमि और धन को जब्त करने और लाखों लोगों को यातना देने और मारने के लिए किया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया।

जब हार निकट आई, तो वे मृत्यु का बहादुरी से सामना कर सके और उन्होंने आत्महत्या कर ली। उनकी शक्ति ने उनका साथ तब छोड़ दिया जब उन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी क्योंकि उन्होंने अपने जीवन से सभी अच्छे मूल्यों को त्यागकर यह शक्ति प्राप्त की थी। उनकी शक्ति केवल एक बाहरी दिखावा थी। यह आंतरिक शक्ति नहीं थी।

अब तक जो भी चर्चा हुई है, उससे हम सहमत हैं कि शिक्षा मूल्यों को प्रदान करने में सहायक होती है। कभी-कभी हम पाते हैं कि माता-पिता द्वारा सिखाए गए मूल्यों का बच्चों पर नगण्य प्रभाव पड़ता है, लेकिन यदि उन्हीं मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से सिखाया जाए, तो बच्चे उन्हें सहजता से स्वीकार करते हैं और उन्हें महत्वपूर्ण मानते हैं।

यदि हम बच्चों में इन मूल्यों को विकसित करने में सफल होते हैं, तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि 21वीं सदी के भारतीय आदर्श नागरिक होंगे।

इसलिए, एक बेहतर भारत बनाने के लिए, हमें नैतिक मूल्यों वाले नागरिक तैयार करने चाहिए। **खोया हुआ धन हमेशा के लिए नहीं रहता, लेकिन खोया हुआ चरित्र हमेशा के लिए खो जाता है।** इसलिए हम सभी को अपने चरित्र को संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए और यह तभी संभव है जब हमारे पास उचित मूल्य हों।

ये मूल्य हमारे नैतिक और मानसिक गुणों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। मनुष्य का उद्देश्य केवल जीवन जीना नहीं है, बल्कि नैतिक मूल्यों से भरपूर एक अच्छा जीवन जीना है।

परिवार लगभग सभी समाजों में मूल्य शिक्षा का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। निश्चित रूप से, यह छोटे बच्चों पर पहला और सर्वोपरि प्रभाव डालता है। यह आदर्श स्थापित करता है, पूर्वाग्रहों को आत्मसात करता है और सामाजिक पदानुक्रम का एक मॉडल प्रस्तुत करता है। अधिकांश आधुनिक समाजों के लिए स्कूल जनसंचार माध्यमों के माध्यम से युवाओं के दृष्टिकोण और विश्वास को प्रभावित करने का सबसे प्रभावी तरीका प्रदान करता है।

प्रत्येक देश में, विशिष्ट संस्थानों को मूल्य शिक्षा प्रदान करने की विशेष जिम्मेदारी सौंपी जाती है। किसी विशेष संस्थान द्वारा मूल्य शिक्षा के लिए निभाई जाने वाली जिम्मेदारी का स्तर एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होता है और एक ही समाज में भी समय के साथ बदल सकता है।

इनमें से प्रत्येक संस्थान प्रभावित होता है; और मूल्य शिक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थानों में से एक विद्यालय है। मूल्य शिक्षा निश्चित रूप से इस सामाजिक शक्ति से बहुत प्रभावित होती है! मूल्य शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा

विद्यालय विद्यार्थियों को सही व्यवहार के मानक सिखाता है। धर्मपरायणता, सहिष्णुता और सार्वभौमिक बंधुत्व की हमारी गौरवशाली परंपरा और पाखंड, भ्रष्टाचार, बेईमानी और अमानवीय रवैये की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, हम निःसंदेह आश्वस्त हैं कि हम आज सबसे गंभीर नैतिक संकट का सामना कर रहे हैं। उच्च जीवन स्तर की अतृप्त दौड़ ने ईमानदारी जैसे मूल्य में घोर गिरावट ला दी है।

वफादारी, शिष्टाचार और बड़ों के प्रति आदर के अभाव में हत्याएं, डकैती, चोरी और बलात्कार जैसे अपराध आम हो गए हैं। इस संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि स्कूली पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का अभाव एक गंभीर खामी है।

इसलिए आज की आवश्यकता है कि हमारे विद्यार्थियों को नैतिक अवधारणाओं को समझना और उन्हें व्यवहार में लाना सिखाया जाए, साथ ही दूसरों की जरूरतों और हितों को ध्यान में रखते हुए उचित व्यवहार करने या न करने का महत्व भी समझाया जाए।

अतः आज के समय में मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को स्पष्टता और सटीकता के साथ व्यवस्थित करना अत्यंत आवश्यक है। संपूर्ण शिक्षा को लक्ष्य-उन्मुख गतिविधि बनाना होगा।

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।
उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय।
निज भाषा उन्नति बिना, कबहुं न हौहैं सोय
लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय।''

आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह भारतेन्दु हरिश्चंद्र

समुद्र, पहाड़ और दोस्ती: केरल में पाँच दोस्तों की यादगार महायात्रा

नवीन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

दिसंबर की ठंडी सुबह... लखनऊ कोहरे में लिपटा था, लेकिन हमारे भीतर एक अलग ही जुनून था—घूमने का। पाँच दोस्त, एक जोश और मंज़िल—केरल। हमें क्या पता था कि यह सफर सिर्फ खूबसूरत नज़ारों का नहीं, बल्कि हँसी, उलझन, चोट, बहस और बेशुमार यादों का बनने वाला है।

तिरुवनंतपुरम: समुद्र की थपकियाँ और नाव की सरगम

पहली ही शाम जब हम समुद्र किनारे पहुँचे, लहरों की तेज़ थपकियाँ और नमकीन हवा ने जैसे रोमांच की शुरुआत कर दी। आसमान पर ढलता सूरज और सामने फैला अथाह समुद्र—दिल खुद-ब-खुद कह उठा, *यह यात्रा यादगार होने वाली है!*

पद्मनाभ मंदिर के भव्य प्रांगण में प्रवेश करते ही वातावरण बदल गया। ऊँचा गोपुरम, दिव्यता से भरा माहौल और मंत्रों की ध्वनि—मन में अद्भुत ऊर्जा और शांति दोनों साथ-साथ महसूस हुई।

अगली सुबह असली रोमांच शुरू हुआ—नाव मैंग्रोव के घने जंगलों के बीच से सरकती हुई आगे बढ़ रही थी। कभी संकरे जलमार्ग, कभी अचानक खुला पानी, ऊपर चमकती धूप और हल्का म्यूज़िक... हर मोड़ पर नया दृश्य, नई उत्तेजना। फ्लोटिंग रेस्टोरेंट में बैठकर मैगी और स्नैक्स के साथ हमारी हँसी पानी की सतह पर गूँज रही थी।

तभी पानी के ऊपर तेजी से उड़ता किंगफिशर दिखा—नीले रंग की बिजली-सी चमक! पुअर आइलैंड पर उतरते ही हमने कैमरा संभाला और अपनी क्रिएटिविटी को खुलकर उड़ान दी। हर क्लिक के साथ रोमांच और बढ़ता गया।

तिरुवनंतपुरम ने सच में हमारी यात्रा को रोमांच, अध्यात्म और मस्ती—तीनों का परफेक्ट मिश्रण बना दिया।

वर्कला: समुद्र के साथ बिताई एक रात

वर्कला बीच की रात—रेत पर बैठे हम पाँच दोस्त, हाथ में चाय और सामने अथाह सागर। लहरें आकर पैरों को छू जातीं। हमने वहीं नाइट स्टे किया। सुबह का सूरज और समुद्र की गूंज—दोनों ने मिलकर उस रात को अविस्मरणीय बना दिया।

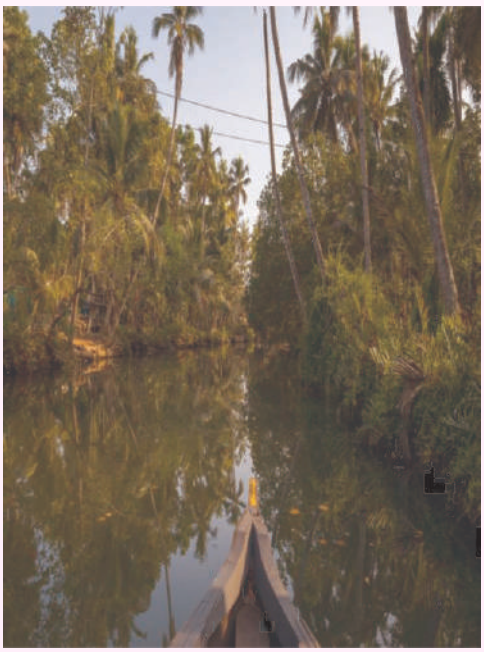

फोर्ट कोच्चि और मरीन ड्राइव: स्वाद, शरारत और शांति

फोर्ट कोच्चि की गलियों में घूमते हुए हमें असली मज़ा आया। सड़क किनारे ताज़े कच्चे आम-जो उस सीजन में नॉर्थ इंडिया में मिलना मुश्किल था-नमक-मिर्च लगाकर खाते रहे। चेहरे पर वही बचपन वाली खट्टी मुस्कान। मरीन ड्राइव की शामें यादगार रहीं। पानी पर पड़ती रोशनी, किनारे बैठकर देर रात तक बातें करना-वो पल बहुत सुकून देने वाले थे। भाषा की दिक्कत हमारे साथ हर जगह रही। ड्राइवर को एक जगह बताया, पहुँचे दूसरी जगह। लेकिन हर गलती एक नया किस्सा बनती गई। **अलपुझा (एलेप्पी): बैकवॉटर का जादू**

हमने लगभग डेढ़ से दो घंटे तक नाव से बैकवॉटर की सैर की। नाव लोकल गाँवों के बीच से गुजर रही थी—दोनों तरफ नारियल के ऊँचे-ऊँचे पेड़, पानी में झलकती हरियाली, छोटे-छोटे घर और किनारे खेलते बच्चे। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी पोस्टकार्ड के अंदर बैठकर सफर कर रहे हों। हवा ठंडी थी, दृश्य शांत थे, और हम बस उस पल को महसूस कर रहे थे।

अथिरापल्ली: रोमांच, गिरना और जुनून

अथिरापल्ली झरने की गर्जना और हवा में उड़तीफुहार—रोमांच अपने चरम पर था। रास्ते में ओमपाल फिसल गए। उन्हें उठाया गया, पैर में मोच आ गई। कुछ देर के लिए सबके चेहरे पर चिंता थी। लेकिन ओमपाल भी कम नहीं थे। दर्द में भी बोले—"पहले फोटो खींचो!" मोच लगी हालत में भी वह फोटो खिंचवाते रहे। वापसी में देर हो गई। बड़ी मुश्किल से एक आखिरी बस मिली। पेट में भूख, चेहरे पर थकान और ऊपर से खाने को लेकर बहस। ओमपाल थोड़ा नाराज़ भी हो गए। फिर जैसे-तैसे खाने का इंतज़ाम किया और वही बहस हँसी में बदल गई।

मुन्नार: बादलों के बीच हरियाली

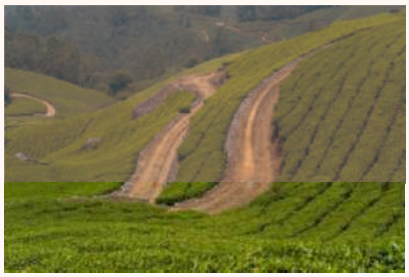

बस जैसे-जैसे मुन्नार की ओर बढ़ रही थी, घुमावदार रास्ते और खिड़की से दिखते अंतहीन चाय बागान किसी सपने जैसे लग रहे थे। हर मोड़ पर लगता-बस रुक जाए और हम उस हरियाली में खो जाएँ। मसालों के बागान में इलायची और काली मिर्च की खुशबू हवा में घुलकर माहौल को और भी नशे जैसा बना रही थी।

इराविकुलम नेशनल पार्क पहुँचे तो रोमांच अपने चरम पर था। पहाड़ियों की ऊँची ढलानों पर फुर्ती से दौड़ते नीलगिरी नहर को देखना किसी लाइव एडवेंचर फिल्म से कम नहीं था। छोटे-छोटे शावक भी उनके साथ ऐसे चल रहे थे मानो पहाड़ उनके लिए खेल का मैदान हो। उनकी संतुलन क्षमता देखकर हम सचमुच दंग रह गए। फिर शुरू हुआ हमारा "रील मिशन"! मैं और ओमपाल खूबसूरत बैकग्राउंड के बीच एक परफेक्ट शॉट की तलाश में इतने खो गए कि समय का ध्यान ही नहीं रहा। बादल नीचे उतर आए थे, रोशनी बदल रही थी, और हम एक के बाद एक टेक लेते जा रहे थे। जब होश आया तो शाम ढल चुकी थी-और आख़िरी बस पकड़ना हमारे लिए असली एडवेंचर बन गया!

दिल की धड़कनें तेज़, कदमों में रफ्तार और मन में एक ही लक्ष्य—बस छूटनी नहीं चाहिए। आखिरकार किस्मत ने साथ दिया और हमें आख़िरी बस मिल ही गई। उस पल की राहत और रोमांच ने मुन्नार को हमारी यात्रा का सबसे थ्रिलिंग अध्याय बना दिया।

अंतिम पड़ाव: आदियोगी

कोयंबतूर में आदियोगी की भव्य प्रतिमा के सामने खड़े होकर सचमुच ऐसा महसूस हुआ मानो पूरी यात्रा का एक सुंदर, शांत और आध्यात्मिक समापन हो गया हो। 112 फीट ऊँची भगवान शिव की यह अद्भुत प्रतिमा केवल एक मूर्ति नहीं, बल्कि ध्यान, ऊर्जा और आंतरिक स्थिरता का प्रतीक है। हल्की हवा, खुले आकाश के नीचे खड़ी वह विराट आकृति और चारों ओर फैली प्राकृतिक सुंदरता—सब मिलकर मन को भीतर तक स्पर्श कर रहे थे। ऐसा लगा मानो यात्रा की सारी थकान उसी क्षण समाप्त हो गई हो और मन एक नई ऊर्जा से भर गया हो।

आदियोगी के शांत, ध्यानमग्न चेहरे को निहारते हुए भीतर एक गहरा सुकून महसूस हुआ। यात्रा के दौरान देखे गए सुंदर दृश्य, अनुभव किए गए रोमांच और मिले हुए लोग—सब स्मृतियों की तरह मन में घूमने लगे। लगा कि यह केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और आभार का एक क्षण है।

यात्रा की भागदौड़ के बाद यह स्थान सच में एक ठहराव जैसा था—जहाँ मन ने खुद से मुलाकात की। कोयंबतूर का यह अंतिम पड़ाव हमारी पूरी यात्रा को एक आध्यात्मिक अर्थ दे गया।

"अपने गुणों से तथा सूर, तुलसी, हरिश्चन्द्र आदि महाकवियों की अपूर्व प्रतिभा से हिन्दी केवल भारत में ही नहीं, द्वीपान्तरों में भी माननीय हो रही है।"

महामहोपाध्याय पं0 रामावतार शर्मा

चुनौतियाँ एवं अवसर: सैन्य जीवन से नागरिक जीवन की ओर

राज कुमार चौधरी
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

"वन्स अ सोल्जर, ऑलवेज अ सोल्जर"—अंग्रेजी की यह कहावत सैन्य जगत में अत्यंत प्रचलित है। एक भूतपूर्व सैनिक होने के नाते, मैं अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं में इस कहावत को प्रतिदिन चरितार्थ होते महसूस करता हूँ। मेरे दादाजी भारतीय वायुसेना में थे, जिस कारण मेरा बचपन सैन्य वातावरण में बीता। वर्दी से जुड़े गौरव और सम्मान ने मुझे सदैव प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप 20 वर्ष पूर्व मेरा चयन **भारतीय नौसेना** में हुआ।

किसी भी व्यक्ति के चरित्र निर्माण में उसकी प्रारंभिक शिक्षा और अल्पायु में कार्यस्थल के वातावरण की अहम भूमिका होती है। भारतीय नौसेना में सेवाकाल ने मेरे व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से गढ़ा है:

- **अनुशासित जीवनशैली:** सेना ने समयनिष्ठा और नियमों के पालन को स्वभाव का हिस्सा बनाया।
- **साझा कौशल:** एक समूह में कार्य करना और साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने की कला सीखी।
- **सांस्कृतिक समझ:** मित्र देशों के साथ युद्धाभ्यास के दौरान अन्य संस्कृतियों को समझने का अवसर मिला।

यह परिवर्तन इसलिए संभव होता है क्योंकि सेना एक असैनिक युवा को यौवन के पहले चरण में ही कठोर मानकों के अनुरूप प्रशिक्षित करती है।

आज भी मुझे वह अनुभूति याद है, जब मात्र 18 वर्ष की आयु में प्रशिक्षण के पश्चात मेरी पहली तैनाती मुंबई में एक विशालकाय युद्धपोत पर हुई थी। उस अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित जहाज के शिखर पर लहराता तिरंगा मानो देश की रक्षा सेवा में शामिल होने पर मेरा अभिनंदन कर रहा हो।

लगभग 18 वर्ष की गौरवशाली सेवा के उपरांत, जब मैंने नागरिक जीवन में प्रवेश किया, तो कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं:

1. **सामाजिक सामंजस्य:** लंबे समय तक परिवार से दूर रहने के कारण समाज में अपनी भूमिका पुनः स्थापित करना थोड़ा कठिन होता है।
2. **कार्यशैली में भिन्नता:** सैन्य जीवन प्रायः एक संकुचित वातावरण तक सीमित होता है और सेवाकाल के दौरान जीवन का ज़्यादातर समय सहकर्मियों के साथ ही बीतता है तो स्वाभाविक रूप से सैनिकों के मध्य एक अटूट भाईचारे का विकास हो जाता है जो जीवन पर्यंत रहता है। नागरिक जीवन में संस्थाओं में कार्य करने वाले सहकर्मियों का अपना व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन भी होता है जिसके परिणाम स्वरूप सैन्य जीवन की तरह प्रगाढ़ भाईचारे की आशा नहीं की जा सकती। सैन्य जीवन के व्यवस्थित परिवेश के विपरीत, नागरिक समाज की अनिश्चितता और सांस्कृतिक बदलाव के साथ तालमेल बिठाने में भी एक पूर्व सैनिक को समय लगता है।

हालांकि, ये चुनौतियाँ सकारात्मक बदलाव भी लाती हैं। नागरिक जीवन में व्यक्तिगत निर्णय लेने, प्रभावी संवाद करने और तार्किक रूप से अपना मत रखने की क्षमता का विकास होता है, जो आधुनिक समाज के लिए अनिवार्य है।

वर्तमान में भारत में लगभग **30-32 लाख भूतपूर्व सैनिक** हैं, जो राष्ट्र निर्माण में विविध भूमिकाएँ निभा रहे हैं। भारत सरकार ने भी उनके पुनर्वास हेतु और उनके अनुभव का लाभ उठाने हेतु सरकारी सेवाओं में आरक्षण का प्रावधान किया है।

जब एक भूतपूर्व सैनिक किसी असैनिक संस्थान से जुड़ता है, तो वह अपने साथ निम्नलिखित गुण लेकर आता है:

- **अनुशासन और आज्ञाकारिता की परंपरा।**
- **प्रभावी कार्यशैली और टीम वर्क।**
- **कार्य के प्रति समर्पण की परंपरा।**

हाल ही में 10वें 'सशस्त्र बल पूर्व सैनिक दिवस' के अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री जी ने पूर्व सैनिकों को **"राष्ट्रीय चेतना का जीवित स्तंभ"** और आगामी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बताया है।

आज जब भारत एक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है, तब पूर्व सैनिकों का अनुभव और नेतृत्व एक महत्वपूर्ण सेतु की भूमिका निभा सकता है। हमारे समाज में सैनिकों के प्रति जो अटूट विश्वास है, वह सेना ने अपने शौर्य और बलिदानों से अर्जित किया है। यह हम सभी पूर्व सैनिकों का कर्तव्य है कि हम अपने आचरण और मूल्यों द्वारा इस गौरवशाली परंपरा को सदैव जीवित रखें।

जय हिंद, जय भारत।

रेत पर खींची जीत की लकीर-एक अनकहा संकल्प

विक्रम जीत सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

मैं अपना यह अनुभव प्रेरणा साझा करने के उद्देश से लिख रहा हूं। मेरी दादी कहा करती थीं कि समय और परिस्थिति मनई (मनुष्य) को अइसन ज्ञान, नवाचार और हुनर से परिचित करावत हैं जेकर हम कल्पना भी नाहीं कीन रहे। मैं यहाँ अपने जीवन की कुछ ऐसी ही घटनाओं को साझा करना चाहत हूँ, जो शायद सुनने में आत्म-प्रशंसा लगें, परन्तु वास्तव में यह मेरे कड़े संघर्ष की एक बानगी हैं।

मेरी विभागीय (अधीनस्थ लेखापरीक्षा/लेखा सेवा (एस.ए.एस.) प्रारंभिक परीक्षा निकट थी परन्तु तभी **एक दुर्घटना में मेरा दायाँ हाथ पूरी तरह अक्षम हो गया** और यह दुर्घटना न सिर्फ मेरे हाथ के अक्षम होने का कारण बनी बल्कि इसने मेरे सपनों पर भी बड़ा आघात किया क्योंकि एक पैर से दिव्यांग होने के कारण मैं जीवन में पहले से ही कई चुनौतियों का सामना कर रहा था। अब मेरे सामने मुसीबतों का पहाड़ खड़ा था, चूंकि परीक्षा लिखित रूप में संपन्न होनी थी और मैं अपने दायें हाथ से लिखने में बिल्कुल असमर्थ और असहाय था, मैं शारीरिक और मानसिक रूप से टूट चूका था, मानो जीवन में सब कुछ समाप्त हो गया और भविष्य का अन्धकार पलकें बिछाएं मेरी राह देख रहा हो।

मेरे पास दो विकल्प थे, हार मान लेना या दृढ संकल्प के साथ जीवन को एक नए सिरे से बुनना। चूँकि परीक्षा पास करना मेरे लिए सामाजिक और संगठनात्मक प्रतिष्ठा के साथ-साथ पदोन्नति तथा आर्थिक आत्म-निर्भरता के लिए भविष्य के आयामों का विस्तार करने वाला थी।

इसलिए मैंने हार न मानने का निर्णय लिया तथा दृढ निश्चय के साथ **अपने बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास शुरू** किया और करीब दो महीने की कड़ी मेहनत के बाद आख़िरकार परीक्षा (एस.ए.एस.) का **परिणाम सकारात्मक** रहा, जो मेरी दृढ शक्ति का प्रमाण था।

शायद किसी के लिए यह परीक्षा मात्र एक उपलब्धि हो, पर मेरे लिए यह एक बड़ी विजय थी, क्योंकि सिर्फ दो महीने में बाएं हाथ से लिखने का अभ्यास करना और परीक्षा उत्तीर्ण करना मेरे लिए आसान नहीं था, कई बार मानसिक तनाव हुआ और अश्रु-धारा भी बही परन्तु मैं रुका नहीं।

दायें हाथ की असमर्थता के कारण बांये हाथ से लिखकर परीक्षा पास करना मेरे लिए किसी जंग में जीते हुए राजा की अनुभूति की तरह था, अब मेरा मनोबल सातवें आसमान पर था और यह कारवां धीरे-धीरे आगे बढता गया और **मैंने बाएं हाथ से लिखने का अभ्यास जारी रखा।**

इसी क्रम में, मुझे वर्ष 2025 में देश की प्रतिष्ठित और सर्वोच्च परीक्षा, संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) की मुख्य परीक्षा को लिखने का अवसर मिला हालांकि यह जीत मेरे लिए आंशिक थी, क्योंकि मुख्य परीक्षा में बाएं हाथ से लिखने की गति को तीन घंटे तक लगातार बनाये रखना मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती थी, मुझे याद है कि परीक्षा के अंत तक मेरे हाथ की उंगलियाँ पूरी तरह सूज चुकी थी जिसके कारण मैंने कई बार मानसिक आघात को भी महसूस किया। अंततः मैं परीक्षा की अंतिम चयन प्रक्रिया तक नहीं पहुँच सका लेकिन बाएं हाथ से देश की प्रतिष्ठित और कठिन परीक्षा लिखना मेरे लिए किसी उत्सव से कम नहीं था। दिलचस्प बात यह है कि मेरे सहयोगी आज मुझे उभय-हस्त कुशल कहकर पुकारते हैं, जो मुझे आंतरिक संतोष प्रदान करता है। इन अप्रत्याशित घटनाओं ने मुझे कई बार तोड़ा, झकझोरा लेकिन प्रत्येक क्षण कुछ नया सीखने के लिए भी प्रेरित किया। सच ही कहा गया है कि रात कितनी भी घनघोर और लम्बी क्यों न हो एक समय बाद सवेरा जरूर होता है।

अतः यदि व्यक्ति के भीतर दृढ संकल्प और अपने लक्ष्यों के प्रति अटूट निष्ठा हो तो प्रतिकूल परिस्थितियों के अंधकार में भी आशा की किरण खोज निकालता है।

मेरी यात्रा निरंतर जारी है.....।।

विलक्षण खगोलीय घटनांए और हमारा अस्तित्व

शशांक गौरव,
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

खगोलशास्त्र स्वयं में अत्यंत विशाल विषय है जिसमें विस्मयकारी तथ्यों की कोई सीमा नहीं। खगोलीय दूरियाँ इतनी विशाल हैं कि इन्हें परंपरागत किमी अथवा मील में मापना कठिन है इसलिए इसके लिए सामान्यतः प्रकाश वर्ष, पर्सेक, एस्ट्रोनॉमिकल यूनिट आदि प्रयोग किये जाते हैं, जैसे प्रकाश वर्ष वो दूरी है जो प्रकाश एक वर्ष में तय करेगा (सन्दर्भ स्वरुप- प्रकाश की गति 3,00,000 कि.मी./सेकंड है)। यह अकल्पनीय, अविश्वसनीय एवं अनंत हैं, जिसका मानव मस्तिष्क ने कुछ हिस्सा ही अन्वेषित किया है। ब्रह्मांड में ऐसे अनेकों खगोलीय पिण्ड हैं जो आश्चर्य से परिपूर्ण हैं, वे इतने विशाल और बृहद हैं कि उनकी कल्पना करना भी कठिन है।

ब्रह्मांड में हमारा सौर-मण्डल आकाशगंगा के भीतरी किनारे पर स्थित है। आकाशगंगा अर्थात मिल्की-वे एक सर्पिलाकार आकाशगंगा है जिसकी लम्बाई लगभग 1,00,000 प्रकाश वर्ष है (1 लाख प्रकाश वर्ष की दूरी $9.46x10^{17}$) और आयु का अनुमान लगभग 13.6 अरब वर्ष है। आकाशगंगा के केंद्र में एक अत्यंत विशाल ब्लैकहोल है, जिसे धनु 'ए' (Sagittarius A) नाम से जाना जाता है। हमारे सौर-मण्डल को 8,28,000 किमी/घन्टे की गति से आकाशगंगा के केंद्र की एक परिक्रमा पूर्ण करने में लगभग 24 करोड़ वर्ष लगते है। सौर-मण्डल द्वारा परिक्रमा हेतु लिए जाने वाले इस समय को ही गांगेय वर्ष (Galactic Year) कहा जाता है। इस आकाशगंगा में 200 अरब से अधिक तारे हैं। हर तारे के इर्द-गिर्द ग्रह और हर ग्रह के अनेकों उपग्रह। यह श्रृंखला ऐसे ही निरंतर जारी रहती है।

इसी प्रकार, सूर्य जोकि हमारी पृथ्वी से 13,00,000 गुना बड़ा है और पृथ्वी से लगभग 15 करोड़ किमी दूर है, जिसके प्रकाश को पृथ्वी पर पहुँचने के लिए 8 मिनट लगते हैं। यह ज़्यादातर प्लाज़्मा से बना है, जिसका वज़न लगभग 74.9% हाइड्रोजन और 23.8% हीलियम है। अपने कोर में नाभिकीय संलयन के ज़रिए, सूर्य हर सेकंड 620 मिलियन मीट्रिक टन हाइड्रोजन को हीलियम में बदलता है, जिससे बहुत अधिक उर्जा उत्पन्न होती है। हम मानते हैं कि हमारा सूर्य सामान्य है, किंतु ऐसा है नहीं। वास्तव में, ब्रह्मांड में उपस्थित 75% तारे 'रेड ड्वार्फ' श्रेणी में आते हैं जो उग्र, अस्थिर और अपने ग्रहों को घातक विकिरण से निगलने वाले होते हैं।

जीवन की संभावना हेतु 'टाइप-जी' (पीले, भारी तत्व संपन्न और शांत) प्रकार के तारे अपेक्षित हैं। अभी तक की खोज के अनुसार ऐसे तारे मात्र 7% ही हैं। इतना ही नहीं बहुत से सूर्य जैसे तारे जुड़वाँ होते हैं और यदि सूर्य का भी ऐसा कोई जुड़वाँ भाई होता तो दोनों के गुरुत्वाकर्षण से पृथ्वी कब की पिस गयी होती। सूर्य जैसे कई तारे 100-200 वर्षों में सुपर-फ्लेयर (विशाल लपट) उन्मुक्त करते हैं जो किसी भी गृह के वायुमण्डल को नष्ट करने में सक्षम है। हमारा सूर्य हजारों-लाखों वर्षों से शांत है। जीवन प्रायिकता हेतु हमें एकल तारे की आवश्यकता है। पृथ्वी पर विभिन्न अवयवों (कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि) के सही संघटन से ही जीवन उत्पत्ति हो पायी है। पृथ्वी 1670 किमी/घन्टे की गति से घूर्णन करते हुए 107,000 किमी/घन्टे की गति से सूर्य की परिक्रमा करती है। इसी घूर्णन से दिन और रात तथा एक परिक्रमा से एक वर्ष और ऋतुएँ निर्धारित होती हैं। इस गुण के कारण सटीक तापमान रहता है, जिससे जल का द्रव्य अवस्था में रहता है जिससे जैविक क्रियाएं सुचारू रूप से चलती रहती हैं। वायुमण्डल, जल की उपस्थिति, गुरुत्वाकर्षण, रासायनिक समायोजन आदि के सही संतुलन या संयोग से ही पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाया है।

यदि हम स्वयं से यह प्रश्न करें कि कब हमने आखिरी बार बिना किसी शोर-शराबे और व्यवधान के चंद्रमा को देखा और उसके अस्तित्व और उत्पत्ति के बारे में सोचा? कब हमने सप्त-ऋषि कहलाने वाले उन तारों के समूह और ध्रुव तारे को देखा? शहरी कोलाहल से दूर प्रकृति को कब सराहा? कब हमने इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की? यह सब हमने अपने बचपन में खूब किया परन्तु जैसे-जैसे हम बड़े होते गए हममे से वो नादानी और मासूमियत कहीं खोती चली गई। हम सभी ने अपने भौतिक प्राप्तियों के लिए अपने अंदरूनी सुख-चैन को व्याकुल कर रखा है। ऐसा इसलिए है कि अधिकांश जनसंख्या जीवन-यापन की ऊहा-पोह में भाग-दौड़ से भरी पड़ी है। हालाँकि पृथ्वी पर संसाधन वर्तमान जनसंख्या को हर तरह से समृद्ध कर सकते हैं किंतु

लोभ और लालसा ने मानव को एक अभिलाषी प्रजाति के रूप में प्रकट किया है। सृष्टि की सबसे बुद्धिमान प्रजाति मानव ने सुदूर ब्रह्मांड की खोज तो कर ली है पर वो इतना मूर्ख भी है कि उसने देश, धर्म, जाति आदि में विभेद कर आतंकवाद जैसी मानव-निर्मित आपदा को भी उत्पन्न किया है। हम अपने आस-पास विद्यमान वस्तुओं का मूल्य में तुलन तो कर लेते हैं, पर उसके अस्तित्व का मोल शायद ही बता पाएं।

यदि हम ब्रह्मांड में सबसे दुर्लभ वस्तु की बात करें तो हमारे मस्तिष्क में सोना, हीरा, यूरेनियम, चाँदी जैसी धातुएं आती हैं। किंतु आश्चर्यजनक रूप से यह लकड़ी है क्योंकि कभी-कभी जो प्रतीत होता है वो वास्तविक नहीं होता। सामान्य सी दिखने वाली यह वस्तु ब्रह्मांड में अत्यंत दुर्लभ वस्तुओं में से एक है क्योंकि लकड़ी का स्रोत वनस्पति है और जिसका आधार जीवन है और अभी तक के अनुसंधान अनुसार जीवन सम्पूर्ण ब्रह्मांड में मात्र केवल पृथ्वी पर ही पाया गया है, जो दूर-दूर के ग्रहों तक नहीं है। हमारे ग्रह में प्रचुरता में विद्यमान इस संसाधन को हम प्रकृति द्वारा 'ऐसे ही मिली हुई' (Taken for Granted) मान लेते हैं। हमें जो प्राप्त हुआ होता है उसके न रहने या खोने तक हम उसका मूल्य नहीं समझते।

अपने दैनिक जीवन में भी हम कुछ इसी तरह प्राप्त खुशियों को महत्व नहीं दे पाते। कोई भी गतिविधि जैसे प्रकृति के बीच समय बिताना, मनपसंद संगीत सुनना या व्यंजन का आनंद लेना, स्वजनों के साथ समय बिताना, रचनात्मकता, शारीरिक व्यायाम आदि जिसमें भी हमें प्रसन्नता एवं संतुष्टि की अनुभूति प्राप्त हो, उसे करना चाहिए, यह आवश्यक नहीं कि जो चीज़ हमें अन्दर से ख़ुशी दे, वो हर समय तर्कसंगत भी हो। कभी-कभी हम सोचते हैं कि हम अपनी आकांक्षा की पूर्ति कल करेंगे पर वो समय कब बीत जाता है, पता भी नहीं चलता। इसलिए मात्र एक बार मिले इस जीवन को बिना किसी चिंता के भरपूर जिएं।

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा क, ख, ग में परिभाषित किया गया है

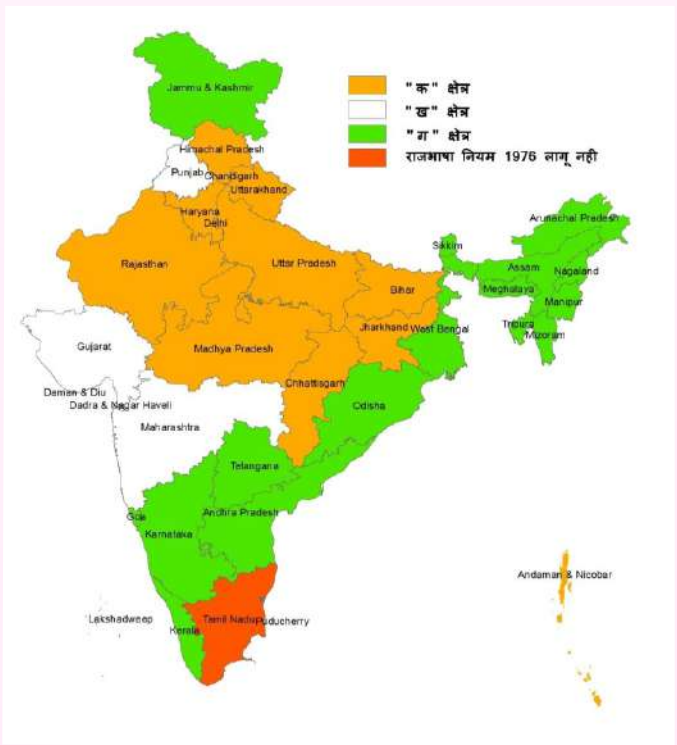

प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अनवरत यात्रा

दीपक वर्मा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

जब संसार अभी अपने प्रारंभिक कदम ही सीख रहा था, तब भारतभूमि पर समय केवल बह नहीं रहा था, बल्कि वह स्मृतियाँ गढ़ रहा था। यह वह भूमि थी जहाँ सभ्यता ईंट-पत्थरों से पहले विचारों में जन्म लेती थी। प्राचीन भारतीय सभ्यता की कहानी किसी एक नगर, किसी एक राजा या किसी एक धर्म की नहीं है; यह हड़प्पा की गलियों से निकलकर वैदिक आश्रमों, बौद्ध विहारों और भव्य मंदिरों तक पहुँचने वाली एक सतत मानवीय यात्रा है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता की पहली स्पष्ट झलक हमें सिंधु नदी के तट पर बसे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में मिलती है। कल्पना कीजिए—सुबह की धूप में चमकती सीधी सड़कें, पक्की ईंटों से बने घर, और हर घर से जुड़ी ढकी हुई नालियाँ। यह केवल नगर नहीं थे, बल्कि अनुशासन और सामूहिक चेतना के प्रतीक थे। हड़प्पा सभ्यता की सबसे अनूठी विशेषता यह थी कि यहाँ शक्ति प्रदर्शन से अधिक व्यवस्था का महत्व था। महान स्नानागार जैसे स्थापत्य संकेत देते हैं कि शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ मानसिक और सामाजिक शुद्धता को भी महत्व दिया जाता था।

हड़प्पा की कांस्य नर्तकी आज भी जैसे समय को थामे खड़ी है। उसकी मुद्रा बताती है कि कला यहाँ विलास नहीं, बल्कि जीवन का स्वाभाविक हिस्सा थी। मुहरों पर अंकित पशु, लिपि और प्रतीक यह संकेत देते हैं कि यह सभ्यता व्यापार, संप्रेषण और प्रतीकात्मक सोच में अत्यंत विकसित थी। यही प्रतीकात्मकता आगे चलकर भारतीय धार्मिक कला और मूर्तिकला की आधारशिला बनी। हड़प्पा सभ्यता पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि यह केवल एक प्राचीन नगरीय व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह एक सुविचारित सामाजिक प्रयोग था। यहाँ के नगर किसी साम्राज्यवादी वैभव का प्रदर्शन नहीं करते, बल्कि समानता और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को दर्शाते हैं। लगभग एक-सी बनावट वाले घर, सार्वजनिक कुएँ और सुस्पष्ट जल-निकासी प्रणाली यह संकेत देती है कि व्यक्ति से अधिक समुदाय को महत्व दिया गया। यही सामूहिक चेतना आगे चलकर भारतीय ग्राम-व्यवस्था और सामाजिक जीवन का आधार बनी।

समय बदला, नदियों के मार्ग बदले, और हड़प्पा सभ्यता धीरे-धीरे इतिहास की स्मृति बन गई; पर सभ्यता समाप्त नहीं हुई—उसने रूप बदला। वैदिक काल में भारतीय जीवन जंगलों और नदियों के किनारे आश्रमों में सिमट आया। यहाँ सभ्यता बाहरी नगरों से भीतर की यात्रा करने लगी। ऋषियों ने आकाश की ओर देखते हुए जीवन के प्रश्न पूछे—सत्य क्या है, आत्मा क्या है, और मनुष्य का उद्देश्य क्या है। वैदिक काल भारतीय सभ्यता का वह चरण है जहाँ मनुष्य ने बाहरी व्यवस्था से आगे बढ़कर अपने भीतर झाँकना शुरू किया। ऋग्वैदिक ऋषि प्रकृति के साथ संवाद करते हैं, तो उपनिषदों के मनीषी आत्मा और ब्रह्म के संबंध पर विचार करते हैं। यह काल हमें सिखाता है कि ज्ञान केवल संग्रह करने की वस्तु नहीं, बल्कि अनुभव से उपजने वाली चेतना है। आश्रम व्यवस्था, गुरु–शिष्य परंपरा और यज्ञीय जीवन-पद्धति ने भारतीय संस्कृति को अनुशासन, संयम और आत्मबोध प्रदान किया।

उपनिषदों की कथाएँ बताती हैं कि ज्ञान केवल ग्रंथों में नहीं, अनुभव में बसता है। एक गुरु अपने शिष्य को मौन सिखाता है, क्योंकि मौन में ही सत्य बोलता है। यह विचार भारतीय संस्कृति को गहराई देता है और यही गहराई आगे चलकर बौद्ध और जैन परंपराओं में करुणा और अहिंसा के रूप में प्रकट होती है।

गौतम बुद्ध की कथा इसी प्रवाह का अगला अध्याय है। राजमहल छोड़कर वन की ओर जाते बुद्ध केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि सभ्यता की दिशा बदलने वाले विचार थे। साँची के स्तूप, भरहुत की रेलिंग्स और अजंता की गुफाएँ पत्थरों में उकेरी गई करुणा हैं। अजंता की चित्रकला मानव चेहरे पर भावों को इस तरह उकेरती है कि सदियों बाद भी वे जीवित लगते हैं। विश्व ने यहीं से सीखा कि कला केवल दृश्य नहीं, अनुभूति भी हो सकती है।

इसी काल में भारतीय सभ्यता ने शिक्षा को वैश्विक रूप दिया। तक्षशिला और नालंदा केवल विश्वविद्यालय नहीं थे, बल्कि सभ्यताओं के संगम स्थल थे। चीन, कोरिया, तिब्बत और मध्य एशिया से आए विद्यार्थी यहाँ ज्ञान लेने आते थे। गणित में शून्य, चिकित्सा में आयुर्वेद और खगोलशास्त्र में ग्रहों की गति—इन सबने विश्व की बौद्धिक यात्रा को नई दिशा दी।

समय के साथ भारतीय सभ्यता ने पत्थरों में बोलना शुरू किया—मंदिरों के रूप में। मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं थे, वे दर्शन के स्थापत्य रूप थे। ओडिशा का कोणार्क सूर्य मंदिर जब अपने रथ के पहियों के साथ समय की गति को दर्शाता है, तो वह खगोलीय ज्ञान और कला का अद्भुत संगम बन जाता है। खजुराहो के मंदिर जीवन की संपूर्णता का उत्सव हैं, जहाँ सांसारिक और आध्यात्मिक अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही जीवन के दो पक्ष हैं।

मंदिर और कलाकृतियाँ भारतीय सभ्यता की उस अवस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ विचार पत्थर में ढलने लगे। मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं, बल्कि दर्शन, विज्ञान और कला के संगम थे। गर्भगृह में प्रवेश करता प्रकाश, मूर्तियों के अनुपात, नृत्य मुद्राओं की सजीवता—यह सब दर्शाता है कि भारतीय कलाकार केवल हाथों से नहीं, चेतना से सृजन करता था। यही कारण है कि खजुराहो, कोणार्क, एलोरा या तंजावुर के मंदिर आज भी विश्व को प्रेरित करते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि जब सभ्यता आत्मा से जुड़ती है, तो उसकी रचनाएँ कालजयी बन जाती हैं।

एलोरा का कैलाश मंदिर मानव संकल्प की चरम सीमा है। पहाड़ को ऊपर से नीचे तराश कर बनाया गया यह मंदिर आज भी विश्व के वास्तुकारों को अचंभित करता है। इसी परंपरा को दक्षिण भारत के मंदिर आगे बढ़ाते हैं। तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर अपनी ऊँचाई, संतुलन और ध्वनि-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। महाबलीपुरम के शैल मंदिर समुद्र और पत्थर के बीच संवाद की तरह प्रतीत होते हैं। इन मंदिरों से विश्व ने सीखा कि स्थापत्य केवल निर्माण नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की व्याख्या भी हो सकता है। भारतीय कलाकृतियाँ—मूर्ति, नृत्य, संगीत और प्रतीक—सभ्यता की आत्मा को व्यक्त करती हैं। नाट्यशास्त्र के रस सिद्धांत ने विश्व को भावों की वैज्ञानिक समझ दी। योग और ध्यान की परंपराएँ आज वैश्विक जीवन-शैली का हिस्सा बन चुकी हैं, पर उनकी जड़ें इसी प्राचीन भारतीय चेतना में हैं।

प्राचीन भारतीय सभ्यता की यह कहानी हड़प्पा की ईंटों से लेकर मंदिरों के शिखरों तक फैली हुई है। यह सभ्यता इसलिए महान नहीं है कि यह प्राचीन है, बल्कि इसलिए कि यह निरंतर विकसित होती रही और हर युग को कुछ नया देती रही। हाल के वर्षों में जब विश्व भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट और सांस्कृतिक असंतुलन से जूझ रहा है, तब भारतीय संस्कृति के मूल विचारों को एक नई दृष्टि से देखा जाने लगा है। अनेक देशों में यह स्वीकार किया गया है कि भारतीय सभ्यता केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि आधुनिक समस्याओं के समाधान की क्षमता रखने वाली जीवन-दृष्टि है। योग और ध्यान इसका सबसे सशक्त उदाहरण हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को मान्यता मिलना इस बात का संकेत है कि भारतीय जीवन-पद्धति अब वैश्विक कल्याण के साधन के रूप में स्वीकार की जा रही है। अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में योग को चिकित्सा, शिक्षा और जीवन-शैली का हिस्सा बनाया गया है।

भारतीय दर्शन में निहित 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को हाल के वर्षों में वैश्विक मंचों पर विशेष सराहना मिली है। पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास और सह-अस्तित्व जैसे विचारों पर जब अंतरराष्ट्रीय संवाद होता है, तब भारतीय संस्कृति की यह सोच स्वाभाविक रूप से प्रासंगिक हो जाती है। कई देशों में आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय खान-पान की सात्विक परंपरा को स्वास्थ्य के वैकल्पिक मॉडल के रूप में अपनाया जा रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक विज्ञान भी अब प्राचीन भारतीय ज्ञान के साथ संवाद स्थापित कर रहा है।

कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी भारतीय परंपराओं की वैश्विक स्वीकृति बढ़ी है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत और मंदिर स्थापत्य पर आधारित अध्ययन विदेशी विश्वविद्यालयों में किए जा रहे हैं। खजुराहो, कोणार्क, अजंता-एलोरा जैसे स्मारक विश्व धरोहर के रूप में संरक्षित हैं और इन्हें देखने आने वाले विदेशी पर्यटक भारतीय सौंदर्यबोध और दार्शनिक गहराई से प्रभावित होते हैं। भारतीय महाकाव्य—रामायण और महाभारत—के कथानक आज दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप और अमेरिका में नए रूपों में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जो यह दर्शाता है कि भारतीय सांस्कृतिक कथाएँ वैश्विक मानवीय भावनाओं से जुड़ती हैं।

इस प्रकार, हाल के वर्षों में विश्व के अनेक देशों में भारतीय संस्कृति की जो सकारात्मक स्वीकृति और सराहना देखने को मिली है, वह इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि समकालीन विश्व के लिए मार्गदर्शक शक्ति बन चुकी है। यह वैश्विक स्वीकार्यता भारतीय सभ्यता की उस अंतर्निहित शक्ति को दर्शाती है, जो समय, स्थान और सीमाओं से परे मानवता को जोड़ने में सक्षम है।

आज का विश्व जब संतुलन, शांति और मानवीय मूल्यों की खोज में है, तब भारत की यह सभ्यतागत यात्रा उसे दिशा दिखाती है। यहाँ प्रगति का अर्थ केवल बाहरी विकास नहीं, बल्कि भीतर की चेतना का विस्तार भी है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता कोई बीती हुई कहानी नहीं, बल्कि एक जीवित परंपरा है—जो मंदिरों की घंटियों, योग की श्वासों और मानवीय मूल्यों के रूप में आज भी संसार को प्रेरणा दे रही है।

कालकेतु का उपाख्यान

ऊदल सिंह सोलंकी,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

भारतीय धार्मिक साहित्य जहाँ एक ओर इतिहास, भक्ति, मनोरंजन एवं घटनाओं के नाटकीय विवरण के चित्रण से सिक्त है तो वहीं दूसरी ओर इस साहित्य में निहित विभिन्न कथाओं का अपने अतर्निहित संदेश, भावार्थ एवं शिक्षा के कारण अपना विशिष्ट महत्व है जो इन्हें समकालीन समाज के दिग्दर्शन हेतु उपयोगी बनाता है।

हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग भक्तिकाल के उत्कृष्ट वाङ्मय तथा भारतीय जन मानस में अतीव गहराई से सन्निविष्ट भक्त कवि शिरोमणि श्री तुलसीदास जी महाराज द्वारा विरचित आधुनिक काल के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'श्रीमद्रामचरितमानस' से आज कौन परिचित नहीं है। 'श्रीरामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' में कालकेतु का उपाख्यान आया है। जो कि इस प्रकार हैः

यह पावन कथा सर्वप्रथम शिवजी द्वारा माता पार्वती जी से कही गयी थी। संसार में सुप्रसिद्ध कैकय नामक देश था। जहाँ सत्यकेतु नामक राजा शासन करता था। वह राजा अत्यंत प्रतापी, तेजस्वी, सुशील और बलवान तथा धर्म रूपी धुरी को धारण करने वाला था। उसके दो सुपुत्र हुए जोकि गुणों के आगार और युद्ध में अत्यंत कुशल थे। राज्य का उत्तराधिकारी बड़ा लड़का था जिसका नाम प्रतापभानु था और द्वितीय पुत्र का नाम अरिमर्दन था जो अपने नाम के अनुरूप ही भुजाओं में अपार बल से युक्त और सदैव युद्ध में पर्वत के समान अटल रहने वाला था। दोनों भाईयों का परस्पर अगाढ़ प्रेम था और वह दोषों और छलों से रहित था। राजा ने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य प्रदान कर दिया और कनिष्ठ पुत्र ने भगवान के भजनार्थ वन को गमन किया।

जब प्रतापभानु राजा हुआ तो, तो पूरे देश में उसकी दुहाई फिर गयी। वह वेद में बतायी हुई विधि के अनुसार उत्तम रीति से अपनी प्रजा का पालन करता था। राजा का सदा हित करने वाला और दैत्यगुरू शुक्राचार्य के समान तीक्ष्ण बुद्धि से युक्त धर्मरुचि नामक उसका मंत्री था। इस प्रकार कुशल मंत्री और बलवान तथा वीर भाई के साथ ही स्वयं राजा भी सभी गुणों की खान एवं अति प्रतापी था। राजा की अपार चतुरङ्गिनी सेना थी, जिसमें असंख्य वीर योद्धा थे, जो सब के सब रण में जूझ मरनेवाले थे। राजा ने दिग्विजय का अभियान प्रारंभ किया और शुभ दिन साधकर और डंका की चोट पर उसने सब राजाओं पर बलपूर्वक विजय श्री प्राप्त कर ली और अपने बाहुबल से उसने सातों द्वीपों को वश में कर लिया और राजाओं को कर लेकर छोड़ दिया। संपूर्ण पृथ्वी मण्डल पर उस समय एकमात्र प्रतापभानु ही चक्रवर्ती सम्राट था।

राजा प्रतापभानु के पराक्रम से वहाँ की भूमि सुन्दर कामधेनु (मनचाही वस्तु प्रदान करने वाली) के समान हो गयी थी। प्रजा दुःखों से रहित एवं सभी सुखों से युक्त थी और राज्य के सभी स्त्री-पुरुष सुन्दर और धर्मात्मा थे। धर्मरुचि मंत्री का श्री हरि के चरणों में अगाढ़ प्रेम था। वह राजा के हितार्थ सदा उसको श्रेष्ठ नीति सिखाता था। राजा गुरू, देवता, संत, पितर और ब्राह्मण- इन सभी की सदैव सेवा करता था। वेदों में बताये गये धर्म के अनुसार राजा सदैव उनका पालन करना अपना धर्म मानता था और प्रतिदिन अनेक प्रकार के दान देता और उत्तम शास्त्र, वेद और पुराण सुनता था। उसने सभी तीर्थों में बहुत-सी बावलियाँ, कुएँ, तालाब, फुलवाड़ियाँ, सुन्दर उद्यान, ब्राह्मणों के लिए घर और देवताओं हेतु सुन्दर विचित्र मन्दिर बनवाये। वेद और पुराणों में जितने प्रकार के यज्ञ वर्णित हैं, राजा ने एक-एक करके उन सभी यज्ञों को आदर सहित हजार-हजार बार किया। राजा के हृदय में किसी फल की कामना नहीं थी। वह बुद्धिमान और ज्ञानी राजा मन, कर्म और वाणी से जो कुछ भी धर्म करता था, सब भगवान वासुदेवजी को समर्पित करके करता था।

एक बार वह राजा एक अच्छे घोड़े पर सवार होकर, विन्ध्याचल पर्वत के घने जंगलों की ओर शिकार खेलने गया और वहाँ उसने कई शिकार किये। तभी राजा ने वन में फिरते हुए एक सूअर को देखा। वह सूअर अति भयावह, भयानक दाँतों से युक्त और विशाल तथा मोटा था। घोड़े की आहट से वह सूअर घुरघुराता हुआ कान उठाये चौकन्ना होकर देख रहा था। उस नीले भयंकर सूअर को देख कर राजा ने घोड़े को चाबुक लगायी और और उसने सूअर को ललकार लगाते हुए उसका पीछा करना आरंभ किया। तेजी से घोड़े को अपनी ओर आता देख कर सूअर पवन वेग से भाग चला। राजा ने तुरन्त धनुष पर बाण संधान करते हुए उसे तीर मारा, परंतु सूअर बाण देखते ही धरती में दुबक गया। राजा तक-तक कर तीर चलाता, परंतु सूअर बार-बार

छल करके शरीर को बचाता जाता। वह पशु कभी प्रकट होता और कभी छिपता हुआ भाग जाता; और राजा भी क्रोध के वशीभूत होकर उसके पीछे-पीछे चला जाता था। सूअर अब ऐसे दुर्गम स्थल की ओर चला गया जहाँ हाथी-घोड़े को जाना संभव नहीं था, फिर भी राजा ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। राजा के धैर्य को देखकर, सूअर भागकर पर्वत की एक गहन गुफा में जा छुपा। उस गुफा में जाना कठिन देखकर राजा बहुत पछतावा करके लौट पड़ा; लेकिन उस घनघोर जंगल में वह रास्ता भूल गया। बहुत परिश्रम करने से थका हुआ राजा घोड़े सहित भूख एवं प्यास से व्याकुल होकर नदी-तालाब खोजता-खोजता बेहाल हो गया।

वन में विचरण करते हुए उसे एक आश्रम दिखाई दिया। वहाँ कपट से मुनि का वेश बनाये एक राजा रहता था। इस राजा का देश प्रतापभानु ने छीन लिया था और यह सेना को छोड़कर युद्ध से भाग खड़ा हुआ था। अपना बुरा समय और प्रतापभानु का अच्छा समय जानकर वह आत्मग्लानि होने से न तो घर गया और न ही अभिमानी होने का कारण राजा प्रतापभानु से मेल ही किया। दरिद्र की भाँति मन ही में अपने क्रोध को मारकर वन में छद्म तपस्वी वेष धारण किये रहता था। राजा प्रतापभानु उसी के पास गया। उसे पहचानते देर नहीं लगी कि यह प्रतापभानु है। राजा प्यास से अत्यंत व्याकुल था। अतएव उसे पहचान न सका। ऋषि का वेष देखकर उसने उसे महामुनि समझा। घोड़े से उतरकर उसे प्रणाम किया, परंतु चतुर होने के कारण राजा ने उसे अपना नाम नहीं बताया। राजा को प्यास से व्याकुल देखकर उसने सरोवर दिखला दिया। हर्ष से युक्त होकर राजा ने घोड़े सहित उसमें स्नान एवं जलपान किया। सूर्यास्त होने कारण तपस्वी उसे अपने आश्रम में ले गया और आसन देकर वह कोमल वाणी से बोला- तुम कौन हो? सुन्दर युवक होकर, जीवन की परवा न करके, वन में अकेले क्यों फिर रहे हो? तुम्हारे चक्रवर्ती राजा के समान लक्षण देखकर मुझे दया आती है। राजा ने कहा- हे मुनिश्वर! सुनिये, प्रतापभानु नाम का एक राजा है, मैं उसका मंत्री हूँ। शिकार के लिए फिरते हुए राह भूल गया हूँ। बड़े भाग्य से यहाँ आकर मुझे आपके श्रीचरणों के दर्शन हुए हैं। आपका दर्शन दुर्लभ था, ऐसा जान पड़ता है कुछ भला होनेवाला है। मुनि ने कहा कि तुम्हारा नगर यहाँ से सत्तर योजन पर है, घोर अँधेरी रात है, घना जंगल है, रास्ता नहीं है, ऐसा समझकर तुम यहीं ठहर जाओ, सबेरा होते ही अपने गंतव्य की ओर चले जाना।

राजा ने बहुत अच्छा कहकर, उसकी आज्ञा मानकर, घोड़े को वृक्ष से बाँध कर राजा बैठ गया। राजा ने उसकी अनेक प्रकार से प्रशंसा करते हुए उसके चरणों की वंदना करके अपने भाग्य की सराहना की और फिर कोमल वाणी से बोले-हे प्रभो! आपको पिता जानकर मैं ढिठाई करता हूँ। हे मुनीश्वर! मुझे अपना पुत्र और सेवक जानकर अपना नाम विस्तार से बतलाइये। राजा ने उसको नहीं पहचाना, पर वह राजा को पहचान गया था। राजा तो शुद्ध हृदय था और वह कपट करने में अति चतुर था। एक तो वैरी, फिर जाति का क्षत्रिय, फिर राजा। वह छल-बल से अपना काम बनाने के लिए उत्सुक हो गया। राजा का वह शत्रु अपने राज्य सुख को स्मरण करके दुःखी था। उसकी छाती कुम्हार के आँवे की आग के समान भीतर ही भीतर सुलग रही थी। राजा के प्रति अपने वैर को याद कर वह हृदय में हर्षित हुआ। उसने कपट युक्त कोमल वाणी बोली-अब हमारा नाम भिखारी है, क्योंकि हम निर्धन और अनिकेत हैं। राजा ने कहा- जो आपके सदृश विज्ञान के निधान और सर्वथा अभिमान रहित होते हैं, वे अपने स्वरूप को सदा छिपाये रहते हैं, क्योंकि कुवेष बनाकर रहने में ही सब तरह का कल्याण है। इसी से तो संत और वेद पुकार कर कहते हैं कि परम अकिञ्चन ही भगवान को प्रिय होते हैं। आप जो हों सो हों, मैं आपके चरणों में नमस्कार करता हूँ। आप मुझ पर कृपा कीजिए। सब प्रकार से राजा को अपने वश में करके अधिक स्नेह दिखाता हुआ वह कपटी तपस्वी बोला-हे राजन्! सुनो, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, मुझे यहाँ रहते हुए बहुत समय बीत गया। अब तक न तो कोई मुझसे मिला है और न ही मैं अपने को किसी पर प्रकट करता हूँ; क्योंकि लोक में प्रतिष्ठा अग्नि स्वरूप है जो तप रूपी वन को भस्म कर डालती है।

सुन्दर वेष को देखकर मूढ़ की तो बात ही क्या है, चतुर मनुष्य भी धोखा खा जाते हैं जैसे सुन्दर मोर को देखें, उसका वचन तो अमृत तुल्य है, पर आहार साँप का है। इसी से मैं जगत में छिपकर रहता हूँ। श्रीहरि को छोड़कर किसी से कुछ भी प्रयोजन नहीं रखता। प्रभु तो बिना जनाये ही सब जानते हैं। फिर कहो संसार को रिझाने से कौनसी सिद्धी मिलेगी। तुम पवित्र और सुन्दर बुद्धिवाले हो इससे मुझे बहुत प्यारे हो। हे तात! अब यदि मैं तुमसे कुछ छिपाता हूँ तो मुझे बहुत ही भयानक दोष लगेगा। ज्यों-ज्यों वह तपस्वी उदासीनता की बातें कहता था, त्यों-त्यों राजा को उस पर विश्वास उत्पन्न होता जाता था। जब बगुले की तरह ध्यान लगाने वाले उस कपटी मुनि ने राजा को कर्म, मन और वचन से अपने अधीन जाना, तब वह बोला-हे भाई! हमारा नाम एकतनु है। जब सबसे पहले सृष्टि उत्पन्न हुई थी, तभी मेरी उत्पत्ति हुयी थी। तब से मैंने फिर दूसरी देह धारण नहीं की, इसी से मेरा नाम एकतनु पड़ा। हे पुत्र! मन में आश्चर्य मत करना। तप से कुछ भी असंभव नहीं है, तप के बल से ब्रह्मा जगत को रचते हैं। तप ही के बल से विष्णु संसार के पालनकर्त्ता बने हैं और तप ही के बल से रूद्र संहार करते हैं। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो तप से नहीं मिल सके। यह सुनकर राजा को बड़ा अनुराग हुआ। तब वह तपस्वी प्राचीन कथायें कहने लगा। कर्म, धर्म और अनेक प्रकार के इतिहास कहकर वह वैराग्य एवं ज्ञान का निरूपण करने लगा। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार (प्रलय) की अपार आश्चर्यभरी कथायें उसने विस्तारपूर्वक कहीं। राजा सुनकर तपस्वी के वश में हो गया और उसे अपना नाम बताने लगा।

तपस्वी ने कहा- राजन् मैं तुमको जानता हूँ। तुमने जो कपट किया है वह मुझे प्रिय लगा है, क्योंकि ऐसी नीति है कि राजा लोग जहाँ-तहाँ अपना नाम नहीं कहते हैं। तुम्हारा नाम प्रतापभानु है और महाराज सत्यकेतु तुम्हारे पिता थे। गुरू की कृपा से मैं सब जानता हूँ, पर अपनी हानि समझकर कहता नहीं।

हे तात! तुम्हारा स्वाभाविक सीधापन, प्रेम, विश्वास और नीति में निपुणता देखकर मेरे मन में तुम्हारे ऊपर बड़ी ममता उत्पन्न हुई, इसलिए मैंने तुम्हें अपना परिचय दे दिया। अब मैं अति प्रसन्न हूँ, इसमें संदेह न करना। जो मन को भावे वही माँग लो। ऐसे सुन्दर वचन सुनकर राजा हर्षित हुआ और मुनि के पैर पकड़कर उसने बहुत प्रकार से विनती की। हे दयासागर! आपके दर्शन मात्र से ही चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) मेरी मुट्ठी में आ गये। फिर भी स्वामी को प्रसन्न देखकर मैं यह दुर्लभ वर माँग कर क्यों न शोकरहित हो जाऊँ। राजा ने कहा मेरा शरीर वृद्धावस्था, मृत्यु और दुःख से रहित हो जाये; मुझे युद्ध में कोई जीत न सके और पृथ्वी पर मेरा सौ कल्प तक एकच्छत्र अकण्टक राज्य हो।

तपस्वी ने कहा- तथास्तु, पर एक बात कठिन है, उसे भी सुन लो। हे पृथ्वी के स्वामी! केवल ब्राह्मण कुल को छोड़कर काल भी तुम्हारे चरणों पर सिर नवायेगा। तप के बल से ब्राह्मण सदा बलवान रहते हैं। उनके क्रोध से रक्षा करने वाला कोई नहीं है। हे नरपति! यदि तुम ब्राह्मणों को अधीन कर लो, तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी तुम्हारे अधीन हो जायेंगे। मैं दोनों भुजायें उठा कर कहता हूँ कि ब्राह्मणों के शाप बिना तुम्हारा विनाश किसी काल में नहीं होगा। राजा उसके वचन सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कहने लगा-हे स्वामी! अब मेरा नाश कभी नहीं होगा। आपकी कृपा से मेरा अब हर समय कल्याण होगा। एवमस्तु (ऐसा ही हो) कहकर कुटिल कपटी मुनि आगे बोला- तुम मेरे मिलने और अपने राह विस्मृत हो जाने की बात किसी से मत कहना, क्योंकि छठे कान में यह बात पड़ते ही तुम्हारा नाश हो जाएगा। मेरा यह वचन सत्य मानना। हे प्रतापभानु! इस बात के प्रकट करने से अथवा ब्राह्मणों के शाप से तुम्हारा नाश होगा और किसी उपाय से, चाहे ब्रह्मा और शंकर भी मन में क्रोध करें, तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।

राजा ने मुनि के चरण पकड़ कर कहा- हे स्वामी! सत्य ही है। ब्राह्मण और गुरु के क्रोध से कहिये, कौन रक्षा कर सकता है? यदि ब्रह्मा भी क्रोध करें, तो गुरु बचा लेते हैं, परंतु गुरु से विरोध करने पर जगत् में कोई बचाने वाला ही नहीं है। यदि मैं आपके कथनानुसार नहीं चलूँगा, तो मेरा नाश हो जाए। मेरा मन तो एक डर से कंपित है कि ब्राह्मणों का शाप बड़ा भयानक होता है। अतः वे ब्राह्मण किस प्रकार वश में हो सकते हैं, कृपा करके वह भी बताइये। आपके अतिरिक्त मुझे मेरा कोई हितैषी यहाँ नहीं दिखता। तपस्वी ने कहा- हे राजन्! संसार में उपाय तो बहुत हैं; पर वे कष्टसाध्य हैं और इस पर भी सिद्ध हों या न हों। हाँ, एक उपाय है जो सहज है; परन्तु उसमें भी एक कठिनाई अवश्य है। हे राजन्! वह युक्ति तो मेरे हाथ है, पर मेरा तुम्हारे नगर में जाना संभव नहीं है। जब से पैदा हुआ हूँ तब से आज तक किसी घर या गाँव नहीं गया। परन्तु अगर नहीं जाता हूँ तो तुम्हारा काम बिगड़ता है। आज यह बड़ा असमंजस मेरा सामने खड़ा है। यह सुनकर राजा बोला हे नाथ! बड़े लोग छोटों पर स्नेह करते ही हैं। पर्वत सदा अपने सिरों पर तृण को धारण किये रहते हैं। अगाध समुद्र भी अपने मस्तक पर फेन को धारण किये रहता है और धरती सदा अपने सिर पर धूलि को धारण किये रहती है। ऐसा कहकर राजा ने मुनि के चरण पकड़ लिये और कहा हे स्वामी! कृपा कीजिए। आप संत हैं। दीनदयालु हैं। मेरे लिए इतना कष्ट अवश्य कीजिए। राजा को अपने अधीन जानकर कपट में प्रवीण तपस्वी बोला हे राजन्! मैं सत्य कहता हूँ, जगत् में मेरे लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। मैं तुम्हारा कार्य अवश्य करूँगा। तुम मन, वाणी और शरीर से मेरे भक्त हो। पर योग, युक्ति, तप और मन्त्र का प्रभाव तभी फलीभूत होता है जब वे छिपाकर किये जाते हैं। हे नरपति! मैं यदि रसोई बनाऊँ और तुम उसे परोसो और मुझे कोई जानने न पावे, तो उस अन्न को खाने वाला तुम्हारा आज्ञाकारी बन जाएगा। यही नहीं, उन भोजन करने वालों के घर जो कोई भोजन करेगा, वह भी तुम्हारे अधीन हो जाएगा। जाकर यही उपाय करो और वर्ष भर का संकल्प कर लेना। हे राजन्! इस प्रकार बहुत ही थोड़े परिश्रम से सब ब्राह्मण तुम्हारे वश में हो जायेंगे और वे हवन, यज्ञ और सेवा-पूजा करेंगे, तो उस प्रसंग से देवता भी सहज ही तुम्हारे वशीभूत हो जायेंगे। मैं एक पहचान और तुम्हें बता देता हूँ कि मैं इस रूप में कभी नहीं आऊँगा। मैं अपनी माया से तुम्हारे पुरोहित को हर लाऊँगा। तप के बल से उसे अपने समान बनाकर एक वर्ष तक यहाँ रखूँगा और मैं उसका रूप बनाकर तुम्हारा काम सिद्ध करूँगा। हे राजन्! रात बहुत बीत गयी है, अब सो जाओ। आज से तीसरे दिन मुझसे तुम्हारी भेंट होगी। तप के बल से मैं घोड़े सहित तुमको सोते ही घर पहुँचा दूँगा। मैं वही पुरोहित का वेष धारण करके आऊँगा। जब एकान्त में तुमको बुलाकर सब कथा सुनाऊँगा, तब तुम मुझे पहचान लेना। राजा ने आज्ञा मानकर शयन किया और कपटी-ज्ञानी आसन पर जा बैठा। राजा थका हुआ था, जल्दी ही वह गहरी नींद में चला गया।

उसी समय वहाँ कालकेतु राक्षस आया, जिसने सूअर का रूप धारण करके राजा को भटकाया था। वह तपस्वी राजा का परम मित्र था और छल-प्रपंच की विद्या से युक्त था। उसके सौ पुत्र और दस भाई थे, जो बड़े दुष्ट, किसी से न जीते जाने वाले और देवताओं को त्रस्त करने वाले थे। ब्राह्मण, संतों और देवताओं को दुःखी देखकर राजा ने उन सभी को पहले ही युद्ध में मार

डाला था। उस दुष्ट ने पिछला वैर याद करके तपस्वी कपटी राजा से मिलकर षडयन्त्र किया और जिस प्रकार शत्रु का नाश हो, वही उपाय रचा। भावीवश राजा कुछ भी समझ नहीं सका। तेजस्वी शत्रु अकेला भी हो तो भी उसे छोटा नहीं समझना चाहिए। राहु, जिसका सिर मात्र बचा था, वह आज तक सूर्य और चन्द्रमा को दुःख देता है। तपस्वी राजा अपने मित्र को देखकर प्रसन्न हो गया और उठ कर मिला। उसने मित्र को सब कथा कह सुनाई, तब राक्षस आनंदित होकर बोला- अब मैंने शत्रु को काबू में कर लिया है। तुम अब चिन्ता का त्याग करके सो जाओ। कुल सहित शत्रु को जड़-मूल से उखाड़-बहाकर, आज से चौथे दिन मैं तुमसे आकर मिलूँगा।

इस प्रकार तपस्वी राजा को खूब दिलासा देकर वह महामायावी और अत्यंत क्रोधी राक्षस चला गया। उसने प्रतापभानु राजा को घोड़े सहित क्षण भर में घर पहुँचा दिया और राजा को रानी के पास सुलाकर घोड़े को अच्छी तरह से घुड़साल में बाँध दिया। फिर वह राजा के पुरोहित को उठा ले गया और माया से उसकी बुद्धि भ्रमित करके उसे उसने पहाड़ी की खोह में लाकर रख दिया। वह आप अब पुरोहित का रूप बनाकर उसकी सुन्दर सेज पर जा लेटा। राजा सबेरा होने से पहले ही जागा और अपना घर देख करके उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मन में तपस्वी की महिमा का स्मरण करके वह धीरे से उठा, जिससे रानी न जाने पावे। फिर उसी घोड़े पर चढ़कर वन की ओर चला गया। नगर के किसी भी स्त्री-पुरुष ने नहीं जाना। दो पहर बीत जाने पर राजा आया। घर-घर उत्सव होने लगे एवं बधावा बजने लगा। जब राजा ने पुरोहित को देखा, तब वह अपने उसी कार्य का स्मरण कर उसे आश्चर्ययुक्त होकर देखने लगा। राजा के तीन दिन युग के समान व्यतीत हुए और उसकी बुद्धि कपटी मुनि के चरणों में लगी रही। निश्चित समय जानकर पुरोहित रूपी राक्षस आया और राजा के साथ की हुई गुप्त सलाह के अनुसार सब विचार उसे समझा कर कह दिये। संकेत के अनुसार, गुरु को उस रूप में पहचान कर राजा प्रसन्न हुआ। भ्रम के वशीभूत वह जान न सका कि यह तापस मुनि है या कालकेतु राक्षस। उसने तुरन्त आज्ञानुसार एक लाख उत्तम ब्राह्मणों को निमन्त्रण दे दिया।

छद्म वेषधारी पुरोहित ने छह रस और चार प्रकार के भोजन, जैसा कि वेदों में वर्णित है, बनाये। उसने मायामयी रसोई तैयार की और इतने व्यंजन बनाये जिन्हें कोई गिन नहीं सकता। अनेक प्रकार के पशुओं का माँस पकाया और उसमें उस दुष्ट ने ब्राह्मणों का माँस भी मिला दिया। सब ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया और चरण प्रक्षालन करके आदर सहित बैठाया। ज्यों ही राजा परोसने लगा, उसी काल कालकेतुकृत आकाशवाणी हुई – हे ब्राह्मणों! उठ-उठ कर अपने घर जाओ; यह अन्न मत खाओ। इसे खाने में बड़ी हानि है। रसोई में ब्राह्मण का माँस बना है। आकाशवाणी का विश्वास मान कर सब ब्राह्मण उठ खड़े हुए। राजा अति व्याकुल हो गया। उसकी मति मोह में भूली हुई थी। होनहारवश उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। तब ब्राह्मण क्रोध सहित बोल उठे-उन्होंने कुछ भी विचार नहीं किया-अरे मूर्ख राजा! तू जाकर परिवार सहित राक्षस हो। रे नीच क्षत्रिय! तूने तो परिवार सहित ब्राह्मणों को बुला कर उन्हें नष्ट करना चाहा था, परंतु ईश्वर ने हमारे धर्म की रक्षा की। अब तू परिवार सहित नष्ट होगा। एक वर्ष के भीतर तेरा नाश हो जाए, तेरे कुल में कोई पानी देने वाला तक नहीं रहेगा। शाप सुनकर राजा भय के मारे अत्यंत व्याकुल हो गया। फिर सुन्दर आकाशवाणी हुई- हे ब्राह्मणो! तुमने विचार कर शाप नहीं दिया। राजा ने कुछ भी अपराध नहीं किया। आकाशवाणी सुनकर सब ब्राह्मण चकित हो गये। तब राजा मन में अपार चिन्ता करता हुआ लौट आया। उसने ब्राह्मणों को सब वृत्तांत सुनाया और भयभीत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। हे राजन! यद्यपि तुम्हारा दोष नहीं, तो भी होनहार नहीं मिटता। ब्राह्मणों का शाप बहुत ही भयानक होता है, यह किसी तरह भी टाले नहीं टल सकता। ऐसा कहकर सब ब्राह्मण चले गये। नगरवासियों ने जब यह समाचार सुना, तो वे चिन्ता करने और विधाता को दोष देने लगे, जिसने हंस बनाते-बनाते कौवा कर दिया अर्थात् ऐसे पुण्यात्मा राजा को देवता बनाना चाहिये था, जिसे राक्षस बना दिया।

तदन्तर, पुरोहित को उसके घर पहुँचा कर असुर कालकेतु ने कपटी तपस्वी को खबर दी। उस दुष्ट ने जहाँ-तहाँ पत्र भेजे, जिससे सब शत्रु राजा सेना सजा-सजा कर प्रतापभानु पर आक्रमण करने आ गये और उन्होंने डंका बजाकर पूरे नगर को घेर लिया। नित्यप्रति अनेक प्रकार से लड़ाई होने लगी। प्रतापभानु के सभी योद्धा वीरता से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए तथा अंततः राजा भी भाई सहित मारा गया। सत्यकेतु के कुल में कोई नहीं बचा। शत्रु को जीत कर, नगर को फिर से बसाकर सभी राजा विजय एवं यश प्राप्त करके अपने-अपने नगरों को चले गये।

भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरूसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम।।

अर्थात् हे भरद्वाज! सुनो, विधाता जब जिसके विपरीत होते हैं, तब उसके लिए धूल सुमेरु पर्वत के समान, पिता यम के समान और रस्सी साँप के समान हो जाती है। समय पाकर वही राजा परिवारसहित रावण नामक राक्षस हुआ। उसके दस सिर और बीस भुजायें थीं और वह बड़ा ही प्रचण्ड शूरवीर था।

संदर्भ ग्रंथः

महाकवि श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज कृत श्रीरामचरितमानस का बालकाण्ड

सक्षम प्राधिकारियों के कर कमलों द्वारा संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका 'संधान' के षष्ठम् अंक (सितंबर 2025) का लोकार्पण

माननीय संसदीय राजभाषा की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 19.01.2026 को किये गये निरीक्षण के उपरांत प्रमाण-पत्र सहित प्राधिकारी गण

लीना दरियाल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

कैसे ये नाते हैं ?

जज़्ब बहुत कुछ कर जाते हैं
कहाँ सभी कुछ कह पाते हैं

अब है कहाँ वो जश्ने चिरागां
अब तो दिल को दुःख भाते हैं

खोया-खोया सा हर मंज़र
सुकूं न चेहरों पर आते हैं

कभी ये चुभते नश्तर बन कर
कभी नयन ये बतियाते हैं

चुप रहना है अदा कभी तो
कभी शोख़ नग़्मे गाते हैं

कभी मिलें तो कभी ये बिखरें
'सत्यम' कैसे ये नाते हैं।

बेख़याली

आज जी भर के मुस्कुराते हैं
ग़म के एहसास को हराते हैं

सारी दुनिया की बेरौनकी, आओ
मुस्कुरा कर के भूल जाते हैं

चंद गीतों के मृदु तरन्नुम को
बेख़याली में गुनगुनाते हैं

आएंगी रौनकें जहाँ भर में
बुझते चेहरों पे रंग सजाते हैं

स्वर्ण किरणों के आज नर्तन को
इक नयी दृष्टि में सजाते हैं

यूँ तो हमसे हैं रौनकें कुछ तो
रौनकें और ढूंढ लाते हैं

क्यों किसी और की तरफ़ देखें
अपने सपनों को ख़ुद सजाते हैं

चैन 'सत्यम' मिलेगा ख़ुद में ही
डुबकियां ख़ुद में ही लगाते हैं।

न जाने क्यों

ज्योति दीक्षित
सहायक निदेशक (राजभाषा)
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

न जाने हम किस दौड़ में,
इतने तेज भागे जा रहे हैं।
और सपनों के चक्कर में,
अपने ही छूटे जा रहे हैं।

आगे बढ़ने की होड़ है,
कुछ कर गुजर जाने का दौर है।
इस दौड़ को जीतने के चक्कर में,
परिवार ही टूटे जा रहे हैं।

न कुछ कह पाने का वक्त है,
न ही सुनने का धैर्य है।
समय की कमी के चक्कर में,
ये जीवन बेरंग हुये जा रहे हैं।

न तो कहीं खुशी है,
और न ही कहीं सुकून है।
फिर भी हम जाने क्यों,
बिना लक्ष्य दौड़े जा रहे हैं।

सब कुछ पा लेने की चाह है,
कुछ खो देने का डर भी है।
इस सरल और सहज जीवन को,
हम कितना कठिन किये जा रहे हैं।

दिखावे में सब परेशान हैं,
भौतिक सुख ही सबकी शान है।
इस झूठी शान के चक्कर में,
अपने ही दुश्मन बने जा रहे हैं।

हमें भारतीय सभ्यता से प्यार है,
अपनी संस्कृति से भी प्रेम अपार है।
फिर भी न जाने क्यों हम,
विदेशी रंग में रंगे जा रहे हैं।

शुभम आनंद रस्तोगी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

उसे मेरा कर दे

इक नज़्म के जानिब से ये बताता हूँ,
ये नज़्म पढ़ें ध्यान इधर ज़रा कर दें,
मेरे ज़हन में ख़ास शख्स की कहानी है,
जिसका ख्याल ही चमकता हुआ चेहरा कर दे।

तपती धूप में, दिन में भरी दोपहरी में,
वो बस ज़ुल्फ़ लहरा दे तो अँधेरा कर दे,
घने अँधेरे में, मावस की काली रातों में,
वो बस पलकों को उठा दे, तो सवेरा कर दे।

वो जो देखे तो बागानों में फूल खिल जाएं,
वो गर नज़रों को घुमा दे तो सहरा कर दे,
कभी छू ले वो जो मुरझाए हुए पेड़ों को,
उनकी शाखों को परिंदों का बसेरा कर दे।

कहूँ मैं क्या?

कहूँ मैं क्या तुम्हारी याद में, क्या हाल है मेरा,
इबादत रब की करता हूँ, तुम्हारा नाम आता है,
कि मेरे होश पर हर पल, ख़ुमारी छाई है ऐसी,
तुम्हारा जिक्र ही है बस जो सुबह-शाम आता है।
कहूँ मैं क्या....?
तुमको भूलने की यार हर इक, नाकाम कोशिश का,
कंबख्त हर इक बार, यही अंजाम आता है,
तुम्हारी याद के बादल, मुझे यूँ घेर लेते हैं,
कि तन्हाई का आलम भी यूँ, सरे आम आता है।
कहूँ मैं क्या....?
दिल के दर्द का आँखो पे ही, इल्ज़ाम आता है,
ना कोई मंत्र ना कोई भी नुस्खा काम आता है,
हाँ, दिल को सुकून मिलता है, खुशी चेहरे पर आती है,
जब भी मेरे लबों पे, तुम्हारा नाम आता है।
कहूँ मैं क्या....?
कि हो मासूम तुम, तुम नासमझ, नादान हो कितने,
अरे, कभी समझो तुम्हारे नाम जो पैगाम आता है,
कि बस आँखों से पढ़ते हो, कभी दिल से भी तो समझो,
वो हर इक खत तुम्हारे नाम जो बेनाम आता है...
कहूँ मैं क्या....?

घर की सड़क

राजीव मिश्रा,
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

एक सड़क जो घर तक जाती है,

वो मुझे घर क्यों नहीं ले जाती है?

रास्ते का तालाब कहाँ चला गया,

नदी उफनाई सी क्यों आती है?

जंगलों की भी कुछ शिकायतें हैं,

वो मैना अब क्यों नहीं गाती है?

जब शाम हुई कोहरा छाया,

सियारों ने भी अपना गीत गाया,

मोरों ने भी तान सुनाई थी,

कोयल ने कूक लगायी थी,

जब दूर कहीं स्तब्ध रात में

जुगुनू जगजग करता था

मेंढक भी अपनी सुर में कुछ ताल लगाया करता था।

सूखे पेड़ और तालाब बाट जोहते हैं।

उन लोगों का जो मेरी तरह कहीं चले गये हैं।

इनकी भी सड़क इनके घर तक आती है,

वो इन्हें घर क्यों नहीं ले आती है?

नई सुबह की तलाश

अनामिका गुप्ता पुत्री – श्री गोविन्द लाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (से०नि०)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय), उत्तर प्रदेश, लखनऊ,
शाखा कार्यालय प्रयागराज

दर्द भरी सांझ के बीतने की आशा लिए
हर दिन को एक नई सुबह की तलाश है ...।
संघर्ष की इस कठिन राह पर
न जाने हम कितने दूर चल दिए
उम्मीद की हवाओं के एक झोकें ने भी
मन को आशाओं से भर दिया
कठिनाइयों के दूर होने की आशा लिए
हर मन को एक नई सुबह की तलाश है ...।
हर दिन इस जिन्दगी ने नयी चुनौतियाँ दी
मोड़-मोड़ पर मुश्किलें दी
यूँ एक-एक दिन बीत रहे हैं, उस दिन की आशा में
कुछ बेहतरीन होने की आशा लिए
हर किसी को एक नई सुबह की तलाश है ...।
सिसकियों से भरी काली रातों में
पल-पल इम्तिहान देते हुए, इस दिल ने
अधरों पर एक झूठी मुस्कान लिए
हर दिल को एक नई सुबह की तलाश है ...।
गर्मी की दोपहर को और
ठिठुरती सर्दी की रातों को
मंजिल की तलाश में न रुकते हुए क़दमों को
कल एक नयी सुबह की तलाश है ....।
एक शाम और बिता दी हमने
सब्र का इम्तिहान देते-देते
उम्मीद है सुबह की किरणें अपने साथ-साथ
उत्साह का एक नया आसमान लायेंगी
अब बस हम सबको उस नए सुबह की तलाश है....।

भाग्य का खेल

अनामिका गुप्ता
सुपुत्री श्री गोविन्द लाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (से०नि०)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)
उत्तर प्रदेश, शाखा कार्यालय- प्रयागराज

शतरंज के प्यादों के जैसी है ये जिन्दगी

कब कौन सा दाँव आ जाये कुछ कहा नहीं जा सकता है ,

जीत के कगार पर भी आकर लोग

अक्सर यहाँ हार जाया करते हैं,

कब कौन मोहरा बन जाए किसी के हाथों का

और कौन बन जाए सिकंदर इस दुनिया का

कुछ भी, यहाँ कहा नहीं जा सकता है

लोग अक्सर ये कहते हैं कि जो कुछ होता है

वो तो भाग्य में पहले से ही लिखा हुआ है .....।

सही ही कहते हैं शायद

क्यूँकि कर ले कोई कितनी भी कोशिश,

जिन्दगी की चाल को कोई समझ ही नहीं पाया है

अगला पड़ाव कौन सा होगा कोई नहीं जान पाया है .....।

अक्सर यहाँ चाल, आखिरी मोड़ पर पहुँचकर पलट ही जाती है

क्यूँकि कभी-कभी कोई नीचे खड़ा व्यक्ति आसानी से पर्वत पर चढ़ जाता है

तो दूसरी ओर कोई शिखर के करीब पहुँचकर भी

लड़खड़ा कर गिर जाता है

और धूल भरी रेत पर आ जाता है.....।

शायद भाग्य का ही खेल है ये,

जहाँ दुनिया को जीतने की इच्छा रखने वाला भी

अपने मनोभाव से हार जाता है

और जिन्दगी से हारा व्यक्ति भी

एक दिन मंजिल को प्राप्त कर लेता है।

बूढ़ा

अवधेश कुमार,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),

उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मैं बूढ़ा हो गया हूँ।

क्योंकि मैं डर जाता हूँ

बच्चों के धीमे बोलने से

जोर से चिल्लाने से

आँख दिखाने से

आँखें फेर लेने से

मैं और डर जाता हूँ।

बच्चों के न बोलने से

घर में अकेले रहने से

अधिकारों के छिन जाने से

जीवन साथी के खो जाने से

मैं और भी डर जाता हूँ।

अतीत के उजाले से

भविष्य के अँधेरे से

समय के परिवर्तन से

बुझती आग की चिन्गारी से

मैं सबसे ज्यादा डर जाता हूँ।

सम्पत्ति से दायित्व बनने से

मंजिल से मुसाफिर बनने से

खुले आसमान से कैदखाने बनने से

आग से राख बनने से

मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मैं डर गया हूँ, मैं बूढ़ा हो गया हूँ।

तिरंगा प्यारा

तिवारी अरुण प्रेम प्रकाश,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

तिरंगा प्यारा, तिरंगा प्यारा, तिरंगा मेरी शान है।
तिरंगा हमारा जग से न्यारा, ये तो हमारी जान है।।

तिरंगे का केसरिया दर्शाता देश की ताकत और साहस है।
जिसका विश्व में फैला उजियारा ऐसा भारत खास है।।

सफेद रंग तिरंगे में, देता शांति एवं सत्य का संदेश है।
बुद्ध और गांधी के विचारों का इसमें समावेश है।।

हरा रंग तिरंगे का, दर्शाता संपन्नता व विकास है।
बनेगा यह विश्व गुरु ऐसा मेरा विश्वास है।।

बीच तिरंगे में शोभित नीले रंग का चक्र है।
इसकी चौबीस सुई भारत की गति का रथ है।।

तिरंगा प्यारा, तिरंगा प्यारा, तिरंगा मेरी शान है।
तिरंगा हमारा जग से न्यारा, ये तो हमारी जान है।।

मिट्टी की ख़ुशबू और सियासत का रंग

मोहम्मद इमरान खान,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

इस सरजमीं की ख़ुशबू में, अब भी वो बात बाकी है,
हर दिल में उम्मीद, हर मोड़ पर विश्वास बाकी है।
नदियाँ अब भी गाती हैं, पहाड़ अब भी झूमते हैं,
पर सत्ता के गलियारों में, सबके सपने अक्सर टूटते हैं।
कोई झंडा लेकर आया, कोई नारा बेचने लगा,
कोई धर्म का सौदा कर गया, कोई मज़हब में देश को बाँटने लगा।

पर ये सरजमीं खूबसूरत है, ये आसमाँ सच्चा है,
यहाँ नदियों की लहरों में, अब भी वतन का चेहरा अच्छा है।
हमारे देश, हमारे लोग, अब भी दिलों में भरोसा रखते हैं,
कि एक दिन राजनीति नहीं, इंसानियत सत्ता में बैठेगी।
सुबह की धूप में झिलमिलाते खेत,
नदियों की मीठी बोली और पहाड़ों का गीत।

हर दिल में बसी है, मिट्टी की खुशबू,
हर शहर में गूँजता है, मोहब्बत का संगीत।
पर दिलों की चमक में छुपा है सवाल,
सियासत के खेल में, खो जाता हर हाल।
कोई झंडा लहराता है, कोई नारा लगाता है,
कोई शब्दों में वादा करता है, पर जमीं पर भूल जाता है।

फिर भी ये सरजमीं मुरझाती नहीं,
ये आसमाँ कभी झुकता नहीं।
यहाँ हर दिल में उमंग रहती है,
हर आँख में अपने वतन के लिए जागती है।
कभी तो आएगा दिन, जब सत्ता की भाषा बदल जाएगी,
जब नंबरों और दावों के पीछे इंसानियत की राह दिख जाएगी।
देश के लोग दिलों में अब भी भरोसा रखते हैं,
कि एक दिन राजनीति नहीं, इंसानियत सत्ता में बैठेगी।

तब खेतों की खुशबू ही नहीं,
हर गलियों में विश्वास की हवा बह जाएगी।

हमारे देश की सच्चाई यही है, यही खूबसूरती है,
कि तूफानों में भी लोग उम्मीद की लौ जलाए रखते हैं।

राजनीति चाहे जो रंग भर दे और चाहे तो राहें भी बदल दे,
फिर भी वतन का हर बच्चा और बूढ़ा प्यार की कहानी सुनाता रहेगा।
जय हिन्द!

संघर्ष

दीपक कुमार तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय – लखनऊ

सर्दी में सुबह उठ जाने का मन में खयालात हुआ,
जब आँख खुली तो पहले ठंडक से दो-दो हाथ हुआ।
पहले तो अपने मन को किसी तरीके मनाया मैंने,
झूठा ही सही पर ठंड के सामने खूब दम दिखाया मैंने।

आलस से खुद नहीं उठा अपने बिस्तर पर से लेकिन,
फिर भी बच्चों को स्कूल का वास्ता देकर उठाया मैंने।
बच्चे अभी नींद में ही थे और चलने में लड़खड़ा से रहे थे,
और सोने को नहीं मिला इसलिये मन में बड़बड़ा रहे थे।

मैं भी उठ जाता हूँ सुबह यह उनको दिखाना चाहा मैंने,
उदाहरण पेश कर उनके नजरों से नजरें मिलाना चाहा मैंने।
लेकिन हमेशा की तरह फिर से इस बार भी मेरी हार हुई,
सुबह उठने के लिये की गयी मेरी हर मेहनत बेकार हुई।

अंत में ठंडक से लड़ते-लड़ते असहाय सा हो गया मैं,
रोज की तरह फिर से बिस्तर में सर डालकर सो गया मैं।

"स्वार्थी इंसान"

जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

इंसान कितना स्वार्थी है, मैं क्या बताऊँ यारों।
समय- समय पर अपना, ईमान बदल लेता है।।
करता है वैसे तो खूब, सबकी मेहमान- नवाजी।
मेहमान के हिसाब से,मान-सम्मान बदल लेता है।।
जी तोड़ मेहनत करके, वो बनाता है आशियाना।
कोई अनहोनी हो जाये,तो मकान बदल लेता है।।

इंसान कितना स्वार्थी है, मैं क्या बताऊँ यारों।
समय- समय पर अपना, ईमान बदल लेता है।।
बातें करता है बड़ी- बड़ी, इंसानियत निभाने की।
रिश्तों की रौशनी को कभी,सौदे में तोल देता है।।
चाल बदल लेता है जब, फायदा नज़र आता है।
समय- समय पर गिरगिट,जैसे रंग बदल लेता है।।
करता है विधि विधान से, वो भक्ति परमेश्वर की।
गर पूर्ण न हो कामना, तो भगवान बदल लेता है।।
इंसान कितना स्वार्थी है,"जय" क्या बताऊँ यारों।
समय- समय पर अपना, ईमान बदल लेता है।।

हेमलता गुप्ता,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

तन्हाई

एक दिन ढूँढ़ ही लाऊंगा मैं तन्हाइयों से उसे,
दर्द की गहराई में छोड़ा अकेला जिसने मुझे,
देखें कि सूरज की चमक पहुँचती कहाँ तक है,
उस छोर तक नंगे पाँव चलना भी है मुझे।

नीचे गिरा जो मैं तो गिरता ही चला गया,
ऊँचाइयों में सैर करने का हौसला था मुझमें,
उसके जाने की आहट भी लग ना पाई जरा,
जिसकी खुशबू ने मुर्दगी में भी जिंदगी रखी थी मुझमें।

किस बाज़ ने पंजों में जकड़ी बुलबुल मेरी,
मैंने पंखों मैं अपने गुल सा सहेजा था जिसे,
ये ज़ख्म अपने नुमाया करूँ तो भी क्या,
मैं जीता हूँ या नहीं, ये भी पड़ी है किसे।

चला जाऊँ जो महफ़िल छोड़ भी अगर,
तो कौन होगा ही उदास भी भला,
उसकी सोहबत ने उसके नशे ने,
कहाँ किसी के लायक रखा ही है मुझे।

रहगुज़र

उम्र लम्बी अपनी इस सफ़र में गुजर गयी,
शाम की लालिमा में हर शै ठहर गयी।
किताब की तरह मौन रहा चेहरा उनका,
एक सादगी चुभन सी सीने में उतर गयी।
बहुत आहिस्ता चले कदम ज़माने की भीड़ में,
रहगुज़र की राह गुजरी सो गुज़र गयी।

महफ़िलें यारों ने सजा ली साजो जाम से,
प्यास चकोर की बरखा पर ठहर गयी।
चाँद का दीदार ना हुआ जुम्मेरात भी,
चांदनी एक दर्द सी आँखों से उतर गयी।
तेरे न होने का गम कहें भी तो किससे कहें,
मेरी हर पुकार अंधे कुएं से गुज़र गयी।

वो रंगीनियाँ रवानियाँ रानाइयां अब कहाँ,
जिंदगी बेमौज सर्द पानी सी ठहर गयी।
छूट गए कहीं राहों में जो आपाधापी में,
फ़ुर्सत के उन पलों पर मुर्दगी पसर गयी।
यह रास्ते, ये मंज़र ,ये महफ़िलें यारों की,
सबके ज़हन में तेरी जुदाई उतर गयी।

यूँ बेसबब तेरे आने की आहट खोजते हैं,
तू बेकदर पहलू से गुजरी सो गुज़र गयी।
जैसी कटी सो कट गयी ज़िन्दगी हमारी,
तेरे पहलू में दम निकलने की हसरत ठहर गयी।
कहर बरपा गया तेरा नाराज़ हो कर चले जाना,
हर शै मुहब्बत की उसी लम्हे में ठहर गयी।

आई.ए.एस : एक संघर्ष

सुनील कुमार मीणा
लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

रस की राह पर चल पड़े हम,
अभ्यर्थ के सपने देख रहे हैं।
आई.ए.एस. बनने का सपना है,
जीतने का जुनून लिए हुए हैं।

पन्नों पर शब्द लिखते हैं,
मन में लक्ष्य रखते हैं।
सुबह से शाम तक पढ़ाई,
बस हर पल संघर्ष करते हैं।

किताबों के बोझ के नीचे,
दबे हुए भी हँसते हैं।
एक दिन टॉप करने का सपना,
मन में संजोये रखते हैं।

असफलताएं आती हैं,
तो हार नहीं मानते हैं।
डटे रहते हैं, लड़ते हैं,
अपने लक्ष्य पर टिके रहते हैं।

एक दिन आएगा जब,
सफल निश्चित ही होंगे।
आई.ए.एस. बनकर दिखाएंगे,
सपने जरूर पूरे होंगे।

संघर्ष है जीवन का हिस्सा,
हिम्मत नहीं हारनी है।
रस की राह पर चल पड़े हैं,
मंजिल हर हाल में पानी है।

तू न कभी विचलित होना

शनी पटेल,
लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, लखनऊ

डगमग चलना रस्तों पर चाहे,
गिरकर उठना उठकर चलना,
न धैर्य कभी क्षण भर खोना,
तू न कभी विचलित होना।

लक्ष्य सदा मन में रखना,
चाहा जो वो पाकर थमना,
क्षण भर सुख से न पुलकित होना,
तू न कभी विचलित होना।।

है आस तुझे खुद से ही अब,
कर कर्म त्याग संदेह को अब,
है बीज सफलता के बोना,
तू न कभी विचलित होना।

है केशव तू और पार्थ भी तू,
है राजा तू और सार्थ भी तू,
बन दीप जग में प्रज्वलित होना,
तू न कभी विचलित होना।।

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी,1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम,1976 (यथासंशोधित,1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं नियम से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण नियमों की जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजात

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियम

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दीः हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोगः अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि का उत्तरः कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7(3)- सेवा संबंधी आदेश या सूचनाः यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्ति

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणता- यदि किसी कर्मचारी ने-

1 मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

2 स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

3 यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

1.
   क. यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
   ख. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
   ग. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
   घ. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान

रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)-

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्व-

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह -
   क. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और
   ख. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।
2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ एवं समापन समारोह 2025 की कुछ झलकियाँ

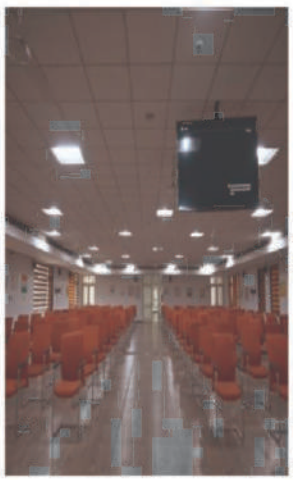

हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ एवं समापन समारोह 2025 की कुछ झलकियाँ

गणतंत्र दिवस 2026 की कुछ झलकियाँ

गणतंत्र दिवस 2026 की झलकियाँ

ऑडिट दिवस 2025 की कुछ झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 2025 की विभिन्न गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 19.01.2026 को किये गये राजभाषा संबंधी निरीक्षण के दौरान राजभाषा प्रदर्शनी तथा निरीक्षण के उपरांत प्रमाण-पत्र के साथ सक्षम प्राधिकारी गण

सक्षम प्राधिकारियों द्वारा गणतंत्र दिवस 2026 के पावन अवसर पर सराहनीय कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत किये जाने की एक झलकी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह के दौरान उप निदेशक महोदय कार्यालय के अधिकारियों/कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

'हिंदी पखवाड़ा 2025' के दौरान आयोजित 'सुलेख प्रतियोगिता' में प्रतिभाग करते हुए अधिकारीगण

'हिंदी पखवाड़ा 2025' के दौरान आयोजित 'पत्र लेखन प्रतियोगिता' में प्रतिभाग करते हुए अधिकारीगण

'हिंदी पखवाड़ा 2025' के दौरान आयोजित 'अनुवाद प्रतियोगिता' में प्रतिभाग करते हुए अधिकारीगण

'हिंदी पखवाड़ा 2025' के दौरान आयोजित 'निबंध प्रतियोगिता' में प्रतिभाग करते हुए अधिकारीगण

'हिंदी पखवाड़ा 2025' के दौरान आयोजित 'वाक्य-शोधन प्रतियोगिता' में प्रतिभाग करते हुए अधिकारीगण

नराकास लखनऊ द्वारा राजभाषा शील्ड से सम्मानित

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली शाखा कार्यालय लखनऊ की कार्यालयीन गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

आपके पत्र

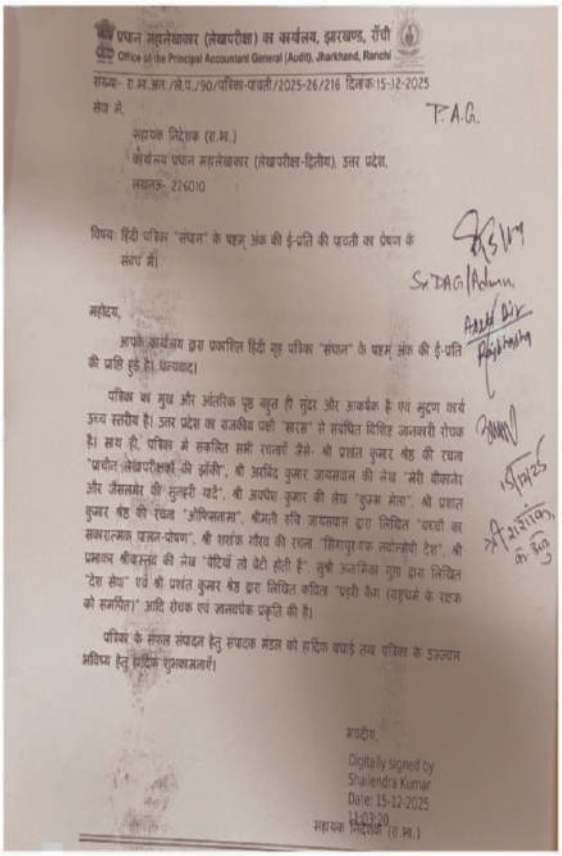

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- प्र.म.अल./से.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/216 दिनांक 15-12-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), उत्तर प्रदेश,
लखनऊ- 226010

विषय: हिंदी पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद।

पत्रिका का मुख और आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर और आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी "सारस" से संबंधित विशिष्ट जानकारी रोचक है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ जैसे- श्री प्रशांत कुमार सेठ की रचना "प्राचीन लेखापरीक्षकों की झाँकी", श्री अरविंद कुमार जायसवाल की लेख "मेरी बीकानेर और जैसलमेर की सुनहरी यादें", श्री अवधेश कुमार की लेख "कुम्भ मेला", श्री प्रशांत कुमार सेठ की रचना "ऑफिसनामा", श्रीमती रुचि जायसवाल द्वारा लिखित "बच्चों का सकारात्मक पालन-पोषण", श्री शशांक गौरव की रचना "सिंगापुर:एक नवोन्मेषी देश", श्री प्रभाकर श्रीवास्तव की लेख "बेटियाँ तो बेटी होती हैं", सुश्री अनामिका गुप्ता द्वारा लिखित "देश सेवा" एवं श्री प्रशांत कुमार सेठ द्वारा लिखित कविता "प्रहरी मैं (राष्ट्रधर्म के रक्षक को समर्पित)" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 15-12-2025
11:03:20
सहायक निदेशक (रा.भा.)

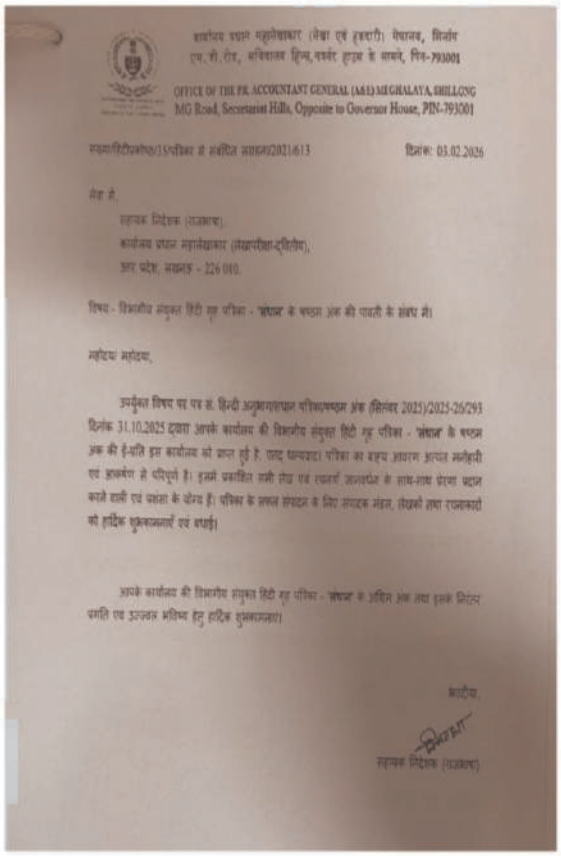

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग
एम.जी. रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

सं.प्रम/हिंदीप्रकोष्ठ/15/पत्रिका से संबंधित पत्राचार/2021/613 दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ - 226 010.

विषय - विभागीय संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका - 'संधान' के षष्ठम अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. हिन्दी अनुभाग/संधान पत्रिका/षष्ठम अंक (सितंबर 2025)/2025-26/293 दिनांक 31.10.2025 द्वारा आपके कार्यालय की विभागीय संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका - 'संधान' के षष्ठम अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत मनोहारी एवं आकर्षण से परिपूर्ण है। इसमें प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धन के साथ-साथ प्रेरणा प्रदान करने वाली एवं प्रशंसा के योग्य हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल, लेखकों तथा रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

आपके कार्यालय की विभागीय संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका - 'संधान' के आगामी अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

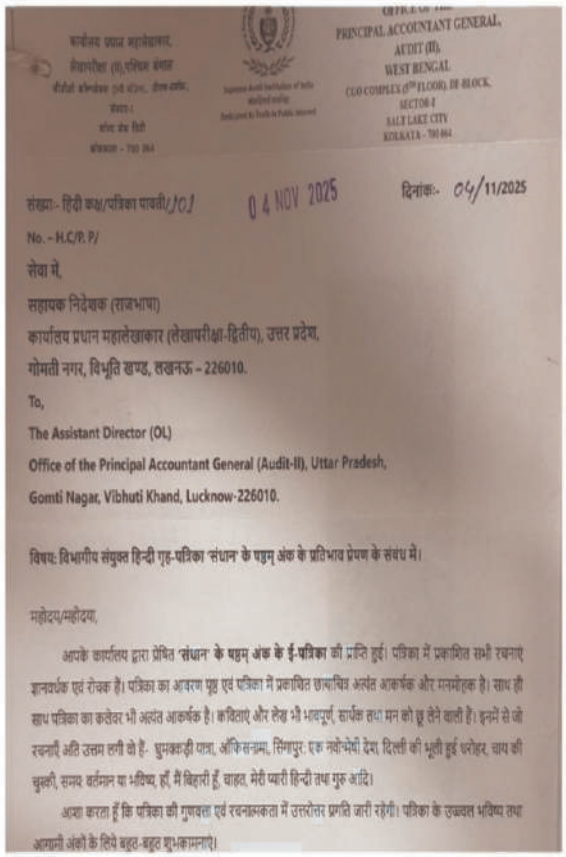

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वां तल), डीएफ-ब्लॉक,
सेक्टर-I
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/101 04 NOV 2025 दिनांक:- 04/11/2025
No. - H.C/P. P/

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), उत्तर प्रदेश,
गोमती नगर, विभूति खण्ड, लखनऊ - 226010.

To,
The Assistant Director (OL)
Office of the Principal Accountant General (Audit-II), Uttar Pradesh,
Gomti Nagar, Vibhuti Khand, Lucknow-226010.

विषय: विभागीय संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका 'संधान' के षष्ठम् अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'संधान' के षष्ठम् अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- घुमक्कड़ी यात्रा, ऑफिसनामा, सिंगापुर: एक नवोन्मेषी देश, दिल्ली की भूली हुई धरोहर, चाय की चुस्की, समय: वर्तमान या भविष्य, हाँ, मैं बिहारी हूँ, चाहत, मेरी प्यारी हिन्दी तथा गुरु आदि।

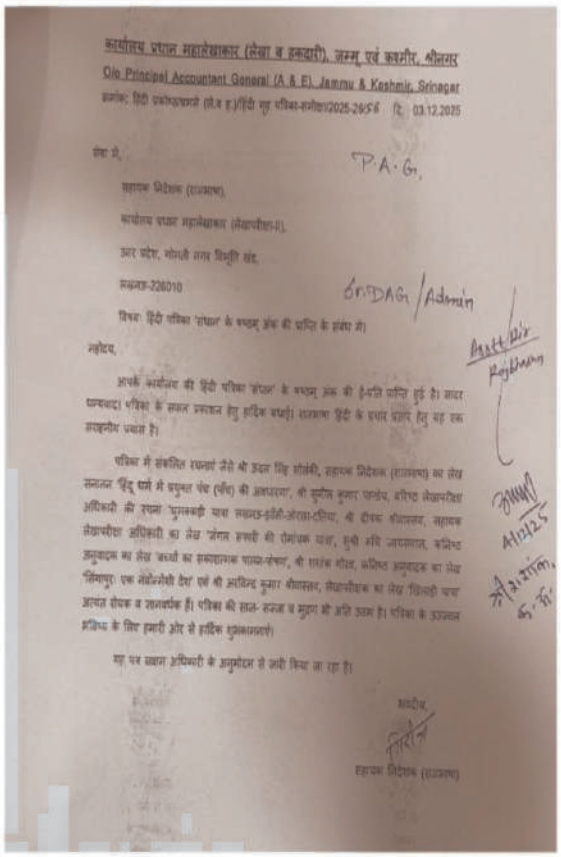

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
O/o Principal Accountant General (A & E), Jammu & Kashmir, Srinagar

क्रमांक: हिंदी प्रकोष्ठ/पावती (ले.व ह.)/हिंदी गृह पत्रिका-संधान/2025-26/56 दि. 03.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, गोमती नगर विभूति खंड,
लखनऊ-226010

विषय: हिंदी पत्रिका 'संधान' के षष्ठम् अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संधान' के षष्ठम् अंक की ई-प्रति प्राप्ति हुई है। सादर धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु यह एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका में संकलित रचनाएं जैसे श्री उदय सिंह सोलंकी, सहायक निदेशक (राजभाषा) का लेख सनातन हिंदू धर्म में प्रयुक्त पंच (पाँच) की अवधारणा, श्री सुनील कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'घुमक्कड़ी यात्रा लखनऊ-इंदौर-ओरछा-टीकमगढ़', श्री दीपक श्रीवास्तव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'जंगल सफारी की रोमांचक यात्रा', सुश्री रुचि जायसवाल, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'बच्चों का सकारात्मक पालन-पोषण', श्री शशांक गौरव, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'सिंगापुर: एक नवोन्मेषी देश' एवं श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, लेखापरीक्षक का लेख 'दिल्ली यात्रा' अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की साज- सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

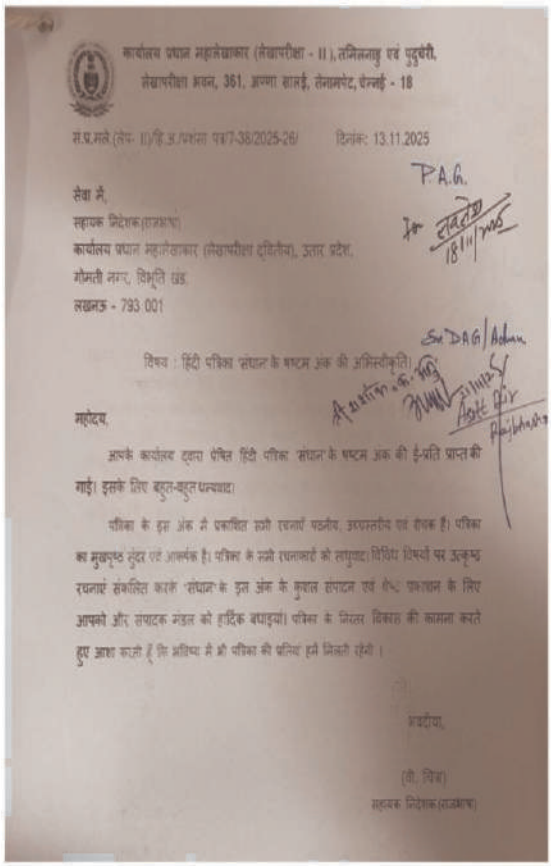

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 18

स.प्र.मले.(लेप- II)/हि.अ./प्रशंसा पत्र/7-38/2025-26/ दिनांक: 13.11.2025

P.A.G.

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा द्वितीय), उत्तर प्रदेश,
गोमती नगर, विभूति खंड
लखनऊ - 793 001

Sr. DAG/Admn

विषय : हिंदी पत्रिका 'संधान' के षष्टम अंक की अभिस्वीकृति।

Asstt Dir Rajbhasha

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'संधान' के षष्टम अंक की ई-प्रति प्राप्त की गई। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, उपयोगी एवं रोचक हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका के सभी रचनाकारों को साधुवाद। विविध विषयों पर उत्कृष्ट रचनाएं संकलित करके 'संधान' के इस अंक के कुशल संपादन एवं श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए आपको और संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां। पत्रिका के निरंतर विकास की कामना करते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका की प्रतियां हमें मिलती रहेंगी।

भवदीया,

(वी. निशा)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

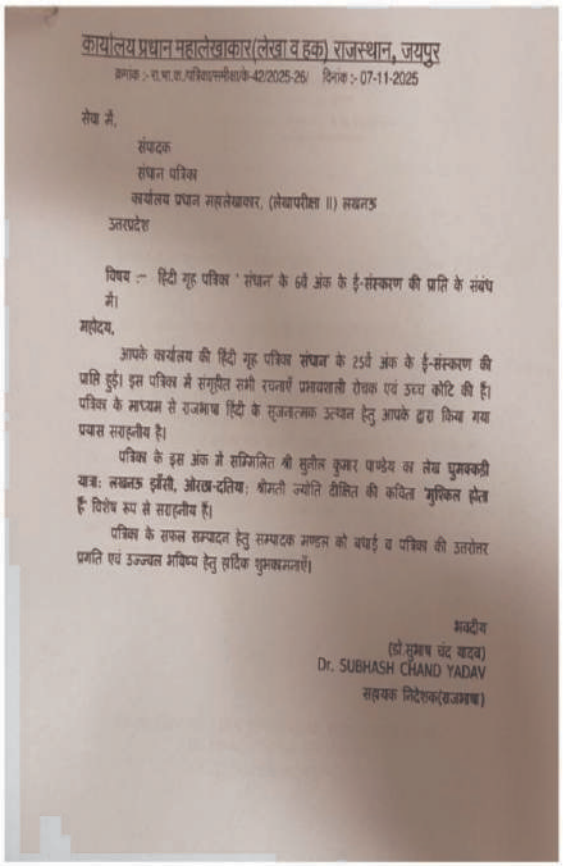

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक) राजस्थान, जयपुर
क्रमांक :- रा.भा.अ./पत्रिकासमीक्षा/के-42/2025-26/ दिनांक :- 07-11-2025

सेवा में,
संपादक
संधान पत्रिका
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा II) लखनऊ
उत्तरप्रदेश

विषय :- हिंदी गृह पत्रिका 'संधान' के 6वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका संधान के 25वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में संगृहीत सभी रचनाएँ प्रभावशाली रोचक एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित श्री सुनील कुमार पाण्डेय का लेख घुमक्कड़ी यात्रा: लखनऊ झाँसी, ओरछा-दतिया; श्रीमती ज्योति दीक्षित की कविता 'मुश्किल होता है' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
(डॉ.सुभाष चंद यादव)
Dr. SUBHASH CHAND YADAV
सहायक निदेशक(राजभाषा)

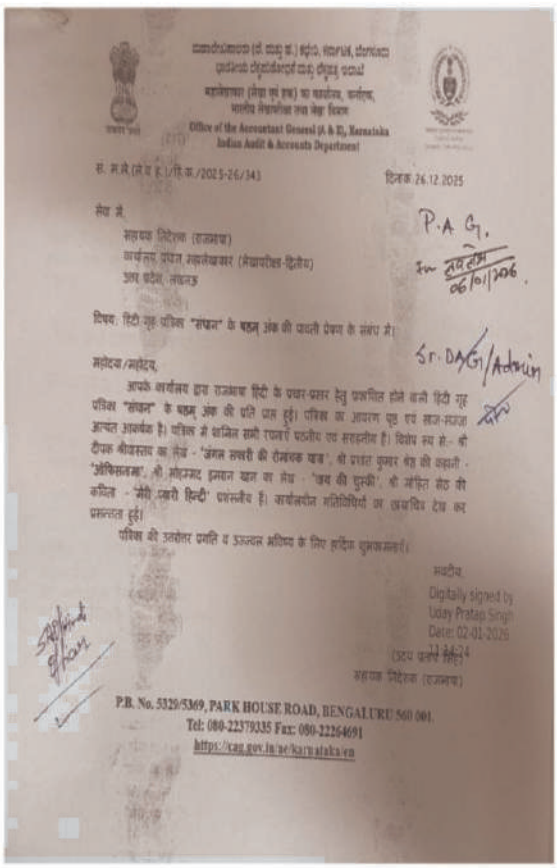

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರ (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले व ह.I)/हि.क./2025-26/34] दिनांक 26.12.2025

P.A.G.

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

Sr. DAG/Admin

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से- श्री दीपक श्रीवास्तव का लेख - 'जंगल सफारी की रोमांचक यात्रा', श्री प्रशांत कुमार सेठ की कहानी - 'ऑफिसनामा', श्री मोहम्मद इमरान खान का लेख - 'जग की सुस्की', श्री अंकित सेठ की कविता - 'मेरी प्यारी हिन्दी' प्रशंसनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 02-01-2026
11:34:24
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

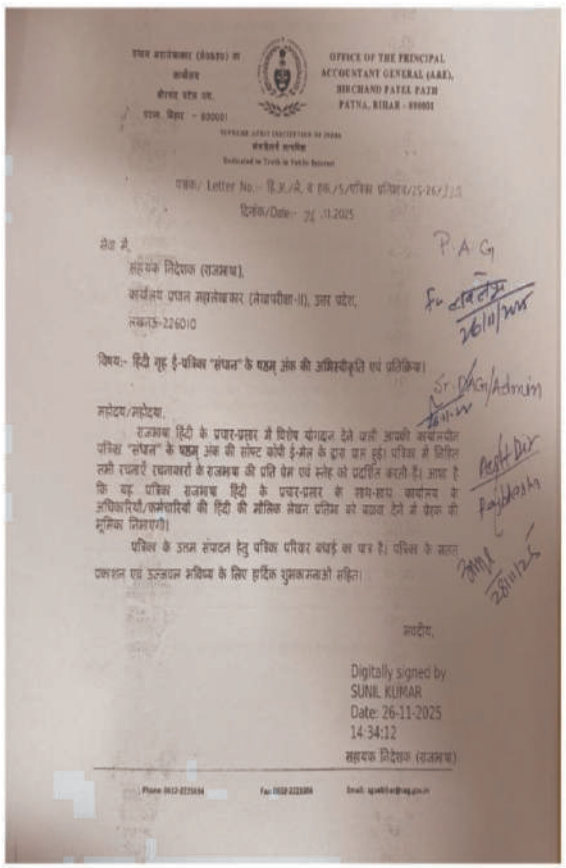

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/ Letter No.- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिक्रिया/25-26/135
दिनांक/Date- 26.11.2025

P.A.G.

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश,
लखनऊ-226010

विषय:- हिंदी गृह ई-पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

Sr. DAG/Admin

Asstt Dir Rajbhasha

महोदय/महोदया,

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान देने वाली आपकी कार्यालयीन पत्रिका "संधान" के षष्ठम् अंक की सॉफ्ट कॉपी ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुई। पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ रचनाकारों के राजभाषा की प्रति प्रेम एवं स्नेह को प्रदर्शित करती हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 26-11-2025
14:34:12
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: 0612-2215414 Fax: 0612-2215004 Email: agaebihar@cag.gov.in

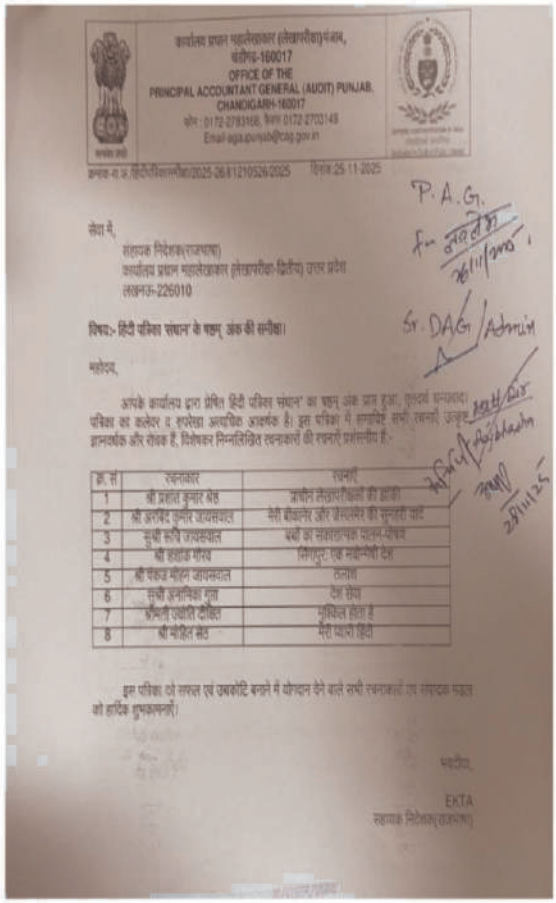

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703148
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.भा.प्र./हिंदी पत्रिका/2025-26/1210526/2025 दिनांक 25.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय) उत्तर प्रदेश
लखनऊ-226010

विषय:- हिंदी पत्रिका 'संधान' के षष्ठम् अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'संधान' का षष्ठम् अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री प्रशांत कुमार श्रेष्ठ	प्राचीन लेखापरीक्षकों की झांकी
2	श्री अरविंद कुमार जायसवाल	मेरी बीकानेर और जैसलमेर की सुनहरी यादें
3	सुश्री रुचि जायसवाल	बच्चों का सकारात्मक पालन-पोषण
4	श्री शशांक गौरव	सिंगापुर: एक नवोन्मेषी देश
5	श्री पंकज मोहन जायसवाल	तलाश
6	सुश्री अनामिका गुप्ता	देश सेवा
7	श्रीमती ज्योति दीक्षित	मुश्किल होता है
8	श्री मोहित सेठ	मेरी प्यारी हिंदी

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

EKTA
सहायक निदेशक(राजभाषा)

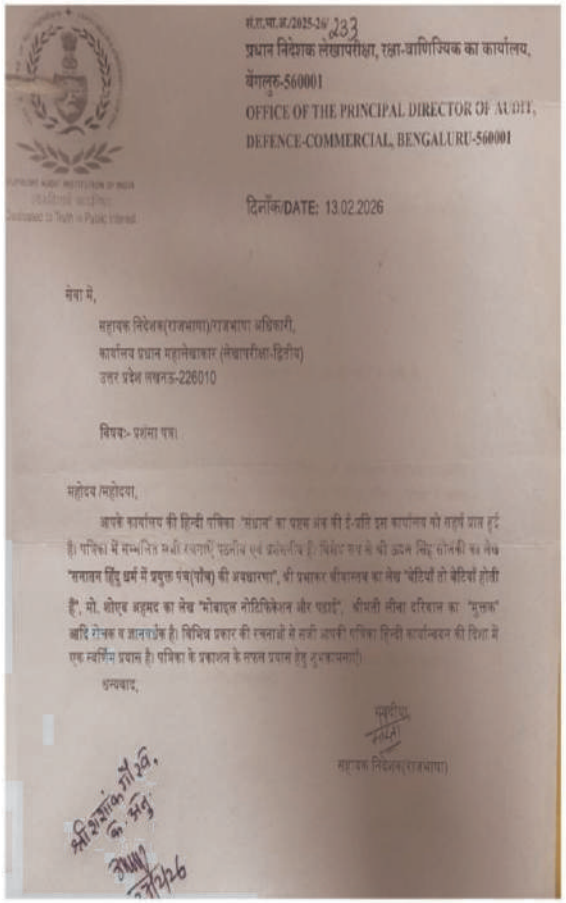

सं.रा.भा.अ./2025-26/ 233
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय,
बेंगलूरु-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT,
DEFENCE-COMMERCIAL, BENGALURU-560001

दिनांक/DATE: 13.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक(राजभाषा)/राजभाषा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
उत्तर प्रदेश लखनऊ-226010

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "संधान" का षष्ठम अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री उदल सिंह सोलंकी का लेख "सनातन हिंदु धर्म में प्रयुक्त पंच(पाँच) की अवधारणा", श्री प्रभाकर श्रीवास्तव का लेख "बेटियाँ तो बेटियाँ होती हैं", मो. शोएब अहमद का लेख "मोबाइल नोटिफिकेशन और पढ़ाई", श्रीमती नीशा दरियान का "मुस्कान" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

सहायक निदेशक(राजभाषा)

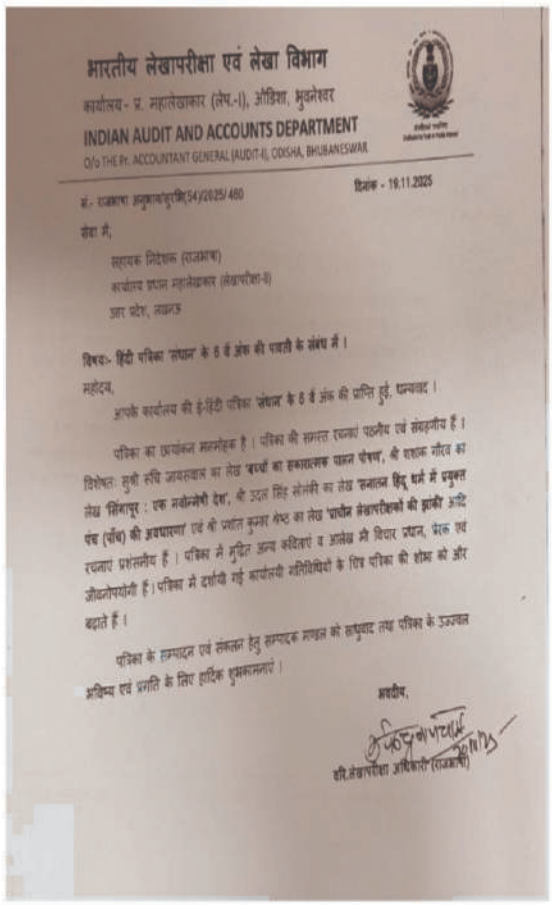

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - प्र. महालेखाकार (लेप.-I), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- राजभाषा अनुभाग/सूरक्षि(54)/2025/460 दिनांक - 19.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

विषय:- हिंदी पत्रिका 'संधान' के 6 वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई-हिंदी पत्रिका 'संधान' के 6 वें अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद।

पत्रिका का छायांकन मनमोहक है। पत्रिका की समस्त रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। विशेषतः सुश्री रुचि जायसवाल का लेख **'बच्चों का सकारात्मक पालन पोषण'**, श्री शशांक गौरव का लेख **'सिंगापुर : एक नवोन्मेषी देश'**, श्री उदल सिंह सोलंकी का लेख **'सनातन हिंदू धर्म में प्रयुक्त पंच (पाँच) की अवधारणा'** एवं श्री प्रशांत कुमार श्रेष्ठ का लेख **'प्राचीन लेखापरीक्षकों की झांकी'** आदि रचनाएं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में मुद्रित अन्य कविताएं व आलेख भी विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। पत्रिका में दर्शायी गई कार्यालयी गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ाते हैं।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

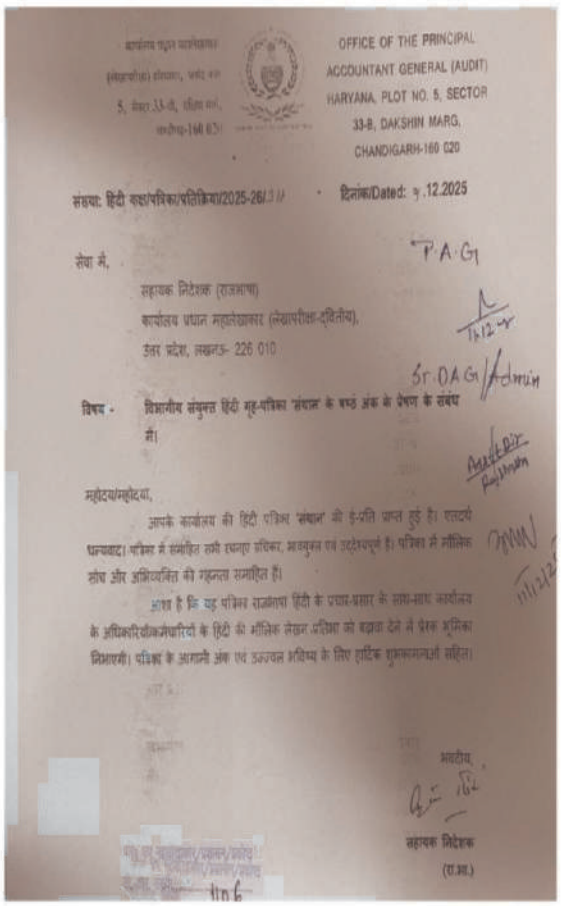

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चंडीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/ दिनांक/Dated: .12.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ- 226 010

विषय - विभागीय संयुक्त हिंदी गृह-पत्रिका 'संधान' के षष्ठ अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संधान' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(रा.भा.)

लखनऊ में अवस्थित ऑडिट भवन परिसर की छवि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - द्वितीय)

उत्तर प्रदेश, लखनऊ